Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ISSN 970-9312

प्राथमिक शिक्षक

शैक्षिक संवाद की पत्रिका

जनवरी–अप्रैल (संयुक्तांक) 2011

11 – 21/1
31 - 5 - 12

विशेष–भाषा शिक्षण से संबंधित लेख

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'प्राथमिक शिक्षक' राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की एक त्रैमासिक पत्रिका है। इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है, शिक्षकों और संबद्ध प्रशासकों तक केंद्रीय सरकार की शिक्षा नीतियों से संबंधित जानकारियाँ पहुँचाना, उन्हें कक्षा में प्रयोग में लाई जा सकने वाली सार्थक और संबद्ध सामग्री प्रदान करना और देशभर के विभिन्न केंद्रों में चल रहे पाठ्यक्रमों और कार्यक्रमों आदि के बारे में समय पर अवगत कराते रहना। शिक्षा जगत् में होने वाली गतिविधियों पर विचारों के आदान-प्रदान के लिए भी यह पत्रिका एक मंच प्रदान करती है।

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने होते हैं। अत: यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक चिंतन में परिषद् की नीतियों को ही प्रस्तुत किया गया हो। इसलिए परिषद् का कोई उत्तरदायित्व नहीं है।

अकादमिक संपादक

लता पाण्डे

अकादमिक संपादकीय मंडल

इंदु कुमार

रमेश कुमार

श्वेता उप्पल	*मुख्य संपादक*
रेखा अग्रवाल	*संपादक*
अब्दुल नईम	*सहायक उत्पादन अधिकारी*

आवरण

अमित श्रीवास्तव

मूल्य एक प्रति – ₹ 65.00   वार्षिक – ₹ 260.00

मुद्रक : [illegible] प्रिंटर्स प्रा. लि., सी-90, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-20

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्राथमिक शिक्षक

वर्ष–35 अंक 1-2 जनवरी-अप्रैल 2011 (संयुक्तांक)

इस अंक में

संवाद 3

लेख

1. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 और भाषा शिक्षण 5
2. भाषा की पाठ्यपुस्तकें–रिमझिम शृंखला — लता पाण्डे 14
3. भाषा के रंग समावेशन के संग — शारदा कुमारी 18
4. कविता की पढ़ाई 24
5. भाषा और परिवेश 30
6. प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के भाषा सीखने का आकलन 34
7. शब्दचित्र — लता अग्रवाल 46
8. भाषा विकास में उच्चारण शिक्षण का महत्त्व — आर.पी. पाठक 50
9. हिंदी का सहज शिक्षण — विद्यानंद पाण्डेय 53
10. पुस्तकों से दोस्ती — राजेश उत्साही 57

अनुभव

11. भाषा शिक्षण–एक अनुभव — राधा 61

11-21/1
31.5.12

विद्या से अमरत्व प्राप्त होता है।

परस्पर आवेष्टित हंस राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) के कार्य के तीनों पक्षों के एकीकरण के प्रतीक हैं– (i) अनुसंधान और विकास, (ii) प्रशिक्षण, तथा (iii) विस्तार। यह डिजाइन कर्नाटक राज्य के रायचूर जिले में मस्के के निकट हुई खुदाइयों से प्राप्त ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी के अशोकयुगीन भग्नावशेष के आधार पर बनाया गया है।

उपर्युक्त आदर्श वाक्य *ईशावास्य उपनिषद्* से लिया गया है जिसका अर्थ है– विद्या से अमरत्व प्राप्त होता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शोध

12. प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा लेखन कौशल का विकास--एक क्रियात्मक अनुसंधान — सरोज अग्रवाल, सुरक्षा बंसल — 65

पठनीय

13. *पढ़ना सिखाने की शुरुआत* — 72

14. *पढ़ने की समझ* — 75

15. *कैसे पढ़ाएँ रिमझिम भाग--2* 'शिक्षक संदर्शिका' — 77

बालमन कुछ कहता है

– मुझे चित्र बनाना बहुत अच्छा लगता है — प्रीतिका — 79

– मुझे कहानी पढ़ना अच्छा लगता है — कृतिका रावत — 80

क़विता

– कैसे सीखूँ गणित — लक्ष्मी रानी 'चंदेल' — 81

– अब्राहम लिंकन का अपने पुत्र के अध्यापक को लिखा मार्मिक पत्र — 82

खुलने दो पंखों को — कामिनी भटनागर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संवाद

बच्चे के विकास में भाषा की महती भूमिका है। दुनिया को समझने में भाषा ही बच्चे की सहायिका है। भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम होने के साथ-साथ विभिन्न विषयों की ज्ञान प्राप्ति का साधन भी है। बच्चे में सुदृढ़ भाषायी नींव डालने में शिक्षक की अहम भूमिका है। इसलिए प्रत्येक शिक्षक के लिए यह जानना आवश्यक है कि भाषा क्या है? भाषा सिखाने के रोचक तरीके क्या हैं? राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा--2005 भाषा शिक्षण के संबंध में क्या संस्तुतियाँ करती हैं? भाषा शिक्षण के दौरान आकलन कब और कैसे करें? कैसी हो भाषा की पाठ्यपुस्तक? प्रस्तुत अंक में विभिन्न लेखों के माध्यम से इन्हीं सब बातों की जानकारी देने का प्रयास किया गया है।

बहुभाषिकता हमारी पहचान है। कक्षा में अपनी बोली/भाषा को मिला सम्मान नन्हे बच्चे को आत्मसम्मान की भावना से भर देता है। यही भावना नन्हे हृदय में आत्मविश्वास भरती है जो कि मुखरित होती है नन्हे बच्चे की अभिव्यक्ति से। लेकिन अक्सर होता यह है कि भाषा की कक्षा में शुद्धता के चक्कर में मानक भाषा के प्रयोग पर बल दिया जाता है। बच्चा यदि अपने घर की बोली का प्रयोग करता है तो उसे डाँट-उपहास का पात्र बना दिया जाता है। दुष्परिणाम यह होता है कि मानक भाषा न बोल पाने के कारण बच्चा अपनी बात कहने से घबराता है। जिससे बच्चे की पराभाषिक चेतना तो दबती ही है, उसकी खुद की भाषा भी छीन ली जाती है। हमें यह बात कभी नहीं भूलनी चाहिए कि किसी खास संस्कृति की भाषा या बोली अपने आप में परंपरा और सभ्यतागत स्मृतियों को सँजोए रखती है। कक्षा की मानक भाषा के ढाँचे में यह सब खो जाता है। लेकिन भाषा की विविधता को एक संसाध न के तौर पर लेकर बच्चों की खुद की भाषा को समृद्ध भाषा के स्रोत और साधन का दर्जा दिया जा सकता है।

क्यों न इस नूतन वर्ष में सभी शिक्षक साथी यह संकल्प लें कि नन्हे बच्चों को स्नेह और विश्वास देने के साथ-साथ उनकी भाषा को भी सम्मान दें ताकि उनके स्वर मुखरित हों।

अकादमिक संपादक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्राथमिक शिक्षक पत्रिका के बारे में

साथियो,

प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में प्रारंभिक शिक्षा से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर आधारित ऐसे लेख प्रकाशित किए जाते हैं जो एक शिक्षक के लिए उपयोगी हों। इस पत्रिका के कुछ महत्वपूर्ण सरोकार हैं–

- शिक्षा संबंधी महत्वपूर्ण दस्तावेज़ों की जानकारी एवं विवेचन
- समसामयिक शैक्षिक शोध एवं अध्ययनों का विवरण
- समसामयिक शैक्षिक चिंतन
- शिक्षकों एवं शिक्षाविदों के अनुभव
- शिक्षकों एवं अभिभावकों के लिए व्यावहारिक बाल मनोविज्ञान
- पाठशालाओं एवं शिक्षा केंद्रों की समीक्षा
- शिक्षा संबंधी खेल एवं उनकी उपयोगिता
- विभिन्न शिक्षण विधियाँ
- क्रियात्मक शोध और नवाचार
- शिक्षकों के लिए पठनीय पुस्तक के बारे में जानकारी आदि।

कैसे भेजें रचनाएँ

उपरोक्त सरोकारों पर आधारित लेख, संस्मरण, कविताएँ आदि आमंत्रित हैं। कृपया ध्यान रखें कि लेख सरल भाषा में तथा रोचक हों। शोधपरक लेखों के साथ संदर्भ साहित्य की सूची अवश्य दें। लेखों के प्रकाशन के उपरांत समुचित मानदेय की व्यवस्था है। लेखों की त्रुटिरहित टंकित प्रति अगर सी.डी. में भेज सकें तो अच्छा रहेगा। लेख ई-मेल द्वारा भी भेजे जा सकते हैं। अपने लेख निम्न पते पर भेजें–

अकादमिक संपादक
प्राथमिक शिक्षक
प्रारंभिक शिक्षा विभाग
एन.सी.ई.आर.टी.
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110016
ई. मेल-**deencert@yahoo.co.in**

कैसे बनें सदस्य

इस पत्रिका के सुचारु रूप से प्रकाशन, प्रचार एवं प्रसार के लिए पाठकों तथा लेखकों का सहयोग अनिवार्य है। इस संदर्भ में आपसे निवेदन है कि इस पत्रिका के स्थायी सदस्य के रूप में अपने विद्यालय, संस्थान अथवा स्वयं को पंजीकृत करवाने का कष्ट करें। इसका वर्षिक सदस्यता शुल्क केवल 260 रु. है और प्रति कॉपी का मूल्य मात्र 65 रु. है। आशा है आप इस दिशा में शीघ्र ही निर्णय करके विद्यालय, संस्थान अथवा निजी वार्षिक सदस्यता के लिए कार्यवाही करेंगे। वार्षिक सदस्यता शुल्क-पत्र के लिए अपना पत्र स्वनामांकित लिफ़ाफ़े सहित **बिज़नेस मैनेजर, प्रकाशन विभाग (एन.सी.ई.आर.टी.) श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली-16** को भेज सकते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 भाषा शिक्षण के दौरान बहुभाषिकता को संसाधन के रूप में प्रयोग करने की संस्तुति करती है। यह भाषा शिक्षण हेतु समग्रतावादी दृष्टिकोण अपनाने का भी सुझाव देती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 में भाषा शिक्षण के संबंध में अन्य सुझावों से शिक्षक साथियों को अवगत कराने हेतु यहाँ प्रस्तुत हैं भाषा शिक्षण से संबंधित कुछ अंश।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 और भाषा शिक्षण*

भाषा

जब हम घर की भाषा (ओं) और मातृभाषा (ओं) की बात करते हैं तो इसके अंतर्गत घर की भाषा, बड़े कुनबे की भाषा, आस-पड़ोस की भाषा आदि आ जाती हैं, जो बच्चा स्वाभाविक रूप से अपने घर और समाज के वातावरण से ग्रहण कर लेता है। बच्चों में भाषा की जन्मजात क्षमता होती है। हम रोजमर्रा के अनुभव से जानते हैं कि ज़्यादातर बच्चे, स्कूल की शिक्षा की शुरुआत से पहले ही भाषा की जटिलताओं और नियमों को आत्मसात कर पूर्ण भाषिक क्षमता रखते हैं। कई बार जब बच्चे स्कूल आते हैं तो उनमें पहले से ही दो या तीन भाषाओं को समझने और बोलने की क्षमता होती है। वे केवल उन भाषाओं को सही-सही बोल लेते हैं, बल्कि उनका उचित प्रयोग भी कर रहे होते हैं। यहाँ तक कि भिन्न प्रतिभा वाले बच्चे, जो बोल नहीं पाते वे भी अपनी अभिव्यक्ति के लिए उतने ही जटिल वैकल्पिक संकेतों और प्रतीकों का विकास कर लेते हैं।

भाषाएँ एक प्रकार से स्मृतिकोश का भी काम करती हैं, जिसमें अपने सहवक्ताओं से विरासत में मिले संकेतों के साथ अपने जीवन-काल में बनाए संकेत भी शामिल होते हैं। ये वे माध्यम भी हैं जिनसे अधिकतर ज्ञान का निर्माण होता है, इसलिए इनका मनुष्य के विचार और उसकी अस्मिता से गहरा संबंध होता है। वास्तव में, उनका अस्मिता के साथ

*राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005* से लिया गया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इतना गहरा संबंध होता है कि बच्चे की मातृभाषा (ओं) को नकारना या उनको मिटाने के प्रयास उसके व्यक्तित्व में हस्तक्षेप की तरह लगते हैं। प्रभावी समझ और भाषा (ओं) के प्रयोग के माध्यम से बच्चे विचारों, व्यक्तियों और वस्तुओं तथा अपने आसपास के संसार से अपने आपको जोड़ पाते हैं।

अगर हम भाषा शिक्षण के लिए स्कूल में कोई कार्यक्रम शुरू करते हैं तो यह महत्वपूर्ण है कि बच्चे की सहज भाषायी क्षमता को पहचानें और याद रखें कि भाषाएँ सामाजिक-सांस्कृतिक रूप से बनती हैं और हमारे दैनंदिन व्यवहार से बदलती रहती हैं। शिक्षा में भाषाओं के लिए आदर्श यही है कि उनका इसी संसाधन के आधार पर विकास हो और साक्षरता के विकास के साथ (लिपियों में ब्रेल भी) अकादमिक भाषा के रूप में इसे विकसित करने के लिए समृद्ध भी किया जाए। जिन बच्चों में भाषा संबंधी अक्षमता हो उनके लिए मानक संकेत भाषा अपनाई जाए जिससे उनके सतत और पूर्ण विकास को समर्थन मिलता रहे। विद्यार्थियों की भाषिक क्षमता की पहचान से उनका स्वयं के और अपनी सांस्कृतिक जड़ों के प्रति विश्वास भी बढ़ेगा।

भाषा शिक्षा

भारत की भाषिक विविधता एक जटिल चुनौती तो पेश करती ही है, लेकिन वह कई प्रकार के अवसर भी देती है। भारत केवल इस मामले में ही अनूठा नहीं है कि यहाँ अनेक प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं, बल्कि उन भाषाओं में अनेक भाषा–परिवारों का प्रतिनिधित्व भी है। दुनिया के और किसी भी देश में पाँच–भाषा परिवारों की भाषाएँ नहीं पाई जातीं। संरचना के स्तर पर वे इतनी भिन्न हैं कि उन्हें विभिन्न भाषा परिवारों में वर्गीकृत किया जा सकता है जिनके नाम हैं–इंडो-आर्यन, द्रविड़, ऑस्ट्रो-एशियाटिक, तिब्बतो-बर्मन और अंडमानी। ये भाषाएँ आपस में सतत संपर्क-संवाद भी करती रहती हैं। अनेक भाषिक और सामाजिक-भाषिक विशेषताएँ ऐसी हैं जो सभी भाषाओं में समान रूप से पाई जाती हैं। यह इस बात का सबूत है कि भारत में विभिन्न भाषाएँ और संस्कृतियाँ सदियों से एक–दूसरे को समृद्ध करती रही हैं। शास्त्रीय भाषाएँ, जैसे–लैटिन, अरबी, फारसी, तमिल और संस्कृत विभक्ति प्रधान व्याकरण के मामले में और सौंदर्यबोध की दृष्टि से काफ़ी समद्ध रही हैं और हमारे जीवन को प्रदीप्त करती रही हैं, क्योंकि अनेक भाषाएँ उनसे शब्द लेती रहती हैं।

आज, हम यह निश्चित रूप से जानते हैं कि द्विभाषिकता या बहुभाषिकता से निश्चित संज्ञानात्मक लाभ होते हैं। त्रिभाषा-फॉर्मूला भारत की भाषा-स्थिति की चुनौतियों और अवसरों को संबोधित करने का एक प्रयास है। यह एक रणनीति है जिसे कई भाषाएँ सीखने के मार्ग को प्रशस्त करना चाहिए। इसे कार्यरूप और भावरूप दोनों ही में अपनाने की आवश्यकता है। इसका प्राथमिक उद्देश्य भारत में बहुभाषिकता और राष्ट्रीय सद्भाव का प्रसार है। निम्नलिखित दिशा–निर्देश इन लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक हो सकते हैं–

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- भाषा शिक्षण बहुभाषिक होना चाहिए, केवल कई भाषाओं के शिक्षण के ही अर्थ में नहीं, बल्कि रणनीति तैयार करने के लिहाज से भी ताकि बहुभाषिक कक्षा को एक संसाधन के तौर पर प्रयोग में लाया जाए।
- बच्चों की घरेलू भाषा (एँ), जैसा कि पहले पारिभाषित किया गया है, स्कूल में शिक्षण का माध्यम होनी चाहिए।
- अगर स्कूल में उच्चतर स्तर पर बच्चों की घरेलू भाषा (ओं) में शिक्षण की व्यवस्था न हो, तो प्राथमिक स्तर की स्कूली शिक्षा अवश्य घरेलू भाषा (ओं) के माध्यम से ही दी जाए। यह आवश्यक है कि हम बच्चे की घरेलू भाषाओं को सम्मान दें। हमारे संविधान की धारा 350-क के मुताबिक, 'प्रत्येक राज्य और राज्य के भीतर प्रत्येक स्थानीय प्राधिकारी भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के बालकों को शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की पर्याप्त सुविधाओं की व्यवस्था करने का प्रयास करेगा।'
- बच्चे प्रारंभ से ही बहुभाषिक शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे। त्रिभाषा फॉर्मूला को उसके मूलभाव के साथ लागू किए जाने की ज़रूरत है, ताकि वह बहुभाषी देश में बहुभाषी संवाद के माहौल को बढ़ावा दे।
- गैर-हिंदी भाषी राज्यों में, बच्चे हिंदी सीखते हैं। हिंदी प्रदेशों के मामले में, बच्चे वह भाषा सीखें जो उस इलाके में नहीं बोली जाती है। इन भाषाओं के अलावा आधुनिक भारतीय भाषा के रूप में संस्कृत का अध्ययन भी शुरू किया जा सकता है।
- बाद के स्तरों पर शास्त्रीय और विदेशी भाषाओं से परिचय करवाया जा सकता है।

घरेलू/प्रथम भाषा (एँ) या मातृभाषा शिक्षा

यह ज़ाहिर है कि अपनी सहजात भाषिक क्षमता और परिवार तथा आसपास के लोगों से अंत:क्रिया का अनुभव लेकर जब बच्चे स्कूल आते हैं तो उनमें अपनी भाषा या कई मामलों में अनेक भाषाओं में संवाद करने की क्षमता पूर्णत: विकसित होती है। वे केवल हज़ारों शब्दों के साथ स्कूल नहीं आते, बल्कि भाषा की जटिल और समृद्ध संरचनाओं के नियम (जैसे–ध्वनि, शब्द, वाक्य और संवाद के स्तर) पर भी उनका पूरा नियंत्रण होता है। एक बच्चा न केवल सही-सही समझना और बोलना जानता है, बल्कि वह अपनी भाषा (ओं) का उचित प्रयोग भी करता है। बच्चे व्यक्ति, स्थान और विषय के अनुसार अपने व्यवहार में परिवर्तन कर सकते हैं। बच्चों के पास स्पष्टत: भाषा की जटिल संरचनाओं को ध्वनि प्रवाह के द्वारा अमूर्त करने की संज्ञानात्मक क्षमताएँ होती हैं। कक्षा में क्षमता को उच्चस्तर के संवाद तथा ज्ञान-संवेदना के द्वारा विकसित करना ही प्रथम भाषा के शिक्षण का उद्देश्य होना चाहिए। कक्षा 3 के बाद से मौखिक और लिखित माध्यमों से उच्चस्तरीय संवाद कौशल और आलोचनात्मक चिंतन के विकास के प्रयास हों। प्राथमिक स्तर पर बच्चों की भाषा (ओं) को बिना सुधारे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसी रूप में स्वीकार करना चाहिए जिस रूप में वे होती हैं। कक्षा 4 के बाद अगर समृद्ध और रुचिकर मौके दिए जाएँ, तो बच्चे स्वयं भाषा के मानक रूप को ग्रहण कर लेते हैं, लेकिन इस प्रक्रिया के दौरान बच्चे की घरेलू भाषा के प्रति उचित सम्मान का भाव बना रहना चाहिए। यह स्वीकार करें कि गलतियाँ, अधिगम का हिस्सा होती हैं और बच्चे जब इस लायक हो जाएँ तो वे स्वयं उसमें सुधार कर लेते हैं। गलतियाँ और कमियों पर ध्यान दिए जाने की बजाय अधिक समय बच्चों को विस्तृत, रुचिकर और चुनौतीपूर्ण निवेश दिए जाने चाहिए।

स्कूल में घरेलू भाषाओं के शिक्षण के महत्व का बढ़ा-चढ़ा कर बखान करना कठिन है। यद्यपि बच्चे स्कूल में बुनियादी संवाद क्षमता के कौशल में समर्थ होकर आते हैं, उनको स्कूल में संज्ञानात्मक रूप से उच्चस्तरीय भाषिक क्षमता को अपनाने की ज़रूरत होती है। बुनियादी भाषा-क्षमता ऐसे मामलों के लिए तो पर्याप्त होती है जहाँ सुसंदर्भित और संज्ञानात्मक रूप से कुछ खास हवाले नहीं देने होते, जैसे बच्चों के अपने समूह में बातचीत के लिए। लेकिन उच्च स्तर की अभिव्यक्ति-क्षमता की आवश्यकता तब पड़ती है जब परिस्थितियों के संदर्भ कमज़ोर हों और वे संज्ञानात्मक माँग करें, जैसे किसी अमूर्त विषय पर निबंध लिखना। यह अब स्थापित हो चुका है कि उच्चस्तरीय भाषिक कौशल का एक भाषा से दूसरी भाषा में आसानी से स्थानांतरण हो सकता है। इसलिए यह आवश्यक है कि हम उसके लिए हर संभव प्रयत्न करें ताकि स्कूल स्तर पर भारतीय भाषाओं में सतत शिक्षा को समृद्ध किया जा सके।

भाषा शिक्षण केवल भाषा की कक्षा तक सीमित नहीं होता। विज्ञान, सामाजिक विज्ञान या गणित की कक्षाएँ भी एक तरह से भाषा की ही कक्षा होती हैं। किसी विषय को सीखने का मतलब है उसकी अवधारणाओं को सीखना, उसकी शब्दावली को सीखना, उनके बारे में आलोचनात्मक ढंग से चर्चा करना और उनके बारे में लिख सकना। कुछ विषयों को लेकर विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया जाए कि वे अलग-अलग पुस्तकों का अध्ययन करें या उन भाषाओं में लोगों से बातचीत करें, इंटरनेट से अँग्रेज़ी में सामग्री एकत्रित करें। भाषा को लेकर पाठ्यचर्या में ऐसी नीति अपनाने से स्कूल में बहुभाषिकता को बढ़ावा मिलेगा। साथ ही, भाषा की शिक्षा कुछ अनूठे अवसर उपलब्ध कराती है। कहानी, कविता, गीतों और नाटकों के माध्यम से बच्चे अपनी सांस्कृतिक धरोहर से जुड़ते हैं और इससे उनको अपने अनुभव विकसित करने और दूसरों के प्रति संवेदनशील होने के अवसर मिलते हैं। हम यह भी ध्यान दिला दें कि बच्चे इस प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से व्याकरण भी अधिक आसानी से सीख सकते हैं न कि उबाऊ व्याकरण शिक्षण से।

विभिन्न योग्यताओं वाले बच्चे सामान्य सामाजिक व्यवहारों से बुनियादी भाषा-क्षमता का विकास कर लेते हैं। लेकिन उनको विशेष रूप से तैयार की गई सामग्री अलग से भी दिए जाने की ज़रूरत है ताकि उनकी वृद्धि और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विकास पर्याप्त ढंग से हो सके। अन्य बच्चों के लिए ब्रेल और संकेत भाषा वैकल्पिक अध्ययन के तौर पर रखी जा सकती है।

द्वितीय भाषा सीखना

भारत के बहुभाषी समाज में अँग्रेज़ी एक वैश्विक भाषा है। यहाँ अँग्रेज़ी-शिक्षण में विविधता की स्थिति दो कारणों से है, एक शिक्षकों की अँग्रेज़ी में दक्षता और विद्यार्थियों का स्कूल से बाहर अँग्रेज़ी भाषा से सामना। अँग्रेज़ी आरंभ करने के स्तर का मुद्दा जनता की आकांक्षाओं का राजनीतिक प्रत्युत्तर देना है, अँग्रेज़ी को पाठ्यचर्या में किस स्तर से पढ़ाया जाए इस बारे में जनता की प्राथमिकताओं का आदर करना होगा इस आश्वासन के साथ कि हम उस तंत्र को और अधिक नीचे न ले जाएँ जो अपेक्षित परिणाम देने में असफल रहा है।

द्वितीय भाषा की पाठ्यचर्या के दोहरे लक्ष्य हैं--वैसी बुनियादी दक्षता प्राप्त करना, जैसी प्राकृतिक भाषा ज्ञान में अर्जित की गई हो और साक्षरता द्वारा भाषा का ऐसा विकास कि वह अमूर्त चिंतन और ज्ञान का उपकरण बने यह संपूर्ण पाठ्यचर्या संबंधी उपागम की बात करता है, जो अँग्रेज़ी और अन्य विषयों तथा अँग्रेज़ी या अन्य भारतीय भाषाओं की दीवार को तोड़ दे। आरंभिक स्तर पर, अँग्रेज़ी वह भाषा हो सकती है जिसके माध्यम से बच्चों को ऐसी शैक्षणिक गतिविधियाँ करवाई जाएँ जिससे दुनिया के बारे में बच्चे की जागरूकता बढ़े। बाद के चरणों में, सभी अधिगम भाषा के ज़रिए होते हैं। उच्च स्तर का भाषा-कौशल सभी भाषाओं में समान होता है, पढ़ना (उदाहरण के लिए) एक ऐसा कौशल है जो दूसरों को सिखाया जा सकता है। एक भाषा में इसके सुधार का असर अन्य भाषाओं में भी सुधार लाता है। अपनी भाषा में पढ़ने में यदि कोई असफ़ल होता है, तो उससे दूसरी भाषा के पठन पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

अँग्रेज़ी एकाकी नहीं है। अँग्रेज़ी शिक्षण का लक्ष्य ऐसे बहुभाषी लोगों को तैयार करना है जो हमारी भाषाओं को समृद्ध कर सकें, यह एक राष्ट्रीय दृष्टिकोण रहा है। विभिन्न राज्यों में अन्य भारतीय भाषाओं के साथ अँग्रेज़ी का स्थान बनाने की आवश्यकता है, जहाँ अन्य भाषाएँ अँग्रेज़ी सीखने-सिखाने को समृद्ध करें, और अँग्रेज़ी माध्यम के स्कूलों में अँग्रेज़ी के वर्चस्व को कम करने के लिए अन्य भारतीय भाषाओं के मूल्यवर्धन की ज़रूरत है। अँग्रेज़ी माध्यम के स्कूलों की तुलनात्मक सफ़लता यह बताती है कि भाषा तब सीखी जाती है जब वह भाषा के रूप में नहीं पढ़ाई जाती बल्कि सार्थक संदर्भों से जोड़कर उसे पढ़ाया जाता है। इसलिए अँग्रेज़ी को अन्य विषयों के संदर्भ में देखा जाना चाहिए प्राथमिक शिक्षा की दृष्टि से संपूर्ण पाठ्यचर्या के अंतर्गत भाषा शिक्षण का विशेष महत्त्व है और बाद में सभी शिक्षण एक अर्थ में भाषा शिक्षण ही होता है। यह दृष्टिकोण 'विषय के रूप में अँग्रेज़ी' और 'माध्यम के रूप में अँग्रेज़ी' की दूरी को पाट सकेगा। इस तरह से हम समान स्कूली पद्धति की दिशा में प्रगति कर सकते हैं जिसमें भाषा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षण और शिक्षण के माध्यम के रूप में भाषा के उपयोग में भेद न हो।

निवेश-समृद्ध संप्रेषण का वातावरण भाषा शिक्षण की पूर्व शर्त है, चाहे वह पहली भाषा हो या दूसरी। निवेश के अंतर्गत आते हैं– पाठ्यपुस्तकें, शिक्षार्थी द्वारा चयनित पाठ और कक्षा पुस्तकालय जिसमें अनेक विधाओं के लिए जगह हो, छपी सामग्री (उदाहरण के लिए युवा शिक्षार्थियों के लिए बड़ी पुस्तकें) एक से अधिक भाषा में समांतर पुस्तकें और सामग्री, मीडिया सामग्री (मैगज़ीन/समाचारपत्र के स्तंभ, रेडियो/ऑडियो कैसेट), और प्रामाणिक सामग्री। वंचित शिक्षार्थियों के लिए भाषा माहौल को समृद्ध बनाने की ज़रूरत है जिसके लिए स्कूलों को सामुदायिक शिक्षण केंद्र के रूप में विकसित करना चाहिए। इस दिशा में कई सफल नवाचार मौजूद हैं जिनके सामान्यीकरण को खोजने और बढ़ावा देने की ज़रूरत है। पद्धतियाँ और दृष्टिकोण विशिष्ट न हों, बल्कि मोटे तौर पर विस्तृत संज्ञानात्मक दर्शन के अनुकूल रहते हुए पारस्परिक रूप से समर्थक हों (जिसमें वायगोत्सकी, पियाजे और चॉमस्की के सिद्धांत शामिल हों)। उच्चस्तरीय कौशल (जिसमें साहित्यिक आस्वाद और जेंडर संबंधी दृष्टिकोण निर्धारण में भाषा की भूमिका शामिल है) विकसित करने की ओर तब ध्यान दिया जाए जब बुनियादी दक्षता सुनिश्चित हो चुकी हो।

शिक्षक की शिक्षा सतत, जहाँ वह शिक्षण कार्य कर रहा हो वहाँ (औपचारिक या अनौपचारिक सहायक व्यवस्थाओं द्वारा) ही उसे तैयार करने वाली होनी चाहिए। दक्षता और व्यावसायिक जागरूकता को समान रूप से बढ़ावा दिए जाने की ज़रूरत है और व्यावसायिक जागरूकता जहाँ आवश्यक हो उसे शिक्षक की अपनी भाषा के माध्यम से दिए जाने की ज़रूरत है। जो भी शिक्षक अँग्रेज़ी पढ़ाते हों उनकी अँग्रेज़ी में बुनियादी दक्षता होनी चाहिए। हर शिक्षक में यह कौशल होना चाहिए कि वह परिस्थिति और स्तर के अनुसार उपयुक्त तरीके से अँग्रेज़ी पढ़ा सके। इसके लिए विविध प्रकार की सामग्री उपलब्ध होनी चाहिए ताकि पाठ्यचर्या निवेश-समृद्ध हो और अर्थ पर ज़ोर दे।

भाषा-संबंधी मूल्यांकन को किसी विशेष पाठ्यक्रम के संदर्भ में उपलब्धियों से नहीं बाँधना चाहिए, बल्कि उसे भाषा दक्षता के मापने में पुनःनियोजित किया जाना चाहिए। मूल्यांकन को बाधा के रूप में देखने के बजाय अधिगम की समर्थक प्रक्रिया के रूप में देखने की ज़रूरत है। शिक्षार्थी की प्रगति का निरंतर आकलन होना चाहिए और पोर्टफ़ोलियो के रूप में उसका लेखन रखना चाहिए। भाषा क्षमता में राष्ट्रीय मानदण्डों को विकसित करने की ज़रूरत है जिसके बाद वैकल्पिक अँग्रेज़ी भाषा के परीक्षणों का एक समुच्चय बनाया जाए जिससे पाठ्यचर्या में आज़ादी और मूल्यांकन के मानकीकरण के बीच संतुलन हो। इससे अँग्रेज़ी की मौजूदा समस्या को हल करने में मदद मिलेगी क्योंकि कक्षा 10 की असफलता में अँग्रेज़ी एक मुख्य कारण है। विद्यार्थी को अँग्रेज़ी के बिना भी पास होने की इजाज़त दी जा सकती है अगर नियमित स्कूली व्यवस्था के बाहर अँग्रेज़ी दक्षता के लिए सर्टिफ़िकेट देने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के लिए (अनुदेशन देने के लिए) वैकल्पिक व्यवस्था बनाई जाए।

पढ़ना-लिखना सीखना

हालाँकि हम भाषा के विभिन्न कौशलों को एकीकृत रूप में पढ़ाने की प्रस्तावना की ज़ोर-शोर से वकालत करते हैं लेकिन कई मामलों में स्कूल को पठन और लेखन पर विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है, खासकर घरेलू भाषाओं के संदर्भ में। दूसरी, तीसरी या शास्त्रीय या विदेशी भाषा के संदर्भ में वाचिक दक्षता सहित सभी कौशल महत्वपूर्ण हो जाते हैं। बच्चे सर्वांगीण परिस्थितियों में अधिक सीखते हैं जिनमें बच्चों को सार्थकता दिखती है बजाय एक योगात्मक या बँधे-बँधाए ढर्रे से जिसमें कोई अर्थ नहीं होता। समृद्ध और व्याख्यात्मक निवेश भाषा के सभी मुश्किल कौशलों को सीखने के लिहाज से महत्वपूर्ण होते हैं। कई प्रकार की संवाद स्थितियों में, जैसे फोन पर किसी को सुनकर संदेश को दर्ज करना, कई कौशल एकसाथ उपयोग में लाने पड़ते हैं। हम सचमुच चाहते हैं कि बच्चे समझ के साथ पढ़ें-लिखें। भाषा-कौशलों के पुंज के रूप में, चिंतन और अस्मिता के रूप में स्कूल के सभी विषयों में मौजूद है। बोलना और सुनना, पढ़ना और लिखना सभी सामान्य कौशल हैं और उनमें बच्चों की दक्षता, स्कूल में उनकी सफलता को प्रभावित करती है। कई स्थितियों में इन सभी कौशलों को एक साथ उपयोग में लाने की ज़रूरत होती है। इसलिए स्कूल स्तर पर भाषा का शिक्षण सभी की चिंता का कारण होना चाहिए, न कि केवल भाषा शिक्षक का दायित्व। साथ ही, भाषा के साथ जुड़े कौशलों को केवल प्राथमिक स्तर पर ही नहीं छोड़ दिया जाना चाहिए, बल्कि जैसे-जैसे विषय में नई आवश्यकताएँ पैदा हों उनको माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तरों तक ले जाना चाहिए। जीवन संबंधी कौशल, जैसे आलोचनात्मक चिंतन का कौशल, अन्य लोगों के साथ संप्रेषण के कौशल, तोलमोल करने/मना करने के कौशल, निर्णय लेने या समस्या सुलझाने के कौशल और परिस्थितियों से निपटने तथा स्वयं की व्यवस्था आदि के कौशलों का रोज़मर्रा के जीवन की चुनौतियों और माँगों के संदर्भ में बड़ा महत्त्व होता है।

परंपरागत रूप से प्रशिक्षित भाषा-शिक्षक बोलने के प्रशिक्षण को, भाषा के सहभागी और अभिव्यक्तिमूलक कौशल पर ज़ोर देने के बजाय शुद्धता से जोड़ता है। इसीलिए कक्षा में बोलने को हमारी व्यवस्था में नकारात्मक मूल्य समझा जाता है और शिक्षक की काफ़ी ऊर्जा बच्चों को शांत कराने या उनके उच्चारण को ठीक करने में चली जाती है। अगर शिक्षक बच्चे के बोलने को बकवास के बदले संसाधन के तौर पर देखें तो यह संभावना बढ़ जाएगी कि विरोध और नियंत्रण का दुष्चक्र बदल कर अभिव्यक्ति और प्रत्युत्तर का चक्र बन जाए। इस संबंध में विस्तृत ज्ञान उपलब्ध है कि कैसे बातचीत को आधार सामग्री के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। सेवा पूर्व और सेवा के दौरान प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शिक्षकों का इससे परिचय करवाना चाहिए। पाठ्यपुस्तकों और शिक्षक मार्गदर्शिकाएँ तैयार करने वालों को शिक्षकों के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लिए इस तरह के निर्देश लिखने चाहिए कि किस प्रकार विषयवस्तु को बच्चों के छोटे समूह में चर्चा द्वारा और ऐसी गतिविधियों के द्वारा आगे प्रवर्तन किया जाए जो बच्चों में तुलना और विपरीतता, आश्चर्य और स्मरण, अटकल और चुनौती तथा मूल्यांकन और पहचान की क्षमता का विकास करे। सुनने के क्रम में, इसी प्रकार गतिविधियों की योजना तैयार कर पाठ्यपुस्तकों और मार्गदर्शिकाओं में उनका समावेश कर महत्वपूर्ण कौशलों और मूल्यों के विकास में काफ़ी कुछ किया जा सकता है। इसके अंतर्गत ध्यान देने की क्षमता, अन्य व्यक्तियों की बात को महत्त्व देना और जो बोला गया उसका अर्थ-निर्धारण, मुक्त अभिव्यक्ति और कही गई बात पर लचीली परिकल्पना शामिल हैं। ठीक इसी प्रकार, बातचीत की तरह सुनना भी कई जटिल कौशलों का जाल है। स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों में लोककथाएँ और कहानी सुनाना, सामुदायिक गायन और नाटक आते हैं। कहानी सुनाना न केवल पाठशाला-पूर्व शिक्षा के लिए आवश्यक है, बल्कि वह बाद में भी महत्वपूर्ण बना रहता है। कथात्मक विमर्श होने के कारण, मौखिक रूप से कही गई कहानियाँ तार्किक समझ का आधार तैयार करती हैं, साथ ही, ये हमारी कल्पनाशीलता को समृद्ध बनाती हैं और अपने जीवन से अलग परिस्थितियों में भागीदारी की क्षमता का विकास भी करती हैं। कल्पनाशीलता और रहस्यात्मकता का बच्चे के विकास में बड़ा योगदान होता है। भाषा शिक्षण के एक पहलू के रूप में सुनने की कला का भी विकास संगीत की मदद से किया जाना चाहिए, जिसमें लोक, शास्त्रीय और लोकप्रिय सभी रचनाएँ शामिल हों। लोकगीतों और संगीत को भाषा की पाठ्यपुस्तकों में भी स्थान मिलना चाहिए तथा उनको अभ्यास और गतिविधियों की मदद से विकसित किया जाना चाहिए।

जबकि पठन को भाषा शिक्षण का महत्वपूर्ण अवयव माना जाता है, स्कूली पाठ्यक्रम सूचनाओं और रटंत पाठों से इतने भरे होते हैं कि सिर्फ़ पढ़ने के लिए पढ़ने का आनंद कहीं दूर छूट ही जाता है। पढ़ने की संस्कृति के विकास के क्रम में वैयक्तिक पठन को प्रोत्साहित किए जाने की आवश्यकता है और शिक्षकों को इस संस्कृति का हिस्सा बनकर स्वयं उदाहरण पेश करना चाहिए। इसके लिए स्कूल और सामुदायिक स्तर पर पुस्तकालयों को बढ़ावा देने की ज़रूरत है। यह मान्यता कि कथा-उपन्यास पढ़ना समय नष्ट करना है पठन को हतोत्साहित करने का बड़ा कारण है। सभी स्कूली विषयों और स्कूल के सभी स्तरों पर पूरक पठन सामग्री का विकास और उनकी आपूर्ति की तत्काल आवश्यकता है। इस प्रकार की काफ़ी सामग्री, बाजार में उपलब्ध है यद्यपि उनकी गुणवत्ता में काफ़ी अंतर है, परंतु उनका कक्षा में पठन-पाठन के दौरान उपयोग किया जा सकता है। कक्षा में व्यवस्थित रूप से ऐसी सामग्री का उपयोग किया जाए तो विषयों के शिक्षण में विस्तार होगा। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शिक्षकों को ऐसी सामग्री से परिचित कराए जाने की आवश्यकता है और उन्हें ऐसे मानदंड बताए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाने की ज़रूरत है ताकि वे प्रभावी ढंग से पठन सामग्री का चुनाव और उपयोग कर सकें।

लिखने का महत्त्व सर्वविदित है लेकिन पाठ्यचर्या में इसको लेकर नवाचार अपनाने की ज़रूरत है। शिक्षकों का ज़ोर इस पर होता है कि बच्चे सही तरीके से लिखें। लिखने के माध्यम से अपने विचारों की अभिव्यक्ति को महत्वपूर्ण नहीं माना जाता। ठीक जैसे समय से पहले सही उच्चारण का बोझ, बच्चे के खुलकर अपनी बोली में बात करने की क्षमता को कुण्ठित करता है, उसी तरह मशीनी रूप से शुद्ध लिखने की मांग विचारों को अभिव्यक्त करने में बाधा बनती है। शिक्षकों को इस रूप में प्रशिक्षित किए जाने की आवश्यकता है कि वे लेखन को एक कला की तरह समझें, न कि कार्यालयी कौशल की तरह। आरंभिक वर्षों में, लिखने की क्षमता का विकास, बोलने, सुनने और पढ़ने की क्षमता की संगति में होना चाहिए। स्कूल में माध्यमिक और उच्चतर स्तर पर नोट तैयार करने को कौशल विकास के प्रशिक्षण के तौर पर देखा जाना चाहिए। आगे चलकर इससे श्यामपट्ट, पाठ्यपुस्तकों और कुंजी से नकल (टीपने) की प्रवृत्ति हतोत्साहित होगी। ऐसे प्रयास भी आवश्यक हैं जिनसे पत्र-लेखन और निबंध लेखन की घिसी-पिटी गतिविधियों पर रोक लगाकर शिक्षा में कल्पना और मौलिकता को महत्वपूर्ण भूमिका दी जाए।

❑❑❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 के आधार विकसित पाठ्यक्रम के अनुसार परिषद् में नवीन पाठ्यपुस्तकों का विकास किया गया है। प्रस्तुत लेख में प्राथमिक स्तर की हिंदी की पहली कक्षा से पाँचवीं कक्षा तक की पाठ्यपुस्तक रिमझिम शृंखला के विषय में जानकारी दी जा रही है।

भाषा की पाठ्यपुस्तकें–रिमझिम शृंखला

लता पाण्डे*

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 में भाषा शिक्षण के संबंध में उल्लेख है कि भाषा की शिक्षा कुछ अनूठे अवसर देती है। कहानी, कविता, गीतों और नाटकों आदि के माध्यम से बच्चे अपनी सांस्कृतिक धरोहर से जुड़ते हैं और इससे उनको अपने अनुभव विकसित करने और दूसरों के प्रति संवेदनशील होने के अवसर मिलते हैं। *रिमझिम शृंखला* में दी गई रचनाएँ, गतिविधियाँ और अभ्यास बच्चों को ऐसे अवसर सुलभ कराती हैं।

रोचक बालसाहित्य भाषा सीखने और पढ़ने के प्रति ललक जगाने का पहला कदम है। कहानी की निराली काल्पनिक दुनिया की सैर सभी बच्चों को भाती है। पाठ्यपुस्तक का धर्म है कि वह बच्चों को परिवेश से जोड़े। *रिमझिम* की कहानियाँ बच्चों को परिवेश से जोड़ती हैं। सरस और सरल कहानियों के साथ बच्चों को आनंदित करने के लिए *रिमझिम* में लय से सराबोर कविताएँ भी हैं। विषय सामग्री में नाटक, खबर को समाहित किए हुए साहित्य की विभिन्न विधाओं का फलक है *रिमझिम।* राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 के आधार पर विकसित भाषा के लिए चुनी गई रचनाओं में कम-से-कम बीस प्रतिशत अन्य भारतीय भाषाओं और विदेशी भाषाओं से हों। *रिमझिम–4* की कहानी **दान का हिसाब** और कविता **आँधी** *रिमझिम–5* की **राख की रस्सी** (तिब्बत) तथा **चावल की रोटियाँ** (चीन) इसी श्रेणी में

**एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली-110 016

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आती हैं। प्राथमिक स्तर से ही साहित्यिक रुचि उत्पन्न करने के लिए श्रेष्ठ रचनाकारों की रचनाएँ रिमझिम में ली गई हैं। जैसे–प्रेमचंद की 'ईदगाह', रवींद्रनाथ टैगोर की 'छोटी-सी हमारी नदी', नागार्जुन की 'बाघ आया उस रात' आदि। रचनाकारों से बच्चों को 'रू-ब-रू' कराने का प्रयास भी रिमझिम–5 में किया गया है। आमतौर पर पाठ्यपुस्तकों में निहित रचनाकारों में बाल-पात्रों को सही छवि प्रस्तुत नहीं की जाती है। कहीं उन्हें एकदम आदर्श रूप में दिखाया जाता है तो कहीं एकदम नादान और नासमझ। *रिमझिम* ने बच्चों की गरिमा को बरकरार रखते हुए उन्हें सहज रूप में अपनी विषय सामग्री में स्थान दिया है। मन करता है, (*रिमझिम–3*) **कोई लाके मुझे दे** (*रिमझिम–4*) **नन्हा फनकार, स्वामी की दादी, एक दिन की बादशाहत, किरमिच की गेंद** (*रिमझिम–5*) सदृश रचनाएँ पढ़ते समय बच्चों को यही लगता है कि यह तो उनके मन की बात है।

बच्चों को पढ़कर आनंद लेने के अधिक-से-अधिक अवसर देने के उद्देश्य से पुस्तकों में कुछ रचनाएँ केवल पढ़ने के लिए दी गई हैं। इन रचनाओं के साथ प्रश्न नहीं दिए गए हैं। इनका उद्देश्य बच्चों को रस लेकर पढ़ना सिखाकर पढ़ने के प्रति उनकी रुचि जागृत करना और लुप्त हो रही पठन संस्कृति को वापस लाना है।

रिमझिम श्रृंखला के चित्र बच्चों को इन पाठ्यपुस्तकों से बाँधे रखने में सहायक हैं। बच्चों को भी चित्र बनाने के कई अवसर इनमें दिए गए हैं। *रिमझिम* में वरली (महाराष्ट्र), मधुबनी (बिहार), पटचित्र (उड़ीसा), ऐपण (उत्तरांचल) तथा गोंडी भिट्टी (मध्यप्रदेश) शैली के चित्र दिए गए हैं ताकि बचपन से ही बच्चे अपने देश की लोककथाओं, गीतों और लोकशैलियों से परिचित हो सकें। चित्र देखने और पढ़ने का आनंद एक साथ देने के दृष्टिकोण से *रिमझिम–2* में **बिल्ली कैसे रहने आई आदमी के संग** और *रिमझिम–4* में **एक साथ तीन सुख** चित्रकथाएँ दी गई हैं।

सक्रियता बच्चों का सहज स्वभाव है। *रिमझिम* श्रृंखला में दी गई गतिविधियाँ तथा अभ्यास बच्चों को बातचीत अभिनय, अवलोकन करने कल्पना की उड़ान भरने, वर्ग पहेलियाँ और कक्षा से बाहर की दुनिया में जाकर जानकारी प्राप्त करने के भरपूर अवसर देते हैं।

आमतौर पर पाठ्यपुस्तकों में लड़कों को साहसी कार्य करते, अपनी विवेकशीलता का परिचय देते, निर्णय लेते दर्शाया जता है। और लड़कियों के कार्यक्षेत्र का दायरा घरेलू कार्यों, उनकी दूसरों पर निर्भरता, उनमें निर्णय लेने की क्षमता का सर्वथा अभाव ही दिखाया जाता है। *रिमझिम श्रृंखला* ने इस परंपरा को तोड़ा है। *रिमझिम* की विभिन्न रचनाएँ और उनके अभ्यासों में आई बालिका पात्र वे सब कार्य करती हुई दिखती हैं जो कि उनके समवयस्क बालक करते हैं।

रिमझिम–3 की पंजाब की लोककथा की **बहादुर बित्तो** अपनी सूझ-बूझ और हिम्मत का परिचय देती हुई शेर पर काबू पाती है तो *रिमझिम–5* की तिब्बती लोककथा **राख की रस्सी** की लड़की अपने विवेक चातुर्य से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सबको चकित कर देती है। **बहादुर बित्तो** लोककथा के पश्चात् अभ्यास के अंतर्गत एक प्रश्न है--बित्तो की हिम्मत तुम्हें कैसी लगी? अगर तुम बित्तो की जगह होतीं तो शेर से कैसे निपटतीं? यह सवाल निश्चय ही कक्षा की सभी बालिक़ाओं को प्रश्न का उत्तर तो विचारने का अवसर देगा ही बहादुर बित्तो की तरह ही कुछ वीरता के कारनामे करने की सोच भी उनमें उपजाएगा। *रिमझिम शृंखला* की रचनाएँ भाषा शिक्षण के दौरान दूसरों के प्रति खासकर असमानता, समता या पृष्ठभूमि के अंतर के संदर्भ में बच्चों को संवेदनशील बनाने के अवसर भी देती है *रिमझिम--4* की **सुनीता की पहिया कुर्सी** और *रिमझिम–5* की **जहाँ चाह वहाँ राह** जैसी रचनाएँ इसी उद्देश्य की पूर्ति करती है। **जहाँ चाह वहाँ राह** की इला पैरों से कसीदाकारी कर हिम्मत की अनूठी मिसाल नन्हे पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करती है। *रिमझिम* में दी गई गतिविधियाँ बच्चों के नित-प्रतिदिन के जीवन से जुड़ी हैं। ये गतिविधियाँ पाठों में निहित संभावनाओं को उभारती हैं और उसी तरह की अन्य गतिविधियाँ करने के संकेत भी शिक्षक वर्ग को देती हैं। गतिविधियाँ कक्षा की एकरसता दूर करने में सहायक हैं।

रिमझिम में दिए गए अभ्यास बच्चों की स्वाभाविक चंचलता से रचे-पगे हैं। बच्चों के जीवन एवं अनुभव से जुड़े सवाल बच्चों में रोमांच और उत्साह जगाते हैं। पाठ्यपुस्तक की परिधि के बाहर वृहत्तर परिधि को समेटने वाले प्रश्नों के उत्तर देने के लिए बच्चों को याददाश्त की घुड़दौड़ में शामिल नहीं होना होगा। सवाल बच्चों को अपनी समक्ष, सोच और कल्पना का इस्तेमाल कर जवाब देने के भरपूर अवसर मुहैया कराते हैं और बच्चों की भाषायी आवश्यकताओं से मेल खाते हैं। अभ्यास व्याकरण की अवधारणाओं को दैनिक जीवन के संदर्भों के साथ जोड़कर पहचानने और उनका प्रयोग करने को बच्चे को प्रेरित करते हैं। व्याकरण सीखना बच्चे को बोझिल नहीं लगता।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 सुझाव देती है कि पहली और दूसरी कक्षा में गणित और भाषा के माध्यम से कला शिक्षण किया जाए। इसी को दृष्टिगत रखते हुए *रिमझिम–1 और 2* में कला संबंधी अनेक गतिविधियाँ दी गई हैं। *रिमझिम–2* में **मीठी सारंगी** कहानी में अभ्यास के अंतर्गत विभिन्न वाद्ययंत्रों की जानकारी दी गई है। *रिमझिम–4* में **बजाओ खुद का बनाया बाजा** पाठ भी स्वयं विभिन्न बाजे बनाकर उन्हें बजाने का आनंद लेने का अवसर बच्चों को देता है।

भाषा संस्कृति की दूत ही नहीं बल्कि स्वयं संस्कृति है। भाषा ही संस्कृति का संकेत देती है। *रिमझिम* सांस्कृतिक विविधता का झरोखा है। *रिमझिम–1* की **भूस की मज़दूरी** (नागा लोककथा), *रिमझिम–2* की **दो दोस्त** (मलयालम) तथा **एक्की-दोक्की** (मराठी) *रिमझिम–3* की **बहादुर बित्तो** (पंजाबी) *रिमझिम–4* की **मुफ्त ही मुफ्त** (मराठी) लोककथाओं के साथ *रिमझिम–2* में **टेसू राजा बीच बाज़ार**, टेसूरा घंटा बजइयो जैसे लोकगीत हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कक्षा में प्रत्येक बच्चे की भाषा और अभिव्यक्ति को सम्मान देकर बच्चे को आत्मविश्वास से भरपूर करने के अवसर देने के लिए *रिमझिम* में बहुभाषिकता का संसाधन के रूप में इस्तेमाल किया गया है। रचनाएँ और अभ्यास बच्चों को आंचलिकता के ज़ायके का भी आनंद देते हैं।

भाषा मूल्यों का संचार है। सामाजिक सद्भाव, शांतिपरक मूल्यों के विकास में भाषा की महती भूमिका है। भाषा शिक्षण के दौरान दूसरों के प्रति स्नेह, संवेदनशीलता सदृश मूल्य विकसित करने की दृष्टि से *रिमझिम* में पाठ, अभ्यास तथा गतिविधियाँ दी गई हैं।

भाषा हर विषय को जीवन देने वाली शक्ति है। एक विषय की पाठ्यपुस्तक की झलक दूसरे विषय की पाठ्यपुस्तक में पाना बच्चों को अच्छा लगता है। *रिमझिम–2* में दिया पाठ **कौन अधिक बलवान** तथा *रिमझिम–4* में दिया पाठ **मुल्ला का निशाना** अँग्रेज़ी की दूसरी और चौथी की किताब marygold–3 और 4 में भी दिया गया है। इसके पीछे धारणा यह भी है कि हिंदी में पाठ पढ़ने के बाद बच्चा अँग्रेज़ी में पढ़ेगा तो पाठ समझने में उसे आसानी होगी। इसी प्रकार तीसरी कक्षा की पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तक **आस-पास** से भी *रिमझिम–4* के एक अभ्यास को जोड़ा गया है। इस प्रकार *रिमझिम* के माध्यम से भाषा सीखते हुए भी बच्चे अन्य विषयों से भी जुड़े रहते हैं।

रिमझिम की एक विशेषता यह भी है कि पाठ्यपुस्तकों से विलुप्त विनोद-वृत्ति तथा हास-परिहास को पुनः पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित करना। इस प्रकार भाषा सीखना बच्चों के लिए आनंदमय प्रक्रिया बनाने का प्रयास किया गया है। *रिमझिम* श्रृंखला में चयनित रचनाओं की भाषा सरल तथा गतिविधियाँ एवं अभ्यासों की भाषा भी बच्चों की अपनी भाषा है।

जेंडर का मुद्दा समूची मानवता का मुद्दा है। नन्हें हृदयों में जेंडर के मुद्दे के प्रति संवेदनशीलता के विकास में *रिमझिम* की विषय सामग्री अत्यंत सहायक है। सांस्कृतिक और समाजिक परिवेश, देश की विविधता एवं भाषिक संस्कृति को *रिमझिम* में बड़ी ही खूबसूरती से समेटा गया है। ये पाठ्यपुस्तकें जड़ता को तोड़कर बच्चों की जीवंतता को बरकरार रखती हैं। इस प्रकार भाषा सीखने के अनुभव को सुखद बनाने और बचपन को सँजाने का प्रयास है *रिमझिम*।

❑❑❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक अच्छा शिक्षक वही है जो कक्षा में सभी बच्चों पर समान रूप से ध्यान दे। अक्सर यह होता हैं कि पढ़ाने के दौरान अथवा बाद में सवाल पूछते समय शिक्षक यह भूल ही जाते हैं कि उनकी कक्षा में कोई शारीरिक रूप से चुनौती वाला बच्चा भी है। किसी भी विषय को पढ़ाते समय शारीरिक रूप से चुनौती वाले बच्चों का भी ध्यान रखना विशेष रुप से आवश्यक है। प्रस्तुत लेख में भाषा शिक्षण का उदाहरण देते हुए यही बात शिक्षकों तक पहुँचाने का प्रयास किया गया है।

भाषा के रंग समावेशन के संग

शारदा कुमारी*

अध्यापन में कहाँ जुड़ी है
कैसी कोई बाधा . . . .
यह तो निर्भर करता है पढ़ाने वाले पर
चाहें तो डाल दे बोझ रूकावटों का
कि इक अक्षर भी चीन्हा न जाए
और चाहे तो. . . . .
भाषा की समूची तिलस्मी दुनिया की
सैर ही करा आए।

यह बात उन सभी लोगों को पढ़नी, समझनी और गुननी चाहिए जो उन तमाम बच्चों से ताल्लुक रखते हैं जिन्होंने पढ़ने, लिखने की दुनिया में पंख फैलाने की कोशिश की है। हो सकता है हमारे तौर-तरीके उड़ान भरने की उनकी चाहतों और कोशिशों पर कुछ बंदिशें लगा दें और यह भी हो सकता है कि उन्हें उन ऊँचाईयों तक पहुँचा दें कि वे जिंदगी भर एक उत्साही पाठक बने रहें।

कक्षा अध्यापन के संदर्भ में अपनी तरफ़ से हम पूरी ईमानदारी बरतने की कोशिशें करते होंगे पर क्या हमारी ईमानदारी कक्षा में मौजूद हर बच्चे की ज़रुरतों को समझ पाती है? इस पर विचार करना ज़रुरी होगा।

शालिनी की गिनती मननशील अध्यापकों में होती है। अति उत्साही, कर्मठ, योग्य जैसे विशेषण उसके नाम के आगे लगते हैं क्योंकि वह पूरी लगन के साथ पढ़ाने की तैयारी करती है, पर अंजाने में कहीं-कहीं वह भी चूक

**वरिष्ठ प्रवक्ता*, मंडल शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, सेक्टर-7, आर. के. पुरम्, नयी दिल्ली।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाती है। भाषा की कक्षा में उसकी तैयारी कहाँ गड़बड़ाई, यह उसके ही शब्दों में–

कक्षा दो में मैं 'रिमझिम' (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित हिंदी की पाठ्यपुस्तक) की पहली कविता 'ऊँट चला' पढ़ाने के साथ-साथ उन्हें हाथ-पैर हिला-डुला कर ऊँट की चाल भी दिखा रही थी। इससे बच्चों ने भरपूर मज़ा उठाया। मुझे अच्छा लगा कि मेरी मेहनत सफल हुई पर एक जगह आकर मुझे लगा कि पाठ तैयार करने में मुझसे बहुत भारी चूक हुई है। अभ्यास के लिए पूरे चार्ट पेपर पर मैंने दो चित्र बनाए थे एक पर रेगिस्तानी इलाका और दूसरे चार्ट पर पहाड़ी इलाका। दोनों को दिखा कर पूछा-इन दोनों में ऊँट कौन-से चित्र में होना चाहिए पहचानो तो। आशीष सबसे आगे बैठा था। अंदाज़ से आगे बढ़ा। दोनों चित्रों पर हाथ फेरा, एक बार नहीं, दो-दो बार, हँसकर बोला, "मैम, दोनो एक से ही है न। कहीं भी बैठा दो ऊँट को"। बाकी बच्चे, कुछ हँसे, कुछ चुप रहे और कुछ बोले,–"ओ पगले, दोनों चित्र एक से कैसे हैं? ध्यान से देख एक में पहाड़ और नदी बनी है, दूसरे में दूर-दूर तक रेत ही रेत है।"

आशीष ध्यान से कैसे देख पाता? चार वर्ष की आयु में किसी तरह की शल्य चिकित्सा के दौरान उसकी दोनों आँखों की रोशनी चली गई थी। पिता तो अंध विद्यालय में भरती करवाना चाह रहे थे पर माँ का जी नहीं माना। कहती है, "घर में भी तो वह सभी के साथ ही रहता है। इसी तरह से स्कूल में भी रह लेगा।" वह तो स्कूल में हर तरह से सामंजस्य बैठाने की कोशिश करता है पर चूक मुझसे ही हो जाती है। मैं क्यों भूल जाती हूँ कि मेरी कक्षा में आशीष भी है। दरअसल मुझे पता ही नहीं है कि मुझे करना क्या चाहिए था। शालिनी जैसे और भी बहुत से अध्यापक होंगे जो इस तरह की स्थितियों में अपने को असहाय पाते होंगे। उन्हें ज़रूरत है समावेशन को वृहत्तर संदर्भो में समझने की।

1990 के दशक में 1994 में सलमांका घोषणा ने 'इंक्लूसिव शिक्षा' की ज़ोरदार वकालत करते हुए सामान्य शिक्षा व्यवस्था में बच्चों, युवाओं एवं वयस्कों को शिक्षा उपलब्ध करवाने की तत्कालिकता एवं अनिवार्यता को पहचाना और विद्यालयों को समावेशी बनाने पर ज़ोर दिया।

मुख्यधारा स्कूलों में विशेष आवश्यकता प्राप्त बच्चों को उनके अन्य सहपाठियों के साथ शिक्षा प्रदान करने की प्रक्रिया को समावेशन की संज्ञा दी गई।

पर क्या हर तरह की ज़रूरत वाले बच्चों को मुख्यधारा स्कूलों में दाखिला भर देना ही समावेशन है? निश्चित रूप से नहीं।

सभी स्कूलों को समावेशी (इंक्लूसिव) बनाने के लिए ज़रूरी है–

- विद्यालय की बुनियादी संरचना में आवश्यक परिवर्तन लाना यानी कि भौतिक बाधाओं को दूर करना (चौड़े गेट, रैंप, पहले तल, भूतल पर कक्षाएँ आदि)
- अध्यापकों में शिक्षाशास्त्रीय कौशलों का विकास,

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- पढ़ाने-सीखने से जुड़ी सामग्री और विशेषज्ञों के रूप में सहायक सेवाएँ उपलब्ध कराना।
- सीखने वाले की विविधता को स्वीकार करना और इन सबके साथ-साथ ज़रूरी है–

विभिन्न विषय क्षेत्रों में अनुकूलन, संशोधन या वैकल्पिक गतिविधियों के लिए प्रावधान

दरअसल शालिनी ने अपनी जिस चूक का ज़िक्र किया वह 'पाठ्यचर्यक अनुकूलन' से संबंधित है। जब हम समावेशी कक्षा में कार्य करते हैं तो हमें कक्षा प्रबंधन और अपने तरीकों में बदलाव के साथ-साथ गतिविधियों और युक्तियों में भी आवश्यकता के अनुसार बदलाव करना पड़ता है इसे पाठ्यचर्यक अनुकूलन (करिकुलर एडपटेशन) कहा जाता है। पारंपरिक भाषा शिक्षा की सीमा से आगे जाने का दावा करती हुई भाषा के विकास की समग्रता को ध्यान में रखकर बनाई हुई 'रिमझिम' भी कई स्थानों पर अध्यापक से 'गतिविधि अनुकूलन' की माँग करती है। *'रिमझिम'* शृंखला की कुछ गतिविधियों एवं अभ्यासों को समावेशी कक्षा की जरूरतों के संदर्भ में अनुकूलन की दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है–

- *रिमझिम–2* की कविता–'बहुत हुआ' में बरसात शीर्षक की तीसरी गतिविधि पर विचार करें–

खूब तेज बारिश होगी तो तुम्हारे घर के आस-पास कैसा दिखाई देगा?

- अवलोकन क्षमता के विकास एवं संवर्द्धन की दृष्टि से यह बहुत ही सुंदर प्रश्न है। यदि कक्षा में दृष्टि बाधित विद्यार्थी है तब इसे बदलने की आवश्यकता होगी उस विद्यार्थी विशेष के लिए संभवतया: आप कहें–
- खूब तेज बारिश होगी तो तुम्हारे स्कूल के आस-पास कैसा दिखाई देगा, अपने मित्र से पूछो।
- वह विद्यार्थी अपने मित्र के अनुभवों से जान पाएगी कि बारिश के बाद क्या नज़ारा होता है। यहाँ 'स्कूल' के स्थान पर 'घर' भी हो सकता है यदि वह सहपाठी घर के आस-पास रहती हो।

आप इस तरह भी कह सकते है–

- खूब तेज बारिश होने पर आपको किस तरह की परेशानी महसूस होती है।
- आपके द्वारा इन दोनों से इतर और भी बेहतर विकल्प ढूँढ़ा जा सकता है।

इसी पुस्तक का नवाँ पाठ है 'बुलबुल'। इस पाठ के 'बुलबुल और तुम' शीर्षक के अंतर्गत दी गई तीसरी गतिविधि देखें–

- बुलबुल ऊँची आवाज़ में बोलती है। तुममे से कौन-कौन ऊँची आवाज़ में बोलता है? कब-कब? स्वयं की आदतों को पहचानने के संदर्भ में यह गतिविधि बहुत ही महत्वपूर्ण है। पर मूक बधिर बच्चे के संदर्भ में इसमें आपको थोड़ा-सा बदलाव लाना होगा। आप संभवतया: इसे यह रूप देना चाहें–

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- किन मौको पर आपको लगता है कि अपनी बात ज़ोरदार तरीके से पेश की जाए।

इसके लिए आप क्या-क्या जुगत लगाते हैं? *रिमझिम–3* की कहानी 'शेखबाज़ मक्खी' की 'किसने क्या कहा' गतिविधि दृष्टिबाधित बच्चे की मौजूदगी होने पर अनुकूलन की माँग करती है। इसमें दो चित्र दिए गए हैं जिनके आधार पर बताना है कि कौन-सा पात्र किससे क्या कह रहा है। इस तरह का उत्तर देने के लिए पात्र की भाव-भंगिमाएँ समझनी ज़रूरी होगी। यदि उभरे प्रभाव का भी चित्र दिया जाए (इंबौस्ड इफैक्ट) तो भी पात्र का भाव समझना मुश्किल होगा। ऐसे में या तो सहपाठी द्वारा चित्र के बारे में बताया जाए या फिर यह गतिविधि हटाई भी जा सकती है। इसी कहानी की एक और गतिविधि 'उड़ते-मँडराते' में दृष्टि बाधित बच्चों के लिए कुछ फेर-बदल की ज़रूरत होगी हो सकता है कि आप उनसे कहे कि ... स्थानों पर आपने किस तरह की आवाज़ें/किन-किन की आवाज़ें सुनी हैं?

रिमझिम–3 की ही एक कविता है 'मन करता है।' हर बच्चे की चाहत को मज़ेदार शब्दों में प्रस्तुत करती है ये कविता। इस कविता की गतिविधि 'शोर' में आपको कुछ बदलाव की गुँजाइश नज़र आएगी यदि आपकी कक्षा में 'श्रवण क्षमता बाधित' विद्यार्थी है। इसी प्रकार 'बहादुर बित्तो' की गतिविधि 'पहचानो' की दृष्टि बाधित बच्चे के संदर्भ में तब प्रासंगिकता होगी यदि औज़ारों के मॉडल उनको पहचान करने के लिए दिए जाएँ। यहाँ पर यदि आप उभरे हुए चित्रों से काम चलाने की सोच रहे हैं तो विशेष परिणाम मिलने की संभावना कम ही हैं।

रिमझिम–4 की पहली कविता है–'मन के भोले-भाले बादल'। इसकी गतिविधि 'बारिश की आवाज़ें' में आपको कुछ परिवर्तन की गुँजाइश नज़र आएगी। गतिविधि है–'पानी के बरसने की आवाज़ें है झर-झर-झर!' पानी बरसने की कुछ और आवाज़ें लिखो।

श्रवण बाधित विद्यार्थियों ने तरह-तरह की ध्वनियां जैसे–टप-टप, ठक-ठक, ट्रिन-ट्रिन, छुक-छुक आदि के बारे में पढ़ा ज़रूर होगा पर उनके निज के अनुभवों में यह बात शामिल नहीं होगी कि पानी बरसता है तो झर-झर होता है या कुछ और प्रकार से आवाज़ निकलती है। इस गतिविधि को उन्हीं की क्षमता के अनुसार बदलकर करवाया जा सकता है।

इसी कविता की अगली गतिविधि 'कैसे-कैसे पेड़' में पेड़ों को देखकर उनके आकार-प्रकार के बारे में लिखने को कहा गया है। यहाँ पर दृष्टि बाधित के संदर्भ में पेड़/तने/शाखा को छूकर उनके आकार प्रकार को महसूस करने के लिए कहा जा सकता है। अपने इन अनुभवों के आधार पर वे आकार-प्रकार के बारे में लिखेगें। इसी शृंखला में एक कहानी है–'मुफ्त ही मुफ्त'। इस कहानी की गतिविधि 'मंडी' के दूसरे भाग पर ग़ौर करिए–मंडी में तरह-तरह की आवाज़ें सुनाई देती हैं। जैसे–ताज़ा टमाटर। बीस रुपया! बीस रुपया! बीस रुपया मंडी में और कैसी आवाज़ें सुनाई देती हैं? यहाँ भी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्रवण बाधित विद्यार्थी स्वयं के अनुभवों के आधार पर तरह-तरह की आवाज़ों के बारे में नहीं बता पाएगी पर कहानी-किस्सों और पाठ्यपुस्तकों के ज़रिए एक समझ ज़रूर बन गई होगी कि कहाँ, कैसी-कैसी आवाज़ें आती हैं जैसे—स्कूल में मध्यअवकाश के दौरान आने वाला शोर, रेलवे स्टेशन पर आने वाली आवाज़ें, सब्ज़ी बाज़ार में आने वाली आवाज़ें आदि। अब या तो उन्हें दूसरों के अनुभवों से जानी गई आवाज़ों के बारे में लिखने को कहा जाए या फिर उन्हें इस तरह के स्थानों में लोगों के हाव-भाव/क्रियाओं के बारे में लिखने के लिए कहा जाए क्योंकि देखने का काम वे बखूबी कर सकते हैं, जैसे—मंडी में तरह-तरह के लोग मौजूद होते हैं, वे किस तरह के काम कर रहे होते हैं, लिखो। *रिमझिम*–5 की कविता 'खिलौने वाला' में भी कुछ इसी तरह की गतिविधि है— तुमने फेरीवालों को आवाज़ें लगाते सुना होगा। तुम्हारे गली-मोहल्ले में ऐसे कौन से फेरीवाले आते हैं और वे किस ढंग से आवाज़ लगाते हैं? उनका अभिनय करके दिखाओ। वे क्या बोलते हैं, उसका भी एक संग्रह तैयार करो। निश्चित रूप से इस गतिविधि के रेखांकित भाग में ही कुछ परिवर्तन करना चाहेंगे।

रिमझिम–5 की ही एक कविता के बाद अभ्यास है—वे तरह-तरह के भाव लिए होती है नीचे ऐसी कुछ आँखों का वर्णन है। इनमें से कौन-सी नज़रें तुम पहचानते हो—

- सहमी नज़रें
- प्यार भरी नज़रें
- क्रोध भरी आँखें
- शरारती आँखें
- उनींदी आँखें
- डरावनी आँखें

दृष्टि बाधित बच्चों के संदर्भ में हम आवाज़ों की विविधता/हाव-भाव (आवाज़ में छुपा) की बात कर सकते है—कड़क आवाज़, मधुर आवाज़, गला खराब होने पर आवाज़, मनुहार भरी आवाज़ रोबीली आवाज़ आदि।

कहने का तात्पर्य यह है कि कक्षा में मौजूद बच्चों की सक्षमता/अक्षमता के आधार पर गतिविधि/अभ्यास कार्य/प्रदत्त कार्यों में बदलाव लाकर ही समावेशी कक्षा के साथ न्याय किया जा सकता है।

यहाँ पर हमने समावेशी कक्षा के संदर्भ में जितनी भी गतिविधियों में अनुकूलन/संशोधन की बात की, वे सभी विशेष आवश्यकता वाले बच्चों और उनमें भी विशेषकर श्रवण बाधित और दृष्टिबाधित बच्चों के संदर्भ में की है, जबकि समावेशी के निहितार्थ ऐसी विद्यालयी पाठ्यचर्या से हैं जो सभी विद्यार्थियों के वैयक्तिक अंतरों को ध्यान में रखती हो और इतनी लचीली हो कि विद्यार्थी अपने लक्ष्यों को पाने में समर्थ हो सकें। यहाँ 'सभी विद्यार्थियों' से तात्पर्य केवल शारीरिक एवं मानसिक रूप से चुनौतीपूर्ण बालक ही नहीं है, अपितु उनमें शामिल हैं—अल्पसंख्यक; सुविधा वंचित समूह के बच्चे, भौगोलिक भिन्नताओं में रहने वाले बच्चे, सामाजिक व्यवस्थाओं के चलते हाशिए पर धकेले गए बच्चे। इन सबकी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपनी-अपनी विशेष आवश्यकताएँ होती हैं और पाठ्यसामग्री में इन विविधताओं का संबोधन आवश्यक है। इस दृष्टि से समूची रिमझिम श्रृँखला 'समावेशन' की नीतियों का पालन करती है। इसमें ली गई रचनाओं को अहमियत न देते हुए भारत की हर भौगोलिक, सांस्कृतिक सामाजिक विविधता को अपने ताने-बाने में पिरोया हैं इस तरह से देश की भाषिक विविधता को बड़ी सहजता से हर पाठ में उभारा गया है। बच्चे का परिवेश उसकी भाषा को गढ़ता है। इसलिए बच्चे के उच्चारण और शब्दावली पर परिवेश का प्रभाव होना स्वाभाविक है। यह बहुत ज़रूरी है कि हम बच्चे के घर की भाषा और संस्कृति को सहज रूप से स्वीकार करें ताकि बच्चे में सीखने का आत्मविश्वास और उत्साह पैदा हो सके। *रिमझिम* श्रृँखला ने इस सिद्धांत का मजबूती के साथ पालन किया है। बच्चे जब कक्षा में अपने घर में बोली जाने वाली बोली में बात करते हैं या शिक्षक द्वारा पूछे गए सवाल का जवाब अपनी बोली में देते हैं तो शिक्षक उन्हें तुरंत टोक देते हैं। परिणाम यह होता है कि बच्चे सहज अभिव्यक्ति का आत्मविश्वास खो देते हैं। *रिमझिम* श्रृँखला इस तरह के कक्षायी वातावरण से बचने के प्रति सचेत करती है और बहुभाषिकता को संसाधन के रूप में इस्तेमाल करने पर बल देती है। संक्षेप में यही कह सकते हैं कि असमानता, क्षमता या पृष्ठभूमि के अंतर के संदर्भ में बच्चों के प्रति पूरा न्याय करती है। यह श्रृँखला अध्यापकों को इस बात के पूरे-पूरे अवसर देती है कि वे आवश्यकतानुसार 'पाठ्यचर्या अनुकूलन' कर सके जिससे चुनौतीपूर्ण बच्चों की जरूरतें भी पूरी हो सकें।

❑❑❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4

बच्चों को भाषा सिखाने के लिए कविता एक अच्छा माध्यम है। अपनी लय और तुकबंदी के कारण कविता सहज ही बच्चों को आकर्षित कर लेती है। लेकिन बच्चों को कविता तभी आंनदित कर सकती है, जब शिक्षक सही ढंग से भाषा की कक्षा में कविता का उपयोग करे। कविता शिक्षक से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी के लिए पढ़िए लेख–कविता की पढ़ाई।

कविता की पढ़ाई*

भाषा की जादुई दुनिया में प्रवेश करते ही बच्चों का तरह-तरह के शब्दों से खेलना शुरू हो जाता है। दुनिया का कौन-सा ऐसा बच्चा होगा जिसने अपने बचपन में शब्दों को उलट-पुलट कर मज़ा नहीं लिया होगा या फिर तरह-तरह की तुकबंदियाँ नहीं की होगी। बच्चों का कविता से संपर्क यहीं से शुरू हो जाता है। माँ की लोरियाँ, उनके खुद के खेलगीत, एक-दूसरे से सुने गीतों में खुद से कुछ जोड़ देना, यानी कि कविता की दुनिया किसी भी बच्चे के लिए नई नहीं है।

चंदा मामा दूर के
पुए पकावे दूर के
आप खाएँ प्याली में
मुनिया को दे थाली में

या फिर

टेसू राजा बीच बाज़ार
खड़े हुए ले रहे अनार
इस अनार में दाने कितने
जितने हो केवल में खाने

या फिर

इक छोटी किश्ती मेरे पास
पानी में तैराई–

या फिर

हरा समंदर गोपी चंदर
बोली मेरी महली कितना पानी

* राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा विकसित, शिक्षक संदर्शिका, *कैसे पढ़ाएँ रिमझिम–भाग 2* से लिया गया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भारत की उत्तर दिशा हो या दक्षिण, पूरब हो या पश्चिम, कहीं भी चले जाइए, कविताओं की दुनिया किसी भी बच्चे के लिए अपरिचित नहीं होगी। फिर क्या कारण है कि बहुत ही प्यारी और अपनी-सी लगने वाली कविताएँ स्कूली ज़िंदगी में आते ही बोझ-सी लगने लगती हैं? कविता के खेत, खलिहान, बाग-बगीचे, चिड़िया, हाथी, चूहा, शेर, तितली, चाँद, सितारे सब कुछ बहुत ही अंजाने और अपरिचित से लगने लगते है। सच कहा जाए तो किसी एक समय में मज़े के सागर में डुबकियाँ दिलाने वाली कविता स्कूल में भाषा की घंटी में गले की फाँस बन जाती है। कभी इस तरफ़ ध्यान देने की कोशिश की है क्या? जिस किसी ने भी इस सवाल का उत्तर खोजने कीं कोशिश की होगी उसे यही उत्तर सूझा होगा कि कहीं-न-कहीं कविता पढ़ाने के तरीकों में ही कोई चूक हो रही होगी। जो भी ऐसा सोच रहे हैं वे निश्चित रूप से बात की तह तक पहुँच गए है। भाषा का अध्यापक होने के नाते हमें समझना होगा कि छोटी कक्षाओं में कविताओं को कैसे पढ़ाया जाए जिससे कविता के साथ उनका पुराना मज़ेदार रिश्ता कभी टूटे नहीं बल्कि उसमें और भी प्रगाढ़ता आए और वे कविता पढ़ने के साथ-साथ खुद भी कविता लिखने लगें।

दरअसल कविता के साथ कक्षाओं में हो क्या रहा है कि उसके शब्दों के लुभावनेपन, उसकी लय और ध्वनि को एक किनारे कर कविता को समझाने पर ज़ोर दिया जाता है। दुख की बात तो यह कि उसी भाव तथा अर्थ को याद करने पर बल दिया जाता है जो अध्यापक ने समझा होता है। इस दुखद सत्य को कहने में भी कोई संकोच नहीं कि कुँजियों में दिए गए अर्थ को रटने पर बल दिया जाता है। मज़े ले लेकर कविता को पढ़ना, उसे याद करना, उस पर अभिनय करना, उसमें अपनी तरफ़ से कुछ जोड़ देना यह सब स्वाभाविक-सी बातें कविता शिक्षण से कोसों दूर चली गई हैं।

कविता पढ़ाई कैसे जाए? यह समझ बनाने से पहले कविता के स्वभाव को जानना ज़रूरी है।

कविता भाषा की सबसे कलात्मक अभिव्यक्ति है। सामान्य से कथन में शब्दों के हेर-फेर से विशेष अर्थ भर देना कविता का रूप धर लेता है। कविता साहित्य की सबसे पुरानी विधा है और बच्चे की भाषिक क्षमता बढ़ाने के लिए कविताओं से उसकी दोस्ती बनी रहे, यह बहुत ज़रूरी है। कविता के मूल में संवेदना है, राग तत्व है। यह संवेदना संपूर्ण सृष्टि से जुड़ने और उसे अपना बना लेने का बोध है। कविता का जन्म हुआ तो वाचिक परंपरा के रूप में था पर अब ये लिखित रूप से हमारे पास मौजूद हैं। सीधे से शब्दों में कहें तो कविता शब्दों का खेल है। शब्दों से खेलना, उनसे मेल-जोल बढ़ाना, शब्दों के भीतर सदियों से छिपे अर्थ की परतों को भिन्न-भिन्न रूपों में प्रस्तुत करना यह सब कविता की दुनिया में प्रवेश कराता है। शब्दों के खेल से शुरू हुई उनकी ही एक रोचक व्यवस्था कब कविता बन पाती है पता ही नहीं चलता और फिर कभी सावन के झूले की तरह आसमान की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऊँचाईयों तक ले जाती है तो कभी सागर की दुनिया की सैर कराती है तो कभी झकझोर भी डालती है। यह तो हुआ कविता है क्या? अब बात करेंगे कि कविता को कक्षा में बच्चों के सामने प्रस्तुत कैसे करें ताकि वे उसका उतना ही मज़ा लें जितना कि पहले भी लेते रहे हैं। कविता को पढ़ाए जाने के तरीकों के संदर्भ में मेरा जो अनुभव रहा है वह बहुत ही हतोत्साहित-सा करने वाला है। आमतौर पर शिक्षक कविता की शुरूआत आदर्श वाचन से करते हैं और बच्चों से अपेक्षा करते हैं कि वे भी उसी तरह से पढ़कर सुनाएँ। यहीं से आरंभ हो जाती है कविता के प्रति अरुचि की यात्रा। कविता को अपने आप से पढ़े बगैर उसे बोल-बोल कर पढ़कर सुनाना कोई नेक ख़्याल तो नही लगता। इसके बाद शिक्षक श्यामपट्ट पर कविता में आए कुछ अपरिचित से शब्दों का अर्थ लिखते हैं या फिर मौखिक रूप से बताते है। अब वे एक-एक पंक्ति का अर्थ समझाते हैं और फिर अपेक्षा करते हैं कि कक्षा में दो-चार बच्चे उस अर्थ को दोहराएँ। फिर कविता से संबंधित प्रश्न पूछे जाते हैं और उम्मीद की जाती है कि बच्चे वही उत्तर दें जो उत्तर अध्यापक के मानस में पैठ चुका है। बच्चे ने अपने अनुभवों के आधार पर जिस अर्थ को गढ़ने का प्रयास किया है, कक्षा में उसे स्वीकृति नहीं मिलती। स्वाभाविक है कि अपनी-सी लगने वाली कविता परायी-सी लगने लगती है। कविता के प्रति पैदा हुई बेरूखी बढ़ती ही जाती है। कविता पढ़ाने के तरीकों को कुछ अलग तरीके से भी देखा जा सकता है।

- बच्चों को स्वयं से कविता पढ़ने दें। एक बार तो अवश्य कुछ बच्चे मन-ही-मन पढ़कर खुश होगें, कुछ बोल-बोल कर पढ़ना चाहेगें। कविता के प्रति समझ बनाने के ये उनके अपने तरीके हैं। पढ़ते-पढ़ने बच्चे उसमें स्वतः ही लय खोज लेंगे। एक ही बार में पढ़कर भाव और अर्थ समझने का भ्रम पालने से बचें।
- अब कविता के स स्वर वाचन की बारी है। बच्चों के सामने अपनी ओर से वाचन प्रस्तुत करें। उच्चारण, लय, ध्वनि का ध्यान रखें पर कदापि यह अपेक्षा न करें कि सभी बच्चे आपके तरीको को ही अपनाएँ। कम से कम पहली बार तो कदापि नहीं।
- रचनाकार के बारे में थोड़ी-सी बात करें। यह बात सही है कि छोटी कक्षाओं में रचनाकार के बारे में नहीं पूछा जाता पर यह इसलिए ज़रूरी है कि बच्चे रचनाकार का परिचय प्राप्त करें। उन्होंने किस-किस तरह की कविताएँ लिखी हैं, इसकी जानकारी हासिल करें।
- आमतौर पर वह रचनाकार किस तरह की रचनाएँ लिखने के बारे में जाना जाता/जाती है, यह भी बताएँ।
- प्रस्तुत रचना का संदर्भ बताएँ।
- अब आती है अर्थ बताने की बारी यहाँ पर यह बात गौरतलब है कि किसी भी कविता का कोई एक अर्थ नहीं होता, वह हमारे अनुभवों से जुड़कर नए-नए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अर्थ हमें देती है। अर्थ समझने के लिए ज़रूरी है कि बच्चों को कविता के बिंब पर ध्यान देने के लिए कहें। कविता पढ़कर जो बिंब मस्तिष्क में उभर रहे हैं वे अर्थ खोजने में बहुत मदद करेगें। पहली बार में जिस तरफ़ ध्यान जाए उस अर्थ को भी स्वीकार कर सकते हैं। ध्यान रखें कि कविता को खंडों में रखकर न तो समझें और न ही समझाएँ। उसे समग्र रूप में समझने-समझाने की ज़रूरत है।

- कविता में पिरोए गए दृश्यों, वस्तु या वस्तुओं, घटनाओं और भावनाओं एवं विचारों को इस प्रकार उभारा जाए कि पढ़ने वालों पर उसका प्रभाव पड़े। उसमें व्यक्त की गई भावनाओं और संवेदनाओं को छुएँ।
- कहने का तात्पर्य यह है कि कविता में प्रतिबिंबित चीजों, दृश्यों और घटनाओं से गहरे तक जुड़ना होगा। उस जुड़ाव की मन पर जो प्रतिक्रिया होगी, वही कविता का अर्थ हो सकता है। कविता में उभर रहे बिंबों से जुड़ने की प्रक्रिया पढ़ने या सुनने वाले को अपने से जोड़ती है।
- कविता का अर्थ समझने के लिए उसकी इतनी परतें भी न खोली जाएँ कि कविता अमूर्त हो जाए। कविता का अर्थ खोलने का मतलब है उसे और सुंदर बनाना न कि उसकी रचनात्मकता को नष्ट कर देना। कहने का आशय यह है कि कविता को एक पाठक के रूप में देखे, दार्शनिक, विश्लेषक या चिंतक के रूप में नहीं।
- एक और महत्वपूर्ण बात ध्यान में रखनी ज़रूरी है वह यह कि पहले की कविता और आधुनिक कविता दोनों को पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने का तरीका भिन्न-भिन्न हैं। पहले की कविताओं में गेयता का गुण प्रधान होता था जो आधुनिक कविता में नहीं पाया जाता है। यद्यपि आधुनिक कविता में भी लय है, हाँलाकि देखने में लगता है कि वह लय विहीन है।
- बच्चों को कक्षा में कविता पढ़ाने से पहले स्वयं बार-बार पढ़ी जाए और इस बात की समझ बनाई जाए कि आधुनिक कविता में नाद सौंदर्य, भाषा, बिंब, प्रतीकों ने किस तरह अपना रूप बदला है। अपनी समझ अच्छी तरह से बने तो कविता कहने के संदर्भ में इस क्रम को अपनाया जा सकता है–
  - सभी बच्चों द्वारा कविता का मौन पठन, छोटे बच्चे मौन रहकर नहीं पढ़ पाते तो उन्हें छूट है कि बोल-बोल कर कविता कहें-पढ़ें। पर अपने-अपने स्तर अपनी समझ बढ़ाने के लिए।
  - शिक्षक द्वारा कविता का वाचन लय के साथ।
- आजकल तो कविता और कहानी के संदर्भ में एक बहुत बड़ी सुविधा उपलब्ध है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली के केंद्रीय शैक्षिक तकनीकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) द्वारा विद्यालयी पाठ्यपुस्तकों में दी गई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कविताओं, कहानियों, एकांकियों की रिकार्डिंग तैयार की गई है। यदि सुविधा है तो कविता की सी.डी. बच्चों को सुनवाएँ।

- अब आती है संदर्भ की बारी। चूँकि विद्यार्थियों ने भी अपने-अपने स्तर पर कविता समझने का प्रयास किया है, अत: बेहतर तो यही होगा कि पहले उन्हीं से पूछें, अंतत: आप भी संक्षेप में कविता का अर्थ बताएँ।
- संदर्भ के अंतर्गत पूरी व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं है। सार-संक्षेप बताकर प्रसंग की ओर बढ़ें। कविता किस समय का वर्णन करती है, आगे-पीछे के प्रसंगों का जुड़ाव करना न भूलें। यदि उस कविता के संदर्भ में कोई विशेष प्रसंग ढूँढ़ पाए हैं तो अवश्य कहें।
- प्रसंग बताते-बताते कविता की व्याख्या की ओर बढ़ा जा सकता है। ध्यान रहे कि हमें शब्दों की व्याख्या नहीं करनी है। शब्द के भीतर बैठे भाव को श्रोता/पाठक तक पहुँचाना है। व्याख्या कथन की नहीं 'कथ्य' की करनी है। शब्दों का अर्थ या पर्याय रखना कविता की व्याख्या नहीं कहलाएगी।

कविता की व्याख्या के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण बात और भी है वह यह कि हर पाठक व्याख्या करते समय अपने अनुभवों को उससे जोड़ने का प्रयत्न करेगा। ऐसे में आवश्यक नहीं कि कोई एक सटीक-सा अर्थ निकलकर आए। अत: सभी बच्चों को अर्थ निकालने के संदर्भ में एक ही दिशा की ओर सोचने के लिए किसी भी दृष्टि में उचित एवं स्वीकार्य नहीं होगा।

हमारे देश में भाषा की कक्षाओं की सबसे बड़ी समस्या यही है कि अध्याधक 'एक ही से उत्तर' की अपेक्षा करते हैं। कुछ संदर्भों में तो यह बात जायज है जैसे कि "यह छंद है या सवैया" "इसमें उपमा है या रूपक", "इसमें कितनी मात्राएँ हैं" आदि-आदि। पर जहाँ तक भाव समझने की बात है तो हर बच्चे को स्वतंत्रता होनी ज़रूरी है कि वह अपने अनुभव को जोड़कर अपने परिप्रेक्ष्य के आधार पर व्याख्या करने की कोशिश करें।

- बच्चों का ध्यान इन बातों की ओर ले जाएँ जैसे–
  - भाषा कैसी है?
  - कहाँ-कहाँ किस प्रकार से शाब्दिक चमत्कार पैदा किया गया है?
  - प्रतीकात्मकता का इस्तेमाल कैसे किया गया है?
  - यदि कहीं कोष्ठक आदि का उपयोग है तो वह क्यों किया गया है?
- अब कुछ विशेष–अब तक जो बात की गई वह तो होनी ही चाहिए। इसके अतिरिक्त और भी बहुत-सी बातें हैं जिनके बारे में प्रयास किया जा सकता है–

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- यदि कवि जीवित हैं और आपके नगर में ही हैं तो बच्चों से उसकी मुलाकात का आयोजन किया जा सकता है।
- बहुत से कवियों के साक्षात्कार भी समय-समय पर आकाशवाणी, ज्ञान दर्शन द्वारा प्रसारित किए जाते हैं, उनकी सी.डी. भी उपलब्ध हैं, उन्हें सुनवाने के लिए अतिरिक्त मेहनत करनी पड़े तो अवश्य करें।
- कवि से तादाम्य स्थापित करने के लिए कवि के बारे में कुछ रोचक बातें बताएँ। उनसे जुड़े प्रसंगों, रोचक घटनाओं का संग्रह करने के लिए बच्चों को कहें।
- कविता के बारे में कभी कोई लेख आया है, या कभी कोई खबर छपी है या उसे किसी फिल्म में लिया गया है तो इस तरह की जानकारी भी कक्षा में साझा होनी चाहिए।
- जो कविता कक्षा में पढ़ाई जा रही है, उसके विषय से जुड़ी और भी कविताएँ अवश्य होंगी। उन कविताओं की ओर संकेत करें। श्रेयस्कर तो यह होगा कि समूह कार्य द्वारा एक ही कथ्य/विषय पर आधारित कविताओं का संग्रह करवाएँ।

उदाहरण के तौर पर आप कक्षा-4 की रिमझिम में दी गई पहली कविता 'मन के भोले-भाले बादल' पर बात कर रहे हैं। बादलों पर और भी बहुत-सी कविताएँ होंगी और कहानियाँ तो हैं ही, कक्षा में इनका ज़िक्र किया जाना चाहिए और इनका संग्रह भी करवाएँ।

- कविता को कहानी में कैसे कहा या ढाला जाए, इस तरह की कोशिश भी की जाए तो भाषिक क्षमताओं के विकास का फलक और भी बढ़ेगा।
- बच्चों से भी तरह-तरह की तुकबंदियाँ करवाएँ, अपने स्तर पर कविता बनाने को प्रेरित करें।
- पिछली कक्षा में पढ़ी गई उसी प्रकृति की कविता का भी ज़िक्र करें।
- कई कविताएँ ऐसी होती हैं जिनका मूल आशय पाठ में आए शब्दों से परे कहीं गहरे में छिपा होता है, यहाँ सामूहिक होगी।
- आस-पास घट रही घटनाएँ या मौसम यदि कविता में अपनी झलक दिखला रहे हैं तो उस ओर संकेत ज़रूर जाना चाहिए।

❑❑❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाषा का अस्तित्व शून्य में नहीं होता है। भाषा स्वयं में अनेक विषयों को समाहित किए रहती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 पहली और दूसरी कक्षा में भाषा की कक्षा में ही पर्यावरण अध्ययन संबंधित ज्ञान देने की संस्तुति करती है। भाषा की कक्षा में पर्यावरण से संबंधित जानकारी कैसे दी जाए, जानने के लिए पढ़िए यह लेख।

भाषा और परिवेश*

भाषा का परिवेश या उसके शिक्षण से क्या संबंध है?

भाषा और परिवेश को एक-दूसरे से अलग करना उतना ही कठिन है, जितना दूध को पानी से अलग करना। भाषा किसी भी परिवेश से उतनी ही प्रभावित होती है, जितना धूप से सूरजमुखी का पौधा। जिस प्रकार भाषा का सौंदर्य, संरचना तथा शब्दभंडार किसी भी परिवेश की विशिष्ट छाप लिए हुए होता है, उसी प्रकार परिवेश भी भाषा से प्रभावित होता है। भाषा किसी भी परिवेश और संस्कृति का अभिन्न अंग होने के साथ ही परिवेश के शिक्षण या अध्ययन का संपर्क सूत्र भी होती है। भाषा ही किसी विषय के बारे में जानने का माध्यम बनती है। इस प्रकार दोनों एक-दूसरे के बिना अधूरे हैं।

भाषा पढ़ाने के दौरान परिवेश की समझ पर ध्यान देने की ज़रूरत ही क्या है?

किसी भी विषय को जब जीवन से काटकर देखे जाने की कोशिश की जाए, तो उसमें कृत्रिमता और बोझिलता आ जाती है। यही बात भाषा पर लागू होती है। जब हम भाषा को बच्चों के और अपने जीवन से जोड़ देते हैं, तो वह जीवंत हो जाती है। जीवन से जोड़े बिना भाषा को सीखने-सिखाने की कल्पना भी नहीं की जा सकती है और जब हम किसी भी कविता, कहानी या लेख को जीवन से जोड़ देते हैं, तब भाषा में परिवेश का समावेश अपने-आप हो जाता है। इसके लिए किसी अतिरिक्त प्रयास की ज़रूरत नहीं पड़ती। हाँ, यदि आप भाषा और परिवेश को अलग-अलग

* राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा विकसित, शिक्षक संदर्शिका, *कैसे पढ़ाएँ रिमझिम–भाग 2* से लिया गया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करना चाहें, तब आपको अतिरिक्त प्रयास करने होंगे। अतिरिक्त प्रयास करने पर भी आप इन दोनों को शायद ही अलग कर पाएँ।

प्रकृति का खज़ाना अलग-अलग तिज़ोरियों में बंद नहीं किया जा सकता है। धूप और हवा को अलग-अलग डिब्बों में बंद नहीं किया जा सकता। इसी प्रकार ज्ञान को भी अलग-अलग विषयों की कृत्रिम दीवारों से बाँटा नहीं जा सकता है। हालाँकि वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था की सहूलियत के लिए हमारे स्कूलों में ज्ञान को विभिन्न विषयों की चारदीवारी में बाँट दिया गया है, परंतु इसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं है कि इन दीवारों के बीच झरोखे नहीं बनाए जा सकते। शिक्षा जगत् के सभी अनुसंधान इस बात का समर्थन करते हैं कि असली समझ का निर्माण भी तब होता है, जब विभिन्न विषयों को आपस में जोड़ कर पढ़ाया जाता है। जिज्ञासु व्यक्ति, जिसे हम विद्यार्थी कहते है, किसी भी समस्या के हर पहलू पर विचार करने के योग्य बन जाता है। वह किसी वस्तु, व्यक्ति या तथ्य पर निष्पक्ष तरीके से अपने विचार या राय बनाने में सक्षम हो जाता है या हम यह कह सकते हैं कि ज्ञान की संपूर्णता व्यक्ति को इस काबिल बनाती है कि वह स्वयं अपनी खोज कर सके।

यदि हम एक शिक्षक के नज़रिये से इस प्रश्न पर विचार करें, तो पाएँगे कि हिंदी या कोई भी भाषा पढ़ाते हुए परिवेश के हर पहलू को ज़बरदस्ती काटने का प्रयास न करें, तब अन्य विषयों को अब अतिरिक्त समय देने की ज़रूरत कम पड़ रही है।

क्या किसी भी कहानी या कविता को परिवेश की समझ से जोड़ा जा सकता है?

हाँ, इस बात को एक उदाहरण से समझते हैं। पानी के बारे में कोई कविता गाते हुए यदि पानी के उपयोगों, पानी की सफ़ाई या प्रदूषण के पहलुओं को हौले से छू लिया जाए तो इसमें हर्ज़ क्या है? लगे हाथ इस बात पर भी चर्चा हो सकती है कि किस-किस को नहाने का मन नहीं करता? किस मौसम में नहाना बहुत अच्छा लगता है? किस मौसम में नहाना अच्छा नहीं लगता? ऐसा क्यों होता है? पानी घरों में कहाँ-कहाँ से आता है? बादलों में पानी कहाँ से आता है? बादल ही बारिश क्यों करते हैं, हवा से बारिश क्यों नहीं होती? बारिश होने पर अलग-अलग प्राणी कौन-कौन सी प्रतिक्रिया करते हैं?

देखा आपने! एक छोटी-सी कविता किस तरह दुनिया को देखने के काम आनेवाली खिड़की बन गई। यह खिड़की आपको हिंदी की पाठ्यपुस्तक की प्रत्येक रचना उपलब्ध करवाती है। यह आप पर निर्भर करता है कि आप इस खिड़की को बंद रखते हैं या खोलते हैं।

कौन-सी कक्षा से भाषा और परिवेश की समझ को जोड़ा जा सकता है?

भाषा और परिवेश प्रत्येक कक्षा में साथ-साथ चलते हैं। खासतौर पर पहली और दूसरी कक्षा में तो इस संबंध पर विशेष रूप से ध्यान दिए जाने की ज़रूरत है, क्योंकि इस स्तर पर परिवेश की समझ को औपचारिक रूप से अलग विषय के रूप में नहीं पढ़ाया जाता है और न ही कोई पुस्तक निर्धारित की जाती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक हिंदी का शिक्षक किसी अन्य विषय को कैसे पढ़ा सकता है?

इस प्रश्न के अनेक हिस्सों पर विचार किए जाने की ज़रूरत है। जिस प्रकार ज्ञान का कृत्रिम विभाजन नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार शिक्षण को कृत्रिम वर्गों में बाँटना कहाँ तक उचित है, विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर? प्रत्येक शिक्षक और बच्चा परिवेश के ही अंग होते हैं। अपने परिवेश के बारे में उनसे बेहतर समझ और किसकी हो सकती है?

अब हम बात करते हैं, 'किसी अन्य विषय' की, यह बात पहले ही स्पष्ट की जा चुकी है कि परिवेश की समझ कोई अन्य विषय नहीं है, बल्कि सायाम चेतना का ही एक हिस्सा है। अत: परिवेश अध्ययन को अलग करके देखना उचित नहीं है।

अब इस प्रश्न के अंतिम भाग पर विचार कीजिए--**"पढ़ा सकता है।"**

इसका उत्तर है, नहीं! आप नहीं पढ़ा सकते।

केवल परिवेश ही नहीं, बल्कि किसी भी विषय को पढ़ाया नहीं जा सकता। शिक्षा का उद्देश्य पढ़ाई नहीं, बल्कि 'समझ' है। समझ पढ़ाई से कहीं विशाल तथा गहरा उद्देश्य है। शिक्षकों के सभी प्रयास तथा विद्यालय की सभी व्यवस्थाएँ इस बात पर केंद्रित होनी चाहिए कि वे बच्चों की समझ का विकास करें। 'पढ़ाई-लिखाई' समझ का एक छोटा-सा हिस्सा भर है, परंतु वर्तमान व्यवस्था में इसी छोटे-से हिस्से पर अभिभावक, शिक्षा अधिकारी तथा बच्चे अपनी संपूर्ण ऊर्जा खर्च कर देते हैं। यदि हम केवल पढ़ने की बात ही करें, तो इस बात का एक पहलू यह भी है कि जब तक बच्चा स्वयं 'पढ़ना' न चाहे, शिक्षक, अभिभावक तथा प्रशासन केवल वे स्थितियाँ उत्पन्न कर सकते हैं, जिनमें बच्चा स्वयं 'पढ़ने' के प्रति उत्सुक हो जाए, परंतु बच्चे को मजबूर नहीं कर सकते। अत: 'पढ़ाने' के भ्रम को जितनी जल्दी मस्तिष्क से निकाल दिया जाए, उतना बेहतर होगा।

शिक्षक 'पढ़ाएँ' नहीं तो क्या करें?

इसके लिए हमें भारतीय परंपरा में 'शिक्षा' या शिक्षण के अर्थों की ओर लौटना होगा। शिक्षक यदि वास्तविक 'शिक्षण' का प्रयास करें, तो सभी समस्याएँ समाप्त हो सकती हैं।

बच्चों को अपने स्वयं के विचार सबके सामने रखने का आत्मविश्वास दें। बच्चों को समस्याओं को पहचानने और उनका मौलिक समाधान ढूँढ़ने के भरपूर अवसर दें। उनके मन में यह बात स्थापित करें कि किसी भी प्रश्न या समस्या का उत्तर किसी अगम्य गुफ़ा में नहीं छिपा है, बल्कि वे स्वयं सोच-विचारकर तथा प्रयास करके उन समाधानों की खोज कर सकते हैं। वे सवालों और जवाबों की तलाश के लिए किसी अन्य व्यक्ति (भले ही वह अन्य व्यक्ति अध्यापक हो या अभिभावक) पर निर्भर न हों, बल्कि अपनी सूझबूझ का इस्तेमाल करें। उनमें यह योग्यता भी विकसित करें कि वे अपने मत या विचार के समर्थन में उदाहरण देकर अपने विचारों को सही सिद्ध कर सकें। साथ ही दूसरों के विचारों को उदारतापूर्वक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्वीकार कर सकने की क्षमता भी स्वयं अपने में और बच्चों में विकसित करें। जब बच्चों के मन में स्वयं नई बातें जानने और समझने की जिज्ञासा जागने लगे, तो समझ लें कि आपका कार्य सफल हो गया।

भाषा और परिवेश की समझ के मेल के लिए हम शिक्षक क्या-क्या काम कर सकते हैं?

सबसे पहले अपनी असली भूमिका को पहचानें, जिसकी चर्चा ऊपर की गई है। समस्याओं और उनके समाधानों की खोज करने के दौरान कक्षा के अधिकारी की भूमिका को पीछे रखकर बच्चों के समान जिज्ञासु और जानने को तत्पर 'शिक्षार्थी' बनकर देखें।

सबसे महत्वपूर्ण है, बातचीत! बच्चों से खुलकर बातचीत करें। इससे बच्चों को और आपको एक-दूसरे को जानने समझने का अवसर मिलेगा। यदि किसी कविता या कहानी को पढ़कर बच्चों को कोई घटना या संस्मरण याद आ गया है और वह उसे सुनाना चाहता है, तो उसे हतोत्साहित न करें। बच्चों की बातचीत सुनना, 'समय गँवाना नहीं, बल्कि समय का सदुपयोग है। अपनी बात कहने की उत्सुकता तो सभी मानवों का नैसर्गिक गुण है, परंतु दूसरों की बात सुनने का धैर्य संभवत: विकसित करना पड़ता है। स्वयं में भी धैर्य विकसित करें और बच्चों को भी इसे अपने में विकसित करने के लिए प्रेरित करें। बातचीत का अर्थ ही कहना और सुनना है। यदि कहने और सुनने में से एक भी तत्त्व नदारद है, तो उसे बातचीत नहीं, बल्कि भाषण कहना ही उचित होगा।

बातचीत से भाषा और परिवेश की समझ कैसे विकसित होगी?

बातचीत से आप और बच्चे किसी भी समस्या के सभी पहलुओं से अवगत हो सकेंगे। हममें अपनी बात कहने और दूसरों की बात सुनने की क्षमता, आत्मविश्वास, शब्द भंडार तथा धैर्य विकसित होगा। आपसी संबंध मज़बूत होंगे। मिलकर सोचने, समझने और कार्य करने के अवसर मिलेंगे। हम अपने ही नहीं, दूसरों के अनुभवों से भी सीखते हैं। दूसरों के अनुभवों को सुनकर यह भावना भी जन्म लेती है कि हम सभी के सुख-दुःख, इच्छाएँ एवं समस्याएँ एक-सी हैं। मैं जैसा सोचती हूँ, उसमें कोई बुराई नहीं है, क्योंकि वैसा ही सोचनेवाले बहुत-से लोग हैं। इस प्रकार की भावना भी आत्मविश्वास बढ़ाने में मदद करती है।

यदि लेखन और पठन का आश्रय बातचीत को बना लिया जाए, तो दोनों कार्य आसान हो जाते हैं। किसी रचना को लिखने या पढ़ने से पहले उस पर बातचीत करने से बच्चों को उसे गहराई से समझने में मदद मिलती है। बातचीत में जहाँ कहीं ज़रूरत हो, आप सम्मिलित होकर उसे नये आयाम या दिशा दे सकते हैं। यदि बातचीत के दौरान आपको कुछ अनुचित लगता है, तो आप उसका विरोध भी कर सकते हैं, परंतु यह विरोध बातचीत के एक सक्रिय भागीदार के रूप में होना चाहिए, न कि, "मेरी बात सही है, क्योंकि मैं अध्यापक हूँ!" वाले अंदाज़ में।

❑❑❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परिषद् के प्रारंभिक शिक्षा विभाग द्वारा प्राथमिक स्तर पर विभिन्न विषयों का आकलन और आकलन से जुड़े विभिन्न मुद्दों की समझ शिक्षकों में विकसित करने हेतु प्राथमिक स्तर पर आकलन की स्रोत पुस्तिकाओं का विकास किया गया है। प्रस्तुत आलेख प्राथमिक स्तर पर आकलन स्रोत पुस्तिका–भाषा (हिंदी) से लिया गया है।

प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के भाषा सीखने का आकलन*

प्राथमिक कक्षाओं में आकलन, सीखने की प्रक्रिया का एक हिस्सा होता है जो हमें यह समझने में मदद करता है कि शिक्षण किस प्रकार का हो। अतः आकलन रोज़ की गतिविधियों के साथ स्वाभाविक रूप से किया जाना चाहिए। हम सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को एक जीवंत प्रक्रिया तभी बना सकते हैं जब हम बच्चों को सीखने के ढेर सारे अवसर दें और बच्चे अपने स्तर के अनुरूप सीख रहे हैं या नहीं–इस बात का सतत् आकलन करते चलें। आकलन के साथ-साथ अब हम उन कठिनाईयों के बारे में पता करेंगे जो बच्चों के सीखने में बाधक बन रही हैं, तभी हम सीखने की प्रक्रिया को सुधारने का प्रयास कर सकेंगे।

बच्चों का आकलन मात्र बच्चों का आकलन नहीं होता। जब शिक्षक कक्षा में आकलन करते हैं तो एक तरह से वे अपना स्वयं का आकलन कर रहे होते हैं। यदि कक्षा के ज़्यादातर बच्चे सीख रहे हैं तो निश्चित ही शिक्षक बधाई के पात्र हैं। यदि नहीं सीख पा रहे हैं तो शिक्षक को सोचना चाहिए कि बच्चों को सिखाने के तरीकों को और प्रभावी किस तरह बनाएँ।

आकलन बच्चों और शिक्षकों के बारे में ही कुछ नहीं कहता बल्कि पूरी शिक्षण प्रणाली के बारे में हमें बहुत कुछ बताता है। यदि कई शिक्षक यह पाते हैं कि भरसक प्रयास के बावजूद भी बच्चे कोई कौशल प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं तो पाठ्य-वस्तु के शिक्षण, प्रशिक्षण और पाठ्यक्रम के विषय में सोचना आवश्यक होगा। इस तरह आकलन गुणात्मक सुधार की प्रकिया का एक अभिन्न अंग है। आकलन के आधार पर ही हम यह जान सकते हैं कि हम कहाँ तक पहुँचे हैं और अभी कितनी दूर आगे जाना है।

* राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित *आकलन स्रोत पुस्तिका–भाषा (हिंदी)* (प्राथमिक स्तर की कक्षाओं के लिए) से लिया गया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आकलन–सीखने का एक साधन

हमारा उद्देश्य है–सभी बच्चों को सीखने के लिए प्रेरित करना और प्रत्येक बच्चे की क्षमता, उम्र और स्तर को ध्यान में रखते हुए उसे एक निश्चित स्तर तक पहुँचाना। इस उद्देश्य को पूरा कर पाने के लिए हम आकलन को सीखने के एक साधन के रूप में देखते हैं। सिर्फ़ यह पता लगा लेना या जाँच कर लेना पर्याप्त नहीं है कि कितने बच्चों का शैक्षिक स्तर क्या है, आकलन के द्वारा बच्चों का आपस में सीखना-सिखाना, प्रभावी बनाना ही मुख्य उद्देश्य है। यानी कि आकलन को हम सीखने के उपकरण (learning tool) के रूप में महत्त्व देते हैं, मात्र बच्चों की उपलब्धि स्तर जानने के उपकरण (testing tool) के रूप में नहीं।

आकलन की अवधारणा

आकलन के द्वारा बच्चों के उपलब्धि स्तर का अनुमान लगाते हैं। यदि हम भाषा की बात करें तो हम जानना चाहेंगे कि बच्चे कितना पढ़ पाते हैं, कैसे पढ़ पाते हैं? रुक-रुक कर या प्रवाह में पढ़ते हैं, भाषा को सुनकर कितना समझते हैं, कितने आत्मविश्वास के साथ अपनी बात कह पाते हैं, लिखित रूप में अपनी अभिव्यक्ति कर पाते हैं आदि। आकलन से हमें बच्चों की सीखने की गति को सरसरी तौर से नहीं परंतु गहराई से समझना है। जैसे, अगर वे ठीक से पढ़ नहीं पा रहे तो उसकी क्या वजह है? क्या वे कुछ अक्षरों को पहचानने में कमज़ोर हैं या उनमें शब्दों और वाक्यों को एक सार्थक इकाई के रूप में पढ़ने की आदत नहीं पड़ सकी या हिज्जे करके पढ़ने की आदत की वजह से अर्थ समझ नहीं पाते आदि। यह जानकारी शिक्षक के अपने उपयोग के लिए है। वे अपने बच्चों को समझेंगे, उनके सीखने में आने वाली कठिनाईयों को पहचानेंगे, इन कठिनाईयों को दूर करने के हल निकालेंगे। फिर तरह-तरह की गतिविधियों एवं अभ्यासों द्वारा या अन्य तरीकों से सीखने के लिए बच्चों को प्रेरित करेंगे। अर्थात् आकलन के द्वारा शिक्षक बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में मदद करेंगे, मात्र उनकी उपलब्धियों को परखेंगे नहीं।

अब आप समझ गए होंगे कि क्या करना है, यानी बच्चों के स्तर को जानकर और उनकी कठिनाईयों को पहचान कर सुधारात्मक कदम उठाना है। मात्र नंबर देकर उन्हें किसी श्रेणी में डालकर संतुष्ट नहीं हो जाना है। आकलन की प्रक्रिया के अंतर्गत शिक्षक बच्चों के नहीं सीख पाने के कारण ढूँढ़ेंगे, उन पर विवरणात्मक टिप्पणी लिखेंगे जिससे यह स्पष्ट होगा कि सीखने-सिखाने की पिछली प्रक्रिया से बच्चों ने क्या सीखा और आगे की सीखने-सिखाने की प्रक्रिया कैसी होनी चाहिए।

आकलन की प्रक्रिया की एक और विशेषता यह है कि हम प्रत्येक बच्चे की प्रगति की तुलना उसकी अपनी पिछली स्थिति से करेंगे, दूसरे बच्चों की प्रगति से नहीं। इसके पीछे कारण यह है कि सभी बच्चों के सीखने की गति एवं समझ विकसित करने का समय एक-सा नहीं होता। कुछ बच्चे पढ़ने-समझने और बोलने जल्दी लगते हैं पर कठिन अवधारणाएँ समय आने पर ही समझते हैं। कुछ समझ जल्दी लेते हैं पर लिखने के प्रारंभिक दिनों में कठिनाई महसूस करते हैं। परंतु ध्यान रहे कि हमें कुछ ही अर्थात् जल्दी सीखने वाले बच्चों को ही नहीं सिखाना है बल्कि, हर एक बच्चे को सीखने के लिए प्रेरित करना है। इसके लिए शिक्षक को बच्चों की विभिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए सभी को सीखने के अवसर देने होंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आकलन योजना

प्राथमिक कक्षाओं के लिए विकसित नए पाठ्यक्रम–नई शिक्षण पद्धति की भावना के अनुरूप आकलन को एक योजनाबद्ध तरीके से सभी शिक्षकों को करना चाहिए। इस योजना की रूपरेखा आपके स्थान विशेष की ज़रूरतों के अनुरूप कुछ इस प्रकार हो सकती है–

- शिक्षक वर्ष भर कक्षा के सभी बच्चों का सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान, लगातार अवलोकन करें और साथ-साथ सुधारात्मक प्रयास करते रहें,
- औपचारिक रूप से आकलन एवं रिकॉर्डिंग, वर्ष में तीन बार चार-चार माह के अंतराल पर कर सकते हैं,
- आकलन गतिविधि आधारित तरीके से ही करें। बच्चों से तरह-तरह की गतिविधियाँ करा कर उनके शैक्षिक स्तर की जानकारी लें,
- आकलन के दौरान शाला या कक्षा का माहौल अन्य दिनों की ही तरह बिल्कुल सामान्य रहे। जिस सरल ढंग से सीखना-सिखाना चलता है–गतिविधि, बातचीत, प्रश्न-उत्तर, चर्चा, अवलोकन आदि वैसे ही आकलन चलता रहे,
- एक बार में सभी बच्चों को ध्यान से देखना और आकलन तथा सुधार की दृष्टि से बारीकियाँ नोट करना कठिन होगा इसलिए शिक्षक एक बार में 5-6 बच्चों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। आकलन बच्चों को टोलियों में बिठा कर या अलग-अलग तरीके से किया जा सकता है। आकलन रिकॉर्ड करने के लिए प्रत्येक कक्षा के लिए शिक्षक एक आकलन-रजिस्टर बनाएँ जिसमें कम-से-कम एक पन्ना तो हर बच्चे के लिए हो। यह रजिस्टर हमेशा शाला में रहे जिससे बच्चों के माता-पिता जब चाहें बच्चों की प्रगति देख पाएँ,
- हर बच्चे का रिकॉर्ड नोट करें जिसकी टिप्पणियाँ स्पष्ट, सटीक और विश्लेषणात्मक हों और बच्चों को सिखाने के प्रयासों के लिए उनका उपयोग हो सके। प्रत्येक चरण में सभी बच्चों के आकलन के बाद सुधार की दृष्टि से आकलन–प्रपत्र में से महत्वपूर्ण जानकारी निकाली जाए जैसे, किस बच्चे को सीखने में कौन-सी कठिनाई आ रही है?
- आकलन से प्राप्त जानकारी के आधार पर बच्चों की कठिनाईयों को ध्यान में रखते हुए उनके विकास के लिए पहले से अधिक प्रभावी योजना बनाई जाए जैसे, किन बच्चों को एक साथ बैठाकर सिखाया जा सकता है, किस तरह की गतिविधियाँ उनके लिए उपयुक्त होंगी, किस तरह से उन्हें आपस में सीखते हुए प्रोत्साहन दिलाया जा सकता है, आदि,
- इस तरह के आकलन में शिक्षक अपना एवं अपने द्वारा कराई जा रही शिक्षण-प्रक्रिया का भी आकलन करें और अपनी शिक्षण-प्रक्रिया में सुधार करके बच्चों को सीखने के लिए प्रेरित करें। इस तरह प्रत्येक चरण के आकलन के बाद लगातार सुधार हो, सिखाने के तरीकों में और सीखने के अवसरों में,
- आकलन तथा टेस्ट के निष्कर्षों के आधार पर बच्चों के माता-पिता को देने के लिए एक प्रगति पत्रक बनाएँ। इस प्रगति पत्रक में शिक्षक आकलन और सत्रांत परीक्षा के आधार पर बच्चों की प्रगति का विवरण देंगे,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- आकलन के आधार पर अगली कक्षा के शिक्षक को जानकारी भी दी जाए।

आकलन योजना तैयार करते समय यह ध्यान रखना भी ज़रूरी है कि किन बिंदुओं को आधार मानकर आकलन किया जाए।

आकलन के बिंदु

'दक्षता' शब्द किसी बात में पूरी तरह कुशल हो जाने या माहिर हो जाने से जुड़ा है और 'कुशलता' बार-बार अभ्यास करने से ही प्राप्त होती है। इसलिए यह आकलन करने से पहले कि बच्चे ने किसी कौशल को प्राप्त किया है या नहीं यह अवश्य सोच लें कि आपने उस कौशल को प्राप्त करने के लिए बच्चे को बार-बार अलग तरह के अवसर दिए हैं या नहीं। यहाँ पर पहली से पाँचवीं तक की कक्षाओं के लिए आकलन के कुछ मूलभूत बिंदु आपकी सुविधा के लिए दिए जा रहे हैं जिनमें बच्चे के स्तर के अनुसार बदलाव लाया जा सकता है। आकलन के बिंदुओं में कुछ दक्षताओं के सामने द्वितीय/तृतीय चरण में आकलन लिखा है। इससे तात्पर्य है कि इन कौशलों का आकलन प्रथम चरण में करना आवश्यक नहीं, केवल द्वितीय और तृतीय चरण में करना पर्याप्त है। कुछ चीज़ें जो वर्ष के प्रथम या द्वितीय चरण में सिर्फ़ परिचय या शुरुआत के लिए होती हैं, बच्चे शुरू से ही उनमें दक्ष हो जाएँ, ऐसी अपेक्षा नहीं है। आप ऐसे कौशलों की प्राप्ति के लिए अलग-अलग स्तर की गतिविधियों द्वारा प्रयास तो करते रहें पर आकलन उसी चरण में करें जो प्रपत्र में दिया है जैसे—कक्षा 1 के प्रथम चरण में पढ़ना-समझना या लिखने के आकलन पर ज़ोर न देकर सुनना-बोलना तथा अभिव्यक्ति पर ज़्यादा ज़ोर दिया जाए क्योंकि प्रथम चरण में पढ़ना तो कुछ शब्दों की मात्र पहचान के रूप में होगा।

भाषा शिक्षण के संदर्भ में हमारे कुछ अध्यापक साथी किसी-न-किसी अनिश्चितता का सामना कर रहे होते हैं। वे इस बात पर तो सहमति बना लेते हैं कि आकलन और जाँच सीखने की प्रक्रिया के साथ ही शुरू हो जानी चाहिए पर यह भी कहते हैं कि—अभी तो बच्चे स्वर, व्यंजन पर ही हैं, एक बार वाक्यों पर आ जाएँ तो आँकना शुरू करें कि क्या सीखा क्या नहीं सीखा?

यहाँ दी गई तालिका उन्हें इस अनिश्चितता की स्थिति से उबरने में मदद करेगी। इस तालिका में एक प्रकार से भाषा शिक्षण के उद्देश्यों और कौशलों को संकेतकों के माध्यम से दर्शाया गया है। प्रत्येक कौशल के लिए भिन्न-भिन्न संकेतक दिए गए हैं। यहाँ पर यह समझ बना लेनी बहुत ज़रूरी है कि संकेतक किसी भी सीमा में बँधे हुए नहीं हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि 'सुनने-बोलने' के अंतर्गत एक संकेतक है—सुनी गई कविता को सुनाना, हाव-भाव के साथ सुनाना। आमतौर पर उम्मीद की जाती है कि पहली कक्षा के शुरुआती दौर में बच्चे इस संकेतक पर खरे उतरें पर सभी बच्चों के संबंध में यह बात कहना उचित जान नहीं पड़ता। कुछ बच्चे इससे आगे वाले संकेतकों पर पहले निपुणता प्राप्त कर लेते हैं जो उच्च स्तरीय कौशलों के अंतर्गत आते हैं—जैसे प्रश्न पूछना, परिचित संदर्भों में अपनी बात कह पाना। अतः तालिका में दिए गए संकेतकों को इसी दृष्टि तथा समझ के साथ देखा जाए कि कोई भी संकेतक एक सीमा विशेष में नहीं बँधा हुआ है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कक्षा 1 भाषा

आकलन के बिंदु	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण
1 सुनना, बोलना			
• कविता/कहानी/विवरण हाव-भाव सहित सुना सकना	✓	✓	✓
• कविता/कहानी/विवरण सुनकर मौखिक प्रश्नों के उत्तर दे सकना		✓	✓
• चित्रों पर विवरण सुना सकना	✓	✓	✓
• स्वतंत्र रूप से अपनी बात कह सकना		✓	✓
• सरल मौखिक निर्देशों का पालन कर सकना	✓	✓	✓
• सुनी हुई बात पर अपना मत व्यक्त कर सकना			✓
2 पढ़ना समझना			
• परिचित शब्दों, नामों को कविता/कहानी/श्यामपट्ट /शब्द कार्ड आदि में पहचान पाना	✓	✓	✓
• शब्दों तथा छोटे-छोटे वाक्यों को प्रवाह में पढ़ना		✓	✓
• अर्थ समझ कर पढ़ना			✓
• लगभग 10 अक्षर–प्रथम चरण/20 अक्षर–द्वितीय चरण/4-5 को छोड़कर सभी अक्षर पहचान पाना–तृतीय चरण	✓	✓	✓
• 2 मात्रा/3-5 मात्रा/सभी मात्राएँ पहचान पाना	✓	✓	✓
3 लिखना			
• अक्षर/शब्द देख कर लिख पाना	✓	✓	✓
• अक्षर/शब्द मन से लिखना		✓	✓
• प्रश्नों को सुनकर/पढ़कर छोटे-छोटे वाक्यों में उत्तर लिख पाना			✓
4 अभिव्यक्ति			
• देखकर चित्र बना पाना	✓	✓	✓
• कविता/कहानी सुनकर उसके अनुसार चित्र बना पाना	✓	✓	✓
• स्वतंत्र चित्र बना पाना	✓	✓	✓
• कविता/कहानी/परिचित घटना स्थिति का अभिनय करना	✓	✓	✓
• मिट्टी तथा आसपास की अन्य सामग्री से चीज़ें बनाना	✓	✓	✓

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कक्षा 2 भाषा

आकलन के बिंदु	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण
1 सुनना-सोचकर बोलना			
• कविता/कहानी अकेले या सामूहिक रूप से हाव-भाव सहित सुना सकना	✓	✓	✓
• कविता/कहानी/विवरण सुनकर एक या दो पूरे वाक्यों में उत्तर दे सकना		✓	✓
• सरल और छोटे निर्देश समझकर उनके अनुसार कार्य कर सकना	✓	✓	✓
• बोलते समय लिंग सामंजस्य का ध्यान रख सकना		✓	
• दैनिक जीवन/परिचित संदर्भों/कक्षा की गतिविधियों का 2-4 वाक्यों में विवरण दे सकना	✓	✓	✓
• परिचित संदर्भों में हिंदी के 100/200/300 शब्दों का अर्थ समझकर उपयोग कर सकना	✓	✓	✓
• संबंधित प्रश्न पूछ सकना		✓	✓
• अपनी बात कह सकना		✓	✓
• हिंदी के शब्दों को सही ढंग से बोल सकना			✓
2 पढ़कर समझना–समझ व्यक्त करना			
• कविता/कहानी/कार्ड/चित्र में आए शब्दों को प्रवाह में पढ़ सकना	✓	✓	✓
• वर्ण पहचान कर उनसे नए शब्द बनाना और पढ़ पाना	✓	✓	✓
• सभी वर्णों एवं मात्राओं से बनने वाले शब्द पढ़ सकना			✓
• पुस्तकालय की किताबों में से छोटी कहानी/कविता पढ़ सकना			✓
3 लिखना			
• पढ़े हुए शब्दों, नामों को लिख सकना	✓	✓	✓
• बोले/सुने प्रश्नों का एक-दो वाक्यों में उत्तर लिख सकना			✓
• स्वयं पढ़कर एक या दो वाक्यों में उत्तर लिख सकना		✓	✓
• सुनकर लिख सकना	✓	✓	✓
• दो-तीन वाक्यों में विवरण लिख सकना			✓
• पूरी वर्णमाला क्रम से लिख सकना	✓	✓	✓
4 स्वतंत्र और सृजनात्मक अभिव्यक्ति			
• परिचित परिस्थितियों का अभिनय कर सकना	✓	✓	✓
• स्वतंत्र चित्र बना सकना	✓	✓	✓
• आसपास की सामग्री से विभिन्न वस्तुएँ बना सकना	✓	✓	✓
• मन से कल्पना करके कहानियाँ/कविता बना सकना	✓	✓	✓
• असमान वस्तुओं के बीच समानता और संबंध ढूँढ़ पाना		✓	✓

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कक्षा 3, 4, 5 भाषा

आकलन के बिंदु	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण
1 सुनना-समझना-सोचकर बोलना			
• कविता/कहानी/विवरण हाव-भाव एवं आवाज़ के उतार-चढ़ाव के साथ सुना सकना	✓	✓	✓
• क्या, कब, कहाँ, किससे, कैसे और क्यों वाले प्रश्नों के उत्तर पूरे वाक्यों में दे सकना	✓	✓	✓
• नाटक एवं संवाद सुनकर प्रमुख तत्व ग्रहण कर सकना			✓
• परिचित परिस्थितियों के बारे में बोल सकना		✓	✓
• हिंदी के शब्दों को स्पष्ट उच्चारण के साथ प्रवाह में पढ़ सकना		✓	✓
• बोलते समय लिंग, वचन का सामंजस्य रख सकना	✓	✓	✓
• हो रहे कार्य के संबंध में क्या, कब, कैसे जैसे प्रश्न पूछ सकना	✓	✓	✓
2 पढ़कर समझना, समझ व्यक्त करना			
• एक बार में शब्द सामग्री को प्रवाह में पढ़ सकना			
• शब्दों को पढ़कर समझ सकना			
• छोटी सूचनाओं को पढ़कर समझ सकना		✓	✓
• पढ़ी गई सामग्री के प्रमुख तत्व ग्रहण कर सकना	✓	✓	✓
• संदर्भ में आए नए शब्दों का अर्थ समझ कर उपयोग कर सकना		✓	✓
3 लिखना			
• क्यों, कब, कैसे वाले प्रश्नों के उत्तर पूरे वाक्यों में लिख सकना			
• शब्दों को उपयुक्त दूरी और सीधी लाइन में लिख सकना	✓	✓	✓
• अपरिचित शब्दों का श्रुतलेखन कर सकना	✓	✓	✓
• छोटा अनुच्छेद या विवरण लिख सकना	✓	✓	✓
4 स्वतंत्र एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति			
• स्वतंत्र चित्र बनाना	✓	✓	✓
• मिट्टी एवं आसपास की वस्तुओं से अलग-अलग चीज़ें बना सकना	✓	✓	✓
• किसी वस्तु का वर्णन कर सकना	✓	✓	✓
• मन से कहानी बनाना, आगे बढ़ाना	✓	✓	✓
• अपने आपको दूसरों की जगह रखकर उनका अभिनय कर सकना	✓	✓	✓
• किसी वस्तु के सामान्य उपयोग के अलावा अन्य उपयोग सोच पाना	✓	✓	✓

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आकलन के तरीके

आकलन सीखने-सिखाने और पढ़ने-पढ़ाने की प्रक्रिया का अभिन्न हिस्सा है। सभी बच्चों के सीखने की अपनी एक 'गति' (पेस) होती है और सीखने के तरीके भी भिन्न-भिन्न होते हैं। आकलन के वही तरीके अच्छे हैं जो बच्चों की गति और सीखने के तरीकों को संबोधित कर सकें। शिक्षक द्वारा अपनाए गए आकलन के तरीके सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को उबाऊ, तनाव युक्त तथा भय पैदा करने वाला बना सकते हैं या फिर चुनौतीपूर्ण, मज़ेदार और तनाव मुक्त।

यहाँ पर आकलन की कुछ ऐसी युक्तियों की बात की जा रही है जो प्राथमिक स्तर पर हिंदी के संदर्भ में प्रयुक्त की जाती हैं। यह सीखने और सिखाने वाले दोनों के लिए उपयोगी सूचनाएँ प्रदान करने में सहायक होगा और इसकी मदद से पढ़ाने के तरीकों को और भी समृद्ध बनाया जा सकेगा।

भाषा के संदर्भ में आकलन का उद्देश्य है—भाषा की समझ, इसे विभिन्न संदर्भों में उपयोग करने की क्षमता और इसके सौंदर्यपरक पहलू परख सकने की क्षमता का मापन। इससे हमें सीखने वाले की वास्तविक स्थिति का पता चलता है और उसकी स्थिति बेहतर करने के लिए समय पर उचित हस्तक्षेप करने के लिए आवश्यक पहल करने के संकेत भी मिलते हैं। शैक्षणिक प्रक्रियाओं में आकलन का अर्थ है—ज्ञान, समझ, क्षमता और प्रदर्शन को किसी भी तरीके से आँकना। भाषा शिक्षण के मामले में आकलन को कक्षा कार्य के ही विस्तार के रूप में देखा जाना ज़रूरी है।

भाषा के संदर्भ में यदि हम आकलन की मौजूदा प्रक्रिया का अवलोकन करें तो मुख्य बात यह समझ में आती है कि मौखिक और लिखित परीक्षा द्वारा बच्चों की शब्द संपदा, व्याकरण तथा पढ़ने और लिखने के ही कौशल की जाँच की जाती है। जाँच के लिए जो परीक्षा पत्र/प्रश्न-पत्र तैयार किया जाता है वह आमतौर पर पाठ्यपुस्तक पर ही आधारित होता है और उनका उत्तर देना भाषा की समझ पर कम और स्मृति के कौशल पर अधिक आधारित होता है।

शिक्षक की सुविधा कहें या कुछ और, आकलन के लगभग सभी तरीके 'लिखित जाँच पत्र' के इर्द-गिर्द ही घूमते रहते हैं। मौखिक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, अवलोकन—इन सबका कोई स्थान नज़र ही नहीं आता।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा—2005 में भाषा-शिक्षण के जिन उद्देश्यों की बात की गई है, उनके अनुसार आकलन के तरीकों को भी बदलने की महती अनिवार्यता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा—2005 ने 'एक समग्र भाषिक निपुणता' की बात पर बल दिया है। इस संदर्भ को मद्देनज़र रखते हुए आकलन के नज़रिए और फिर उसके साथ आकलन की युक्तियों, तकनीकों में भी बदलाव की ज़रूरत है।

आकलन संबंधी युक्तियाँ

हिंदी भाषा के आकलन के संबंध में 'पढ़ाने और सीखने' की प्रक्रिया को एकीकृत रूप में देखना ज़रूरी है। भिन्न-भिन्न युक्तियों का इस्तेमाल करते हुए आकलन की सतत् प्रक्रिया द्वारा भाषा के सभी कौशलों की जाँच करना न केवल आसान हो जाता है अपितु प्रभावशाली भी बन पड़ता है। भाषा सीखने की प्रक्रिया का आकलन करने के लिए यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि विद्यार्थी (बच्चे)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को भी आकलन की प्रक्रिया में शामिल किया जाए। स्व-आकलन, साथियों द्वारा आकलन विद्यार्थियों को बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रोत्साहित करता है।

आकलन की भिन्न-भिन्न तकनीकों पर बात कर लेने से पहले यह समझ बना लेना बहुत ज़रूरी है कि–

- हर बच्चा अपने आप में अद्वितीय है,
- सीखने-सिखाने के उसके अपने कुछ खास तरीके होते हैं,
- सभी बच्चे अपनी एक निश्चित गति से सीखते हैं,
- व्यक्ति विशेष की निश्चित गति (पेस) और सीखने के तरीकों को संबोधित करने वाली आकलन की तकनीकें उनमें आत्मविश्वास पैदा करती हैं,
- सीखने के प्रति ललक पैदा करती हैं और बेहतर प्रदर्शन के लिए उत्साहित करती हैं।

मौखिक परिक्षण

यह एक बहुत ही सरल पर अधिक प्रभावशाली तकनीक है–भाषायी कौशलों के परीक्षण की। मौखिक परीक्षण के लिए औपचारिक एवं अनौपचारिक रूप से बहुत-सी गतिविधियाँ आयोजित की जा सकती हैं। कक्षा शिक्षण के दौरान बच्चों से तरह-तरह के मुद्दों पर संवाद करना, प्रश्न पूछना, समूह में चर्चा करवाना, अभिनय करवाना आदि बहुत-सी गतिविधियाँ आयोजित कर बच्चों के भाषायी कौशलों की जाँच की जा सकती है। मौखिक परीक्षण के अंतर्गत बहुत-सी गतिविधियाँ औपचारिक रूप से भी आयोजित की जा सकती हैं–

प्रश्न-उत्तर सत्र–बच्चों की भाषा संबंधी तत्परता, शब्द संपदा, उच्चारण और भाषा की बुनावट संबंधी कौशल जानने के लिए तरह-तरह के सवाल बनाए जाते हैं। शुरुआती दौर में सवाल 'एक शब्द में उत्तर' वाले भी हो सकते हैं। यह ध्यान रखना ज़रूरी है कि प्रश्न पाठ्यपुस्तक के इर्द-गिर्द ही न घूमते रहें। बच्चों की रोज़मर्रा की ज़िंदगी से जुड़े सवालों के द्वारा उनसे उत्कृष्ट कोटि के उत्तरों की अपेक्षा की जा सकती है। बच्चे अपने बारे में, अपने परिवार और प्रिय वस्तुओं के बारे में बोलना बहुत पसंद करते हैं। जो कुछ उन्होंने चारों ओर देखा है, उसके बारे में बोलने के लिए वे सदैव तत्पर रहते हैं। अतः सवाल बनाते समय उनकी रुचियों को अवश्य ध्यान में रखा जाए। 'सवाल बना लेना' ही अपने आप में पर्याप्त नहीं है, पूछने का तरीका, उत्तर पाने के लिए समय देना भी ज़रूरी है और उत्तर सुनते समय शिक्षक के हाव-भाव दोनों के बीच का आपसी रिश्ता बहुत ही महत्वपूर्ण है।

बहुत-से अध्यापक सवाल करते हैं कि भरी कक्षाओं (जहाँ विद्यार्थियों की संख्या अधिक है) में प्रत्येक बच्चे से प्रश्न कैसे पूछ सकते हैं? इस संबंध में उत्तर तो यही है कि बच्चे हमारे पास सिर्फ़ एक ही दिन के लिए तो नहीं हैं न! पाठ पढ़ाने के दौरान भी सवाल पूछे जा सकते हैं, इसके लिए एक निश्चित दिन तय करना ज़रूरी नहीं।

कहानी कहना–पाठशाला आने से पूर्व ही बच्चों का कहानी से रिश्ता सोते-जागते, उठते-बैठते किसी-न-किसी तरह से जुड़ ही जाता है। कहानी सुनना उनकी आदतों में शामिल हो जाता है। कहानियाँ सुनते-सुनते कब वे अपनी ही तरह से कहानियाँ गढ़ने लगते हैं यह एक चमत्कार ही है। सुनी हुई कहानी को अपने शब्दों में सुना देना और अपनी तरफ़ से कहानी सुनाना भी भाषायी कौशलों के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आकलन की प्रभावशाली विधि है। कहानी सुनाते समय (बच्चे द्वारा) आकलन के मुख्य बिंदु होंगे–

- *सुने गए शब्दों के अतिरिक्त कुछ नए शब्द स्थिति के अनुरूप डाल पाना,*
- *आवश्यकतानुसार हाव-भाव का प्रयोग कर पाना,*
- *घटना क्रम को याद रख पाना।*

बोलकर पढ़ना–भाषा संबंधी आकलन की इस पारंपरिक विधि की उपयोगिता और महत्त्व को किसी भी दृष्टि में नज़र अंदाज़ नहीं किया जा सकता। पढ़ने के कौशल की जाँच के साथ-साथ उनके उच्चारण, भाव के अनुसार बल, अनुतान देने के कौशल की भी जाँच होती चलती है। विद्यार्थी को तरह-तरह के कथन, संवाद के छोटे-बड़े टुकड़े, नाटक का कोई हिस्सा या फिर पाठ्यपुस्तक के पाठों के अंश बोल-बोल कर पढ़ने के लिए दिए जा सकते हैं।

विद्यार्थी द्वारा गलत उच्चारण करने पर, विस्मय, प्रश्नबोधक हाव-भाव का प्रयोग करने पर तुरंत टोकना उनमें भय और अरुचि के भाव उत्पन्न करेगा। अत: यह हम पर निर्भर करता है कि सकारात्मक प्रभाव लाने के लिए किस समय उन्हें सही उच्चारण बताया जाए और किस तरीके से बताया जाए।

वर्णन करना–देखी-सुनी या पढ़ी बात का वर्णन करना सुनने में बहुत आसान लगता है पर यह अपने आप में कहीं बहुत जटिल कौशल है। बच्चों में यह कौशल स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहता है पर भाषायी शिक्षण की प्रवृत्तियाँ इसे पुष्ट करने के स्थान पर कुचल देती हैं। 'वर्णन करना' आकलन की दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण है। प्राथमिक स्तर के शुरुआती दौर में विद्यार्थी को किसी भी परिचित परिवेश में जानी-पहचानी वस्तु दिखाकर, चित्र दिखाकर या फिर कोई क्रिया दिखाकर बच्चों को वर्णन करने के लिए कहा जा सकता है। वर्णन की शुरुआत एक वाक्य से हो सकती है।

मौखिक परीक्षण में अंक या ग्रेड देने के लिए तीन या पाँच बिंदुओं वाला रेटिंग स्केल प्रयोग में लाया जा सकता है।

सारणी

विवरण	*1*	*2*	*3*	*4*	*5*
प्रवाह				अ	
शब्द संपदा			अ		
संरचना			अ		
अभिव्यक्ति				अ	

कुल अंक = 20

उपर्युक्त सारणी में 5 उत्कृष्ट प्रदर्शनों की ओर संकेत किया गया है। 3 से औसत प्रदर्शन का पता चलता है और 1 इस बात की ओर इशारा करता है कि विद्यार्थी को अभी और अवसर देने की ज़रूरत है।

अवलोकन

कक्षा में भाषा शिक्षण के लिए आप बहुत-से तरीकों का प्रयोग करते हैं, जैसे–चर्चा करना, अभिनय, स्वतंत्र अभिव्यक्ति, समूह में संवाद, चित्र पढ़ना आदि। बच्चे जब इन प्रक्रियाओं में संलग्न होते हैं तब शिक्षक द्वारा इन सभी प्रक्रियाओं का अनौपचारिक अवलोकन आकलन का एक महत्वपूर्ण अंग बन जाता है। अवलोकन आकलन का हिस्सा तभी है जब वह–

- नियमित रूप से किया जा रहा हो,
- किसी भी तरह के पूर्वाग्रह से दूर हो,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- आवश्यकतानुसार और सुविधानुसार उसका रिकॉर्ड भी रखा जा रहा हो।

यहाँ अवलोकन के लिए 'अनौपचारिक' शब्द इस्तेमाल किया गया है, इसका तात्पर्य यह नहीं कि बिना किसी उद्देश्य के अवलोकन कर रहे हैं। किसी गतिविधि का अवलोकन भाषा का प्रवाह, किसी की स्वतंत्र अभिव्यक्ति आदि जानने के लिए किया जा सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि भाषायी कौशलों की जाँच अवलोकन के आधार पर भी की जाती है।

लिखित परीक्षण

'पढ़ना' और 'लिखना' तथा अन्य कौशलों, यथा– वर्गीकरण, वर्णन आदि की जाँच करने के लिए आमतौर पर सभी शिक्षक लिखित परीक्षण पर निर्भरता प्रदर्शित करते हैं। कक्षा-कार्य, गृह-कार्य, यूनिट परीक्षाएँ लगभग सभी स्थितियों में लिखित परीक्षाओं का ही सहारा लिया जाता है। लिखित परीक्षाएँ सिर्फ़ लिखने के कौशल का ही आकलन नहीं करतीं अपितु पढ़ना, समझना, ग्रहण करना, कल्पना करना, स्वतंत्र अभिव्यक्ति–इन सभी पक्षों का आकलन करने में मदद करती हैं, बशर्ते इन परीक्षाओं के लिए उपकरण से प्रश्न-पत्र की ही बात सबसे पहले आती है, को सर्जनात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया हो। आमतौर पर प्रश्न-पत्र लिखने के कौशल की कम, 'स्मृति' के कौशल की जाँच अधिक करते हैं, अतः प्रश्न बनाते समय ध्यान रखा जाए कि प्रश्न–

- संदर्भ का विस्तार करने वाले हों,
- कल्पनाशीलता का पोषण करने वाले हों,
- समालोचनात्मक चिंतन को बल देने वाले हों,
- अनुभव आधारित उत्तरों का पोषण करने वाले हों,
- विश्लेषण क्षमता को बढ़ावा देने वाले हों।

प्रश्नों के उत्तर के संबंध में एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात पर ग़ौर करना बहुत ही ज़रूरी है– विद्यार्थी के शब्दों को महत्त्व देना। यह बात एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट की जा सकती है। एक अध्यापक विद्यार्थी के लिखित उत्तर का आकलन करते हुए कह रहे हैं–"बात तो बच्चे ने बिल्कुल सही लिखी है, पर मैंने जिन शब्दों में बताई थी, वे शब्द नहीं हैं, क्या करूँ, नंबर काट लूँ क्या?"

आप इन शिक्षक महोदय की मदद किस तरह से करेंगे?

श्रुतलेख–श्रुतलेख को भी भाषायी क्षमता की जाँच के उपकरण के रूप में इस्तेमाल में लाया जा सकता है। पर यह पारंपरिक श्रुतलेख से भिन्न है। यह बच्चे की स्मृति और मात्राओं की जाँच नहीं है बल्कि समग्र भाषिक निपुणता/दक्षता की जाँच में सहायक है।

विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक स्तर को, उम्र को ध्यान में रखते हुए किसी भी पाठ्य-सामग्री का कोई भी अंश चुनिए।

पोर्टफ़ोलियो

पोर्टफ़ोलियो का ज़िक्र आते ही हमारे साथी अध्यापक कला, चित्रकारी आदि के आकलन की बात सोचने लगते हैं। पोर्टफ़ोलियो भाषायी कौशलों के आकलन का भी महत्वपूर्ण और कारगर तरीका है। सत्र के पहले दिन से लेकर आखिरी दिन तक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बच्चे तरह-तरह की गतिविधियों के द्वारा बहुत कुछ लिख रहे हैं, बना रहे हैं। यह सब उनके पोर्टफ़ोलियो/फोल्डर में रखा जा सकता है। यदि आधुनिकतम तकनीकों की सुविधा हो तो सी.डी., कैसेट द्वारा उनके मौखिक कार्यों को भी पोर्टफ़ोलियो में रखा जाना संभव हो सकता है। पोर्टफ़ोलियो रखने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि विद्यार्थी अपने काम को उलट-पुलट कर देख सकते हैं, अभिभावकों को भी अपने बच्चे के काम की जानकारी मिलती रहती है, शिक्षक भी उसे सिर्फ़ जाँच नहीं अपितु सिखाने की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण उपकरण बना सकते हैं। अब सवाल उठता है कि पोर्टफ़ोलियो में क्या-क्या हो। आगे कुछ बातें प्रस्तावित रूप में दी जा रही हैं–

कक्षा 1 और 2

- तस्वीरें, चित्रकारी, हस्तलेख के नमूने, लेखन के शुरूआती दौर के वाक्य,
- मौखिक अभिव्यक्ति–वर्णन, कहानी, संवाद, कविता, चुटकुले, पहेलियों आदि की कैसेट (जो बच्चों ने सुनाई हो) सुविधानुसार,
- श्रुतलेख, अनुकरण लेखन,
- शुरूआती दौर का पठन, चित्र आदि को पढ़ना,
- किसी चित्र को देखकर वर्णन करना, लिखित और मौखिक दोनों रूपों में, घटना/कहानी पर चित्र बनाना।

कक्षा 3 से 5

उपर्युक्त के साथ-साथ–

- अपनी समझ से लिखी गई कहानी, घटना वृत्तांत,
- तैयार किए गए विज्ञापन, नोटिस,
- अनुच्छेद लेखन,
- निबंध लेखन,
- पत्र,
- क्लोज़ टेस्ट के उत्तर,
- स्वरचित कविताएँ,
- लिखी हुई घटनाओं, कहानियों पर चित्र,
- नाटक-प्रस्तुति आदि।

हमने आकलन के बहुत से तरीकों की बात की। इनमे से किसी भी तरीके को अपनाया जा सकता हैं।

□□□

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षक अनेक प्रकार की रोचक गतिविधियों द्वारा बच्चों के लिए भाषा सीखना आनंददायी बना सकता है। इन्हीं गतिविधियों में से एक है-शब्दचित्र। भाषा शिक्षण के दौरान शब्दचित्रों का प्रयोग कैसे करें? यही जानने के लिए पढ़िए प्रस्तुत लेख।

शब्दचित्र

लता अग्रवाल*

चलो! आज हम चित्र-चित्र खेलेंगे।

चित्रों में बच्चों की रुचि को देखते हुए मैंने श्यामपट्ट पर कुछ आकृतियाँ बनाई यह कहते हुए कि एक थे बाबाजी ○ जो चौगान में अपने दीवान पर बैठे थे ◎ और हुक्का गुडगुडा रहे थे ∠ साथ ही तीन द्वारपाल उनके आसपास खड़े थे \|/ अंदर बाबाजी की बहुत बड़ी कोठी थी जिसमें कीमती सामान रखा था बाहर दो कुत्ते बँधे हुए थे। ⅄ ⅄ कमरे के पीछे से चार चोरों ने कमरे में सेंध लगाई और अंदर घुस गए कुत्ते लगे भौंकने द्वारपाल दौड़े बाबाजी चोर, बाबाजी चोर, बाबाजी बोले बेटा चोर नहीं मोर। यह आकृति कुछ इस तरह श्यामपट्ट पर तैयार हुई

फिर इसी प्रक्रिया को मैंने दोबारा दोहराया और बच्चों ने इस आकृति को अपनी नोटबुक में बनाया और जब उन्होंने मोर की आकृति को बनते पाया तो उनकी खुशी उनके चेहरे से झलक रही थी। उनकी जिज्ञासा को देखते हुए

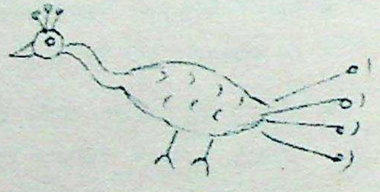

मैंने दूसरी आकृति उकेरी–

एक M नाम का लड़का था L O रुपये कमाता था। माँ से माँगे ४४ रुपये, बाबा से माँगे ४४ फिर पापा के पास पहुँचा माँगने पैसा, पापा ने दिया तमाचा जा पहुँचा दालान, बनगया चूहा अमजदखान। कहने की आवश्यकता नहीं कि बच्चों ने शब्दों के माध्यम से इस चित्र को बनाकर बहुत आनंद पाया। और मेरा मानना है कि हर बच्चा एक चित्रकार है, बशर्ते उसे चित्र के लिए प्रोत्साहित किया जाए और चित्रांकन का सही तरीका अपनाया जाए मेरी नज़र में शब्दों के माध्यम से

* 73, यश विला, भवानी धाम, फेज़-I, नरेला शंकरी, भोपाल।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चित्रांकन की कला बच्चों के लिए सबसे उपयुक्त कला है। जिसे हम शब्दचित्र कला कह सकते है। इन शब्द चित्रों को दो तरह से देखा जा सकता है।

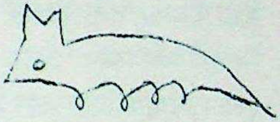

प्रथम–शब्दों के माध्यम से चित्र बनाकर, जैसे हमने मोर और चूहे का चित्र तैयार किया। यह विधि अक्षरों को संयोजित कर अलंकारिक विधि के माध्यम से चित्र तैयार करती है। प्राचीन काल में (रीतिकाल) इस विधा का प्रयोग साहित्य लेखन के अंतर्गत किया गया है। वर्तमान में यह विधि प्रायः कम ही देखने को मिलती है इसका कारण यह है कि इसे गढ़ने के लिए विशेष दक्षता की आवश्यकता होती है।

द्वितीय–किसी व्यक्ति, घटना अथवा वातावरण का शब्दों के माध्यम से चित्रात्मक वर्णन करना जैसे–कथा, कहानी में प्रयोग किया जाता है, शब्दों के माध्यम से विषयवस्तु का पूरा भूगोल चित्रित कर दिया जाता है। इस दृष्टि से हिंदी की गद्यविधा-रेखाचित्र और संस्मरण शब्दचित्र के समकक्ष दिखाई देती है, जिसमें सांकेतिक प्रभावोत्पादकता होती है।

जब हम किसी व्यक्ति के संपर्क में आते हैं, और उसके बारे में निकट से ज्ञान प्राप्त करते है, उसके स्वभाव से संबंधित सारे ज्ञान का चित्रांकन रेखाचित्र है। शब्दकार अपनी विवेकशीलता और भावुकता को लक्ष्य कर एक स्केच तैयार करता है, दूसरी अभिव्यक्ति ही वो आकर्षण और प्रभाव उत्पन्न करती है जो पाठक और श्रोता को बाँधे रखता हैं और बच्चा तो इस प्रकृति का सबसे कोमल सूक्ष्म और संवेदनशील प्राणी है और उससे भी संवेदनशील होता है उसका बालमस्तिष्क, क्योंकि उसका प्रत्येक चिंतन चित्र के रूप में ही आरंभ होता है। यथा–बच्चा जब कोई कहानी सुन रहा होता है तो कहानी में वर्णित शब्द उसकी कल्पना में सजीव आकार लेने लगते हैं जैसे शेर और चूहे की कहानी, कैसे चूहे ने शेर के जाल को काटकर शेर को शिकारी के जाल से आज़ाद कराया होगा यह चित्र फौरन बालक के मस्तिष्क में आकार लेने लगता है। यही कारण है कि बच्चों को कहानियाँ सुनना अच्छा लगता है।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि शिक्षक लगातार बोल रहा होता है और बच्चा खामोश बैठा सुन रहा है मगर वास्तविकता यह है कि उसे एक शब्द भी समझ नहीं आता है इसका कारण यह है कि जो भी पढ़ाया जा रहा है वह बच्चे के लिए अमूर्त और अनजान है, बच्चा अपनी कल्पना के घोड़े दौड़ाने में असमर्थ है। कभी-कभी शब्द की अति भी बालमस्तिष्क में बाधा पहुँचती है अतः बच्चों को जब भी शब्दचित्रों के माध्यम से शिक्षण दिया जाए तो इस बात का ख्याल रखें कि बिंब वास्तविक होने के साथ-साथ बच्चों की जानकारी और समझ के भीतर ही होना चाहिए। बच्चे से सूरज, चंदा, पेड़-पौधे और प्रकृति से जुड़े बिंबों पर चर्चा करें तो ज़्यादा रुचिकर होगा। कहानियों के शब्द बच्चे की चेतना में साकार होते हैं, चित्रों का सृजन करने वाले शब्दों को बच्चा बड़े गौर से देखता, सुनता और समझता है। जैसे–'सूरज उगते ही सुनहारी किरणें धरती

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को जगमगाने लगी पेड़-पौधों में सरसराहट जाग गई पंछी आसमान पर उड़ने लगे फूलों पर ओस की बूँदें चमकने लगीं ये शब्द अलंकारिक हैं और बच्चों के मानस पर चित्र अंकित करते हैं।

इसी तरह कविताएँ शब्दचित्र का श्रेष्ठ माध्यम हो सकती हैं, कवि जब प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन करता है मंद-मंद बयार, खिलते गुलाब, मोगरे की कलियाँ उसे ताजगी का एहसास कराती हैं। ये शब्दों का चमत्कार ही है जो बच्चों की नज़र में इंद्रधनुष के सभी रंग जगमगा उठते हैं। शब्दों की यह मात्रा तभी सजीव हो सकती है जब कहानी सुनते समय बुराई और भलाई का संघर्ष बालक की भावनाओं को झकझोरता हो, हर्ष में चेहरे पर उत्साह, दु:ख और संवेदना के पलों में आँखों में गहरी उदासी झलक पड़े। बालगीतों की रचना इसी शृखंला का हिस्सा हैं। यथा–

'तितली रानी–तितली रानी
पास नहीं क्यूँ आती हो
फूलों का रस पीती हो तुम
फूलों में छिप जाती हो।'

बच्चा तितली को जानता है अत: इस सजीव बिंब के माध्यम से वह कल्पना करता है इस आधार पर कई अनेक बिंब की रचना करता है। यथार्थ जीवन की एक वस्तु को देखना और कल्पना में उसका चित्र बनाना बच्चे के इस कार्यकलाप में कहीं अंतर्विरोध नहीं है। बच्चा इसपर विचार करता और स्वयं की रचना तैयार करता है। यह उसके लिए हर्ष की घड़ी होती है, ये बिंब बच्चों की भावनाओं में रंग भरते है और बालक सृजन का आनंद ले पाता है। इस तरह सजीव शब्दों और सृजनात्मक विचारों के स्रोत अनंत है। बच्चा एक बार इनका प्रयोग जान लेने पर नित इनसे प्रेरणा लेता रहेगा और बाल आत्मा की गहराईयों में सोए नेक विचारों और नेक भावनाओं को जगाता रहेगा।

अपने स्कूल के आरंभिक दिनों में अक्सर बच्चों को अक्षरों में भेद करने के लिए जोर लगाते देखा जाता है। कभी ये अक्षर उनकी आँखों के आगे नाचते हैं, कभी एक-दूसरे में उलझ जाते हैं जो बच्चों की समझ से बाहर होते है। यदि उन्हीं अक्षरों को खेल से जोड़ दिया जाए तो बच्चे बड़ी रुचि से इन शब्दों को समझ पाएँगे। फिर जब कोई बच्चा पुस्तक खोलकर पढ़ेगा तो वह मात्र शब्दों का पढ़ना या शब्दों को जोड़कर वाक्य बनाना मात्र नहीं होगा बल्कि पढ़ते समय बच्चा चित्र के संसार में चला जाता है जिस लहजे और स्वर में बच्चा पढ़ेगा उसमें सूक्ष्म से सूक्ष्म भावनाएँ प्रतिबिंबित होंगी जैसे–हिमालय का उच्चारण हिमालय के रूप में करने पर उसकी ऊँचाई का आभास देगा। उसी तरह कड़ी धूप, रिमझिम या झमाझम बारिश ये उच्चारित शब्द उसके हृदय के सबसे अंतरंग तारों को स्पर्श करेंगे और बिंब उसके चिंतन को सजीव बनाएगें। बच्चे उसे शब्दों में उतारने का प्रयास करेंगे।

जैसे फ़िल्मों या तिलिस्म कथाओं में जो भयानक और रोमांचक दृश्य दिखाए जाते हैं जिन्हें बच्चे आज देखना ज़्यादा पसंद करते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यथा भूतियां दृश्य जो स्क्रीन पर यदि फ़िल्माया जा रहा है उसमें घना अँधेरा, साँय-साँय करता सन्नाटा, धुंध, उल्लू के बोलने का स्वर हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं जो दृश्य की भयानकता को स्पष्ट करता है। मगर उन्हीं दृश्यों को शब्दों में व्यक्त किया जाए तो कुछ इस तरह होगा–

'अमावस की वह भयानक काली रात,
निर्जन वन में, सूनसान रास्ते,
चारों ओर साँय-साँय करता सन्नाटा,
एक धुंध-सी थी माहौल में,

उल्लू और चमगादड़ के अलावा कोई दूसरा स्वर सुनाई नहीं दे रहा था ऐसे वीराने में...।

ये शब्दों के द्वारा अप्रस्तुत दृश्य का खींचा गया एक दृश्य है।

इन सबके अलावा नन्हें-मुन्नों के लिए तो ये शब्दचित्र ज्ञान का सर्वोत्तम माध्यम साबित होगें यदि बच्चों को पाठ्यवस्तु से संबंधित ज्ञान भी शब्दचित्र के आधार पर कराया जा सकता है। यथा–चिड़िया दाना चुग रही है,

चिड़िया पेड़ पर बैठी है। उड़ रही है।
यह चिड़िया पूरब दिशा में उड़ रही है
वह पश्चिम दिशा में उड़ रही है।

यह पेड़ की परछाई है। पत्तियाँ पेड़ से झर रही है

आदि इस तरह के छोटे-छोटे वाक्यों की रचना चित्रों के माध्यम से की जा सकती है। इसके अलावा शब्दचित्रों में अव्यक्त को कहने की क्षमता होती है। इस दृष्टि से देखें तो जो शब्दचित्र होते है वे सीमित शब्दों में अथवा सूत्र वाक्य की तरह कहे जाते हैं जिसका विस्तृत अर्थ व्यक्त होता है। यथा–'बादल का मृग-सा चौकड़ी भरना या कछुए का मंथन गति से चलना' में शब्दों का चित्रांकन है कि कभी बादल हिरण की भाँति तेज भाग रहे हैं तो कहीं कछुए की भाँति एकदम धीमी गति से चल रहे हैं।' वहीं इसका दूसरा उदाहरण देखिए–'वह पीट रहा है।' कहने को यह एक वाक्य है लेकिन हमारी आँखों के आगे जो चित्र प्रस्तुत करता हैं उसमें परत-दर-परत कई वाक्य हमारे समक्ष आते हैं जिन्हें कहने की आवश्यकता नहीं होती जैसे–

1. वह पीट रहा है।
2. कोई है जिसे वह पीट रहा है।
3. कुछ है जिससे वह पीट रहा है।

गंभीरता से देखने पर हम जान पाएँगे कि शब्द में चित्र है और चित्र में शब्द। एक वाक्य में तीन वाक्य छिपे हैं। ये शब्दचित्र न केवल प्राथमिक स्तर पर वरन् उच्च कक्षाओं के अध्ययन के साथ-साथ जीवन के हर क्षेत्र में उपयोगी है। कभी हम भाषण दे रहे हैं, वाद-विवाद या कविता पाठ कर रहे हों या किसी प्रकार का लेखन कार्य शब्दचित्र सदैव हमारी मदद करते हैं। बशर्ते इस विधा का आरंभ से ही बच्चों को विषय ज्ञान के साथ-साथ अभ्यास कराया जाए। यह बच्चों में शब्द क्षमता का विकास तो करता ही है साथ ही उसकी कल्पना शक्ति का विकास करते हुए उसकी सृजनात्मकता को भी विकसित करता है।

❑❑❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाषा शिक्षण से जुड़े चार कौशल होते हैं–सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। सुनना और बोलना भाषा के भाषिक पक्ष से संबंधित है और पढ़ना और लिखना लिखित पक्ष से हमारी भाषा कितनी शुद्ध होगी यह इन चारों कौशलों के समुचित विकास पर निर्भर है। कौशल विकास की प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका कैसी हो? यही इस लेख का विषय है।

भाषा विकास में उच्चारण शिक्षण का महत्त्व

आर.पी. पाठक*

भाषा विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। बचपन में बालक-बालिका अपनी माँ की बोली सुनकर उसे बोलने का प्रयास करते हैं यही बोली स्थान परिवेश के साथ वैधानिक स्वरूप धारण करते ही भाषा का रूप ग्रहण कर लेती है। भाषा ही वक्ता और श्रोता के मध्य सेतु का कार्य करती है। वैसे तो भाषा के मुख्यत: दो रूप होते है, (1) भाषित (2) लिखित। वास्तव में अपने पूर्व रूप के कारण ही भाषा का नाम सार्थक होता है। भाषा प्रयोग के लिए शब्द भण्डार, शब्दों का वाक्यों में उचित और शुद्ध प्रयोग तथा शुद्ध उच्चारण की मौलिक आवश्यकता होती है। इनमें से एक में भी कमी 'भाषा प्रयोग' को दूषित कर देती है।

हम सभी जानते हैं कि भाषा के चार कौशल होते हैं यथा–सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। लेकिन प्रश्न यह उठता है कि भाषा के ये कौशल 'उच्चारण' से कैसे संबंधित हैं? इसका उत्तर यह है कि भाषा के दो कौशल 'सुनना' और 'बोलना' भाषा के प्रथम रूप अर्थात् भाषित रूप से संबंधित हैं तथा पठन अथवा लेखन दूसरे अर्थात् लिखित रूप से संबंधित हैं। उच्चारण का सीधा संबंध सुनना, बोलना इन कौशलों से है। हम जैसा उच्चारण सुनते हैं वैसा ही उच्चारण करते हैं। शुद्ध उच्चारण सुनते हैं वैसे ही उच्चारण करते हैं। अशुद्ध उच्चारण सुनकर अशुद्ध उच्चारण करते हैं। इसलिए हमको यह ध्यान रखने की आवश्यकता होती है कि हमारा उच्चारण शुद्ध एवं अनुकरणीय बन सके। जिससे कि हमारे विद्यार्थी शुद्ध उच्चारण सुने और सीखें। यह बात हमको कक्षा में भाषा प्रयोग करते समय,

*रीडर (*शिक्षाशास्त्र*), श्री लाल बहादुर शास्त्री (मानित विश्वविद्यालय), नई दिल्ली-110016

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पढ़ाते समय, आदर्श वाचन करते समय और कक्षा-कक्ष के अलावा भी सामान्य बातचीत में ध्यान रखनी होगी कि हमारा उच्चारण अतीव शुद्ध रहे जिससे कि शिक्षार्थियों में भाषा का प्रथम कौशल अर्थात सुनने की योग्यता ठीक ढंग से विकसित हो सके। यदि ऐसा नहीं होता है तो शिक्षार्थी हमारे अपने उच्चारण से भी अशुद्ध उच्चारण के आदी हो सकते हैं। इस अशुद्ध उच्चारण के और भी अन्य कारण हो सकते हैं जैसे–छात्र का शारीरिक दोष। इसके लिए 'नाक' अथवा 'मुख' के किसी अवयव में विकार का पाया जाना। इसके दोष के निदान के लिए शिक्षक अथवा माता-पिता चिकित्सा विशेषज्ञ की सहायता ले सकते हैं।

इसी प्रकार भाषा विकास में ध्वनियों के शुद्ध उच्चारण के ज्ञान का अभाव भी उच्चारण दोष का कारण बनता है जैसे–कभी-कभी हम 'विद्यालय' को 'विधालय' या 'विक्ष्यालय' और 'क्षमा' को 'शमा' या 'छमा' तथा 'कक्षा' को 'कच्छा' या कछ्य' कहकर उच्चारित करते हैं। अशुद्ध उच्चारण का एक और भी कारण है– स्थानीय बोलियों और स्थानीय भाषा का उच्चारण पर प्रभाव। जैसे पंजाब और हरियाण के लोग प्राय: अर्ध वर्णो का पूर्ण उच्चारणा 'ा' करते रहते हैं यथा–'शब्द' को 'शबद', 'तन्त्र' को 'तन्तर' और 'मंत्र' को 'मन्तर' आदि।

विदेशी ध्वनियाँ भी हमारे उच्चारण में कठिनाईयाँ उत्पन्न करती हैं जैसे–'स्टेशन' को 'सटेशन' और 'स्कूल' को 'सकूल' कहकर उच्चारित करना।

हिंदी भाषा की कुछ ध्वनियाँ बहुत मिलती-जुलती हैं। कभी-कभी छात्र इन ध्वनियों के उच्चारण में अंतर को समझ नहीं पाते और अशुद्ध उच्चारण करते हैं जैसे–'श' को 'स' और 'स' को 'श' बोलना।

'श' को 'स' बोलने के कुछ उदाहरण हैं-

'शरीर' के स्थान पर 'सरीर'

'शीतल' के स्थान पर 'सीतल'

'शोभा' के स्थान पर 'सोभा'

इसी प्रकार 'स' को 'श' बोलने के कुछ उदाहरण हैं–

'स्वयं' के स्थान पर 'शवयं'

'संपूर्ण' के स्थान पर 'शंपूर्ण'

'सोर' के स्थान पर 'शारे'

इसी तरह 'व' एवं 'ब' की ध्वनियों में इसी प्रकार भ्रम हो जाता है जैसे–'विद्या' के स्थान पर 'विद्या' 'बिकार' के स्थान पर 'विस्तार' तथा 'वासना' के स्थान पर 'बासना' आदि। विदेशी भाषा की ध्वनियाँ भी उच्चारण पर प्रभाव डालती है। उर्दू, फारसी आदि भाषाओं के जो शब्द हिंदी भाषा में स्वीकृत हो चुके हैं, उनका हिंदी उच्चारण निर्धारित हो चुका है परंतु शिक्षार्थी उनके विदेशी भाषा की ध्वनियों में उच्चारण कर जाते हैं। शिक्षार्थी प्राय: 'जरूरी' को 'ज़रूरी' 'इजाजत को 'इजाज़त' और फिक्र को फ़िक्र कह जाते हैं। आज हिंदी भाषा में ये उच्चारण मान्यता प्राप्त है। यदि शिक्षार्थी इन शब्दों के मूलरूप का उच्चारण करें तो उसे अशुद्ध उच्चारण नहीं कहा जा सकता लेकिन देखने में प्राय: यह आया है कि कई बार अशुद्ध उच्चारण से अर्थ का अनर्थ हो जाता है उदाहरणार्थ–निम्नलिखित दो शब्द का उच्चारण इस तरह से सुना जा सकता है–

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1. 'जरा' - 'ज़रा'
2. 'ख़ाना' - 'खाना'

यहाँ पर 'जरा' शब्द का अर्थ है बुढ़ापा और 'ज़रा' शब्द का अर्थ है थोड़ा। इसी प्रकार 'ख़ाना' शब्द का अर्थ है अलमारी का हिस्सा अर्थात् शेल्फ और 'खाना' का अर्थ है भोजन। यदि यह कहा जाए कि 'ख़ाने' में पुस्तक रखी है तो इसका अर्थ हो जाएगा कि भोजन में पुस्तक रखी है। उपर्युक्त शब्दों के अलग-अलग उच्चारण की बात यहाँ की गई लेकिन क्या शब्दों के सही उच्चारण से पूरे वाक्य का उच्चारण शुद्ध हो सकता है? शायद ऐसा संभव नहीं है। शब्द का उच्चारण शुद्ध होते हुए बलाघात एवं अनुतान के उचित पालन के अभाव में अर्थ में अंतर आ सकता है। इस तथ्य को और स्पष्ट करने के लिए यहाँ एक उदाहरण के द्वारा समझा जा सकता है।

"मैं **कल** बाज़ार जाऊँगा।"

इसका अर्थ तो यह हुआ कि हम कल ही **बाज़ार जाएँगे**, कभी और नहीं।

मैं कल बाज़ार जाऊँगा।
जाएंगे और कहीं नहीं।

उपर्युक्त उदाहरणों के आधार पर यह प्रतीत होता है कि वाक्य में अलग-अलग शब्दों पर बल देने से अर्थ बदल जाता है।

इसी प्रकार अनुतान का उच्चारण पर किस तरह का प्रभाव पड़ता है इसे भी एक उदाहरण से समझा जा सकता है।

'तुमने पुस्तक पढ़ ली'।

इस वाक्य को दो प्रकार से उच्चारित किया जा सकता है।

'तुमने पुस्तक पढ़ ली?

इस वाक्य के उच्चारण से ज्ञात होता है कि एक प्रश्न पूछा जा रहा है।

'तुमने पुस्तक पढ़ ली?

इस वाक्य से लगता है कि वक्ता को इस बात का विश्वास ही नहीं हो रहा है कि पुस्तक पढ़ ली गई है। इन उदाहरणों के द्वारा यह पता चलता है कि अनुतान से अर्थ किस प्रकार बदलता रहता है।

उपरोक्त तथ्यों और उदाहरणों के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षार्थी को कक्षा-कक्ष और परिवार-समाज में शुद्ध उच्चारण सुनने के लिए अधिक से अधिक अवसर प्राप्त होने चाहिए।

लेकिन यह तभी संभव होगा यदि शिक्षक का अपना स्वयं का उच्चारण शुद्ध हो। शिक्षक भाषा शिक्षण में गद्य और कविता पाठों के आदर्श वाचन तथा अपने शिक्षण के द्वारा शिक्षार्थी को शुद्धता के साथ ही शिक्षार्थी को भी विशेष ध्यान देता रहे। जहाँ कहीं भी उसे अपना उच्चारण अशुद्ध लगे, उसका तुरंत सुधार करे। शुद्ध उच्चारण भाषा विकास का एक आवश्यक एवं अनिवार्य तत्त्व है और इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों ही अपने उच्चारण के प्रति सजग और जागरूक रहें।

❑❑❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाषा शिक्षण वास्तव में सहज, सुलभ एवं सुग्राह्य होना चाहिए। वर्तमान में भाषा शिक्षण की अनेक विधियाँ प्रयोग में लाई जा रही हैं। इन शिक्षण विधियों में भाषायी कौशल के किसी एक पक्ष पर विशेष बल होता है तथा अन्य कौशलों का अपेक्षाकृत न्यून विकास होता है। परंतु हिंदी भाषा एवं साहित्य के स्वाभाविक शिक्षण हेतु तीन विशेष पक्षों पर विचार किया जा सकता है--अनुभूति, अभिव्यक्ति एवं सृजन। ये बहुत हद तक चारों भाषायी कौशलों को समाहित किए हुए है। अतः उक्त आलेख के माध्यम से उपरोक्त तीनों पक्षों पर विस्तारपूर्वक विचार किया गया है।

हिंदी का सहज शिक्षण

विद्यानंद पाण्डेय*

हिंदी को मातृभाषा या राष्ट्रभाषा मानने में भले ही कोई विवाद हो परंतु भारतवर्ष के बहुसंख्यक वर्ग की सरल, सहज एवं सुगम अभिव्यक्ति का माध्यम मानने में कोई विवाद नहीं है। इसके प्रचार-प्रसार तथा उन्नयन में सरकारी तंत्र, स्वायत्तसेवी संगठनों, संस्थाओं के अतिरिक्त स्तुत्य आचार्यों एवं विद्वानों का भी योगदान रहा है। भारतीय शिक्षण संस्थाओं में इसका विधिवत् प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। शिक्षक प्रशिक्षण तकनीक के माध्यम से इसके अध्यापन की एक नई शैली प्रकाश में आ रही है जो निश्चित रूप से 'हरबर्ट' एवं 'ब्लूम' द्वारा प्रतिपादित प्रशिक्षण कला पर आधारित है। शिक्षक-प्रशिक्षक होने के कारण छात्रों-छात्राध्यापकों द्वारा यह शिकायत सुनने को मिलती है कि भाषा एवं साहित्य के शिक्षण में नीरसता आती जा रही है। छात्र केंद्रित शिक्षा की अवधारणा तथा पाश्चात्य शिक्षण कला के प्रयोग ने शिक्षक की स्वाभाविकता को निगलना शुरू कर दिया है। प्रशिक्षण संस्थाएँ इस उत्सवधर्मी देश में अभ्यास शिक्षण को एक त्योहार की तरह मनाती जा रही हैं उसे शिक्षकीय गुणवत्ता संवर्धन का विषय नहीं बना पातीं। केवल दस-बीस अभ्यास पाठों की रचना कर एक तकनीकी प्रयोग की परंपरा आगे बढ़ा देती हैं। इसीलिए शिक्षक बनने के बाद अभ्यासकाल की शिक्षण विधि न तो प्रयोग में आ पाती है न व्यावहारिक रूप से अपनाई जाती है।

ध्यान देने की बात यह है कि विज्ञान, मानविकी, सामाजिक विषय, वाणिज्य, संगीत या

*प्रवक्ता, बी.टी.टी.सी. गांधी विद्या मंदिर, सरदार शहर, राजस्थान।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कला की तरह भाषा की प्रकृति नहीं है अतः भाषा का शिक्षण यंत्रवत् या औपचारिक बंधनों में रहकर नहीं किया जा सकता। भाषा अभ्यास के द्वारा शुद्ध और परिमार्जित तो हो सकती है परंतु हृदय की गहराई तक जाकर न तो संवदेन का विषय बन सकती है और न ही संप्रेषण की चारुता निश्चित कर सकती है। भाषा की प्रकृति के अनुसार शिक्षण की ब्यूह रचना तैयार करनी होगी। इसलिए भाषा एवं साहित्य के स्वाभाविक शिक्षण हेतु तीन विशेष पक्षों पर विचार किया जा सकता है–अनुभूति, अभिव्यक्ति एवं सृजन। अनुभूति का सबसे गहरा संबंध संवेदना से होता है। प्राकृतिक उद्दीपनों से हमारी संवेदनाएँ प्रभावित होती हैं और हृदय पक्ष उनसे संस्कारित होता है। यह संस्करण ही अनुभूति है। दुर्भाग्य से हमारी वर्तमान शिक्षण तकनीक में इस भाषायी पक्ष पर न तो चर्चा की गई है और न ही इसके प्रशिक्षण का औचित्य बताया गया है। स्थूल शब्दों के अर्थ बताकर ज्ञानात्मक पक्ष का विकास तो किया जा सकता है पर हृदय की संवेदशनशीलता को उदात्त नहीं किया जा सकता। एक बालक 'गाय हमारी माता है' इस वाक्य को याद तो कर लेगा किंतु 'गाय' को 'काऊ' या 'गऊ' के रूप में अनूदित करने के बाद 'माता' को 'मदर' के रूप में स्वीकार करे शायद नहीं और 'मम्मी के रूप में तो कदापि नहीं। क्योंकि गाय के प्रति माता की जो अनुभूति उसके हृदय पक्ष को उदात्त बना रही है वह 'काऊ' के रूप में 'मदर' या 'मम्मी' जैसे शब्द नहीं बना सकते। यहाँ बुद्धि नहीं हृदय की संवेदना को प्रशिक्षण देना होगा।

'जलज' का अर्थ कमल है क्योंकि वह जल में पैदा होता है परंतु बच्चे को यह बताना कठिन है कि जलज का अर्थ मछली, शैवाल या कायी क्यों नहीं है। ऐसे तथ्य व्याकरण पढ़ाने से नहीं अपितु मन की कोमल कल्पनाओं को उभारने से समझ में आते हैं। जिनका प्रशिक्षण नहीं दिया जा सकता, ऐसे तथ्य स्वयंसंवेद्य होते हैं। एक कविता है–"जिंदगी का संतुलन हूँ, मैं सुमन हूँ"। यह दार्शनिक अर्थ केवल शब्द प्रयोग से स्पष्ट नहीं हो सकता। प्राथमिक स्तर के बच्चे इसे हृदयंगम नहीं कर सकते। प्रेमचंद की कहानियों एवं उपन्यासों की भाषा में चमत्कारिक शब्दों का भ्रमजाल नहीं है। छोटे वाक्य, सरल शब्द, सीधे अर्थ एवं मन की गहराई तक उतरने वाले भाव ही उन्हें जीवन के यथार्थ धरातल पर खड़ा करते हैं और वे उपन्यास सम्राट कहे जाते हैं। पाण्डित्य प्रधान तथा कठिन शब्दों की प्रयोगधर्मिता से जुड़े, आचार्य चतुरसेन को उपन्यास सम्राट नहीं कहा जाता। कबीर-सूर-तुलसी-नानक-रैदास के भजन एवं पद आज भी निरक्षर तथा अनपढ़ लोगों की ज़बान पर हैं परंतु छंदमुक्त रचना करने वाले कवियों की पंक्तियाँ लोग भूलते जा रहे हैं। कारण है–गेयता एवं रसात्मकता का अभाव तथा लोकजीवन की संवेदना को न समझना और ये बातें हमारी अनुभूति से जुड़ी है।

दूसरा भाषायी पक्ष अभिव्यक्ति का है। इसके दो रूप हैं–लिखित एवं मौखिक। आधुनिक प्रशिक्षण कला की दृष्टि से अभिव्यक्ति को कौशल तो माना गया है परंतु इसके प्रशिक्षण विद्या की चर्चा नहीं की गई है। ज्ञानात्मक पक्ष

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के पुष्ट होने पर शब्दार्थ का धरातलीय प्रयोग ही अभिव्यक्ति है। किसी छात्र को दस-पाँच समानार्थी शब्द बताया जा सकता है वह उनका प्रयोग भी करता है किंतु प्रयोग में शुद्धता तो निश्चित की जा सकती है—साधुता नहीं। प्रयोग का औचित्य-आकलन ही सच्ची अभिव्यक्ति है। जल, पानी, नीर, वारि, अंबु के प्रयोग एक समान नहीं हो सकते। आँख, नेत्र, नयन, चक्षु, लोचन के प्रयोग भी एक समान करने में भाषा की चारूता समाप्त हो जाएगी। आँख एवं नेत्र का प्रयोग देखने के लिए ठीक है परंतु नयन, चक्षु, लोचन का प्रयोग श्रृंगारिक छवि के लिए ठीक है। पीने के सामान्य अर्थ में जल एवं पानी का प्रयोग भाषायी लालित्य को समाप्त कर सकते हैं। अर्थ का सौंदर्य एवं साहित्यिक सौष्ठव बनाए रखने के लिए भाषायी अभिव्यक्ति के प्रशिक्षण की कोई तकनीक व्यवहार में नहीं आई है।

लाक्षणिक प्रयोग, मुहावरों एवं लोकाक्तियों में यह तथ्य भले ही महत्त्व न रखता हो किंतु निबंध एवं कहानी के प्रशिक्षण में यह नितांत सजगता पूर्ण होना चाहिए। साहित्यिक गोष्ठियों में उद्घोषक द्वारा की जाने वाली अभिव्यक्ति अर्थ की दृष्टि से उतना महत्त्व नहीं रखती जितना शब्द के उचित प्रयोग की दृष्टि से रखती है। यहाँ व्याकरणिक शुद्धता आवश्यक नहीं अपितु शब्द के उचित एवं प्रासंगिक अवबोध के साथ अर्थ की प्रतीति आवश्यक है। प्रशिक्षण संस्थाओं में छात्रों को चिंतनपूर्ण लेखन या स्वतंत्र कथन का बहुत कम अवसर मिलता है जहाँ वे अभिव्यक्ति का विकास कर सकें।

तीसरा पक्ष सृजन का है। सृजन बहुत अंशों तक नैसर्गिक शक्ति है। यह एक विशिष्ट कौशल तथा कला के रूप में प्रस्फुटित होता है अभ्यास तथा अध्ययन के माध्यम से इसे पैदा नहीं किया जा सकता अपितु विकास अवश्य किया जा सकता है। सृजन की गहराई अभिव्यक्ति या अनुभूति की अपेक्षा अधिक होती है। यह प्रकृति के बिंबों को आत्मसात् करने के बाद उद्गार का रूप ले लेती है। सृजन का प्रशिक्षण नहीं दिया जा सकता है पर प्रशिक्षण के द्वारा सृजन के प्रति जिज्ञासा बढ़ाई जा सकती है। कल्पना एवं चिंतन के तालमेल से भी सृजन को विकसित किया जा सकता है। कक्षा में पढ़ने वाला छात्र पाठ्यक्रम, परीक्षा, शिक्षक, समयचक्र, पुस्तक आदि औपचारिक सीमाओं में बँधा होता है। बालकेंद्रित शिक्षा का नारा देकर हम बालक को रचनाकार नहीं बना सकते, उसे सृजनशील नहीं बना सकते। उसी प्रकार प्रशिक्षण में पाठ्योजन की यंत्रवत्ता में बाँधकर साहित्य का सरस शिक्षण नहीं किया जा सकता। इसके लिए सीमाओं और औपचारिकताओं से मुक्त होकर स्वाभाविक शिक्षण करना होगा। छात्र को सोचने एवं अभिव्यक्ति करने का अवसर प्रदान करना होगा। बादल सभी देखते हैं पर सृजनशीलता के अभाव में कविता सभी नहीं लिख सकते। रचना की दृष्टि से भाषायी लावण्य आवश्यक है परंतु उसकी विशिष्ट पहचान के लिए अनुकरण नहीं अपितु मौलिकता की ज़रूरत पड़ती हैं। "लीक छाँड़ि तीनों चलैं शायर, सिंह, सपूत"। साहित्यकार भी शायर या लेखक बन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सकता है। उसके लिए अलग मार्ग खोजना होगा। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी सृजनशील वही होता है जिसमें मौलिकता के साथ-साथ सटीक चिंतन करने की शक्ति हो। सृजन भी बाहरी संसाधनों के उपयोग या अभ्यास और प्रशिक्षण से नहीं हो सकता। सृजन मन की गहराई से उत्पन्न होते हैं।

इस तरह अनुभूति, अभिव्यक्ति एवं सृजन तीनों एक-दूसरे से जुड़े हैं। भाषा एवं साहित्य में भावपक्ष के विकास के लिए प्रशिक्षण की औपचारिकता एवं तकनीकी यंत्रबद्धता से मुक्त होना होगा। अच्छी शैली, पर्याप्त शब्द भण्डार तथा उच्चारण वाचन की कला में निपुणता प्राप्त व्यक्ति कला पक्ष का विकास तो कर सकता है परंतु भावपक्ष के विकास के लिए कल्पना, जिज्ञासा, हृदय-संवेदन का होना आवश्यक है। हमें ध्यान रखना चाहिए कि अधिकांश सृजनशील रचनाकारों या लेखकों की औपचारिक शिक्षा न तो अधिक रही है, न ही दीर्घकालिक रही है और न तो साहित्य सर्जना में उन्हें किसी ने प्रेरित किया या प्रशिक्षण दिया। ठीक उसी तरह प्रशिक्षण संस्थाओं में भाषा एवं साहित्य शिक्षण को सरस, सरल, सुबोध एवं सुग्राह्य बनाने के लिए उन प्रशिक्षण तकनीकियों और विधियों से मुक्त होना पड़ेगा जो पाश्चात्य सिद्धांतों पर आधारित हैं, नीरस हैं एवं गणित या कविता दोनों को एक ही तरह पढ़ाने में प्रयुक्त होती है।

प्रशिक्षण संस्थाएँ वर्तमान समय में जिस प्रकार पुस्तकीय प्रणीत शिक्षण-विधियों का प्रयोग भाषा तथा साहित्य में कर रही हैं उनमें यह दोष है कि केवल शब्दों के अर्थ पूछे जाएँ और छात्र को अर्थबोध करा दिया जाए। भाषा में शब्दबोध, अर्थबोध के साथ-साथ भावबोध का होना भी आवश्यक है और इसके लिए विभिन्न प्रश्नों की आवश्यकता नहीं होती अपितु प्रासंगिक गहराई और रचना की गंभीरता को समझना आवश्यक होता है। प्रशिक्षण के समय छात्राध्यापक पूर्व निर्धारित पाठ योजना प्रक्रिया पर ही ध्यान केंद्रित कर प्रश्न पूछता रह जाता है प्रश्न पूछकर रस का आनंद, छंद की चारूता तथा अर्थ की सुंदरता को नहीं समझा जा सकता इसके लिए मानसिक तथा वैचारिक धरातल पर एक अलग उपक्रम बनाना पड़ता है जहाँ ज्ञान-भाव-क्रिया तीनों को एक साथ नियोजित कर सकें। इस नियोजन में अनुभूति, अभिव्यक्ति एवं सृजन का विनियोग होना चाहिए जहाँ कल्पना, संवदेना तथा जिज्ञासा का साम्राज्य है।

□□□

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विद्यालयों में शिक्षकों का लक्ष्य न केवल बच्चों को पाठ्यक्रम से संबंधित पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित करना है बल्कि उन्हें पाठ्यक्रम से बाहर की पुस्तकें पढ़ने के लिए उत्साहित करना भी है। पुस्तकें न केवल बच्चों की ज्ञानवृद्धि करती हैं बल्कि उन्हें आस-पास के वातावरण की जानकारी भी देती हैं। एक बार नई-नई पुस्तकें पढ़ने के लिए बच्चों में ललक जाग्रत हो जाए तो पुस्तकों से उनकी दोस्ती होते देर नहीं लगेगी। नई-नई पुस्तकें पढ़ने के लिए बच्चों में रुचि कैसे जागृत करें? यही जानने के लिए पढ़िए यह लेख–पुस्तकों से दोस्ती।

पुस्तकों से दोस्ती

राजेश उत्साही*

आजकल प्रत्येक स्कूल में किसी-न-किसी योजना के अंतर्गत पुस्तकें दी जाती हैं। हो सकता है कि आपके स्कूल में परंपरागत रूप का पुस्तकालय न हो। लेकिन सामान्य तौर पर जहाँ किताबें हों हम उसे पुस्तकालय की संज्ञा दे ही सकते हैं। ज़रूरी नहीं है कि किताबों के लिए अलग कमरे तथा टेबिल-कुर्सी का ही इंतज़ाम हो। यह भी ज़रूरी नहीं है कि इन पुस्तकों को संभालने के लिए अलग व्यक्ति हो। ऐसे पुस्तकालय के लिए सबसे ज़रूरी है किताबें, अच्छी किताबें, और पढ़ने की इच्छा।

यदि आपके स्कूल में ऐसा पुस्तकालय है तो आप उसे बोझ मत समझिए, बल्कि वह आपका बोझ हल्का करेगा। मेरा मतलब है बच्चों को पढ़ाने के आपके बोझ को हल्का करेगा। या यूँ कह सकते हैं कि आपके पढ़ाने के तरीके को और अधिक रोचक बना देगा। अब अगर पढ़ाना रोचक बन जाए तो बच्चे भी रुचिपूर्वक पढ़ेंगे और पढ़ाना आप को बोझ नहीं लगेगा।

आमतौर पर सामान्य स्कूलों के बच्चों को अपनी पाठ्यपुस्तक के अलावा कोई और किताब देखने को भी नहीं मिलती है, पढ़ने की बात तो दूर। बच्चे साल-भर अपनी दो-तीन पाठ्यपुस्तकों को ही उलटते-पुलटते रहते हैं। अधिक-से-अधिक कोई ज़्यादा जिज्ञासु हुआ तो वह अपने से ऊपर वाली कक्षा की कुछ किताबें पढ़ डालता है। ज़ाहिर है कि इन पुस्तकों में उनकी

* नालंदा, बी-1/84, सेक्टर बी, अलीगंज, लखनऊ द्वारा प्रकाशित, शैक्षिक संवाद पत्रिका, *प्रारंभ* वर्ष-6, अंक-3 (जुलाई-सितंबर 2008) से साभार।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रुचि एकाध महीने से ज़्यादा नहीं रह पाती। अंततः वे किताबें परीक्षा देने के लिए पढ़ने का सबब बनकर रह जाती हैं। ऐसे में, स्कूल में, अन्य पुस्तकों का आना या उनका होना बच्चों के लिए एक अतिरिक्त आकर्षण बन सकता है। यह आकर्षण इस बात पर भी निर्भर करता है कि उन किताबों तक बच्चों की पहुँच कितनी है।

साधन संपन्न स्कूलों में ऐसी किताबों की जगह पुस्तकालय में होती है। पुस्तकालय में जाने का एक खास समय होता है। लेकिन सामान्यतः हर बच्चा पुस्तकालय जाए या उसका जाना अनिवार्य हो ऐसा नहीं होता। यदि अनिवार्य भी हो तो वह अपनी अध्यापिक/अध्यापक के आदेश के दबाव में वहाँ जाते हैं। ऐसे में वे बच्चे ही पुस्तकालय जाते हैं या उसका उपयोग कर पाते हैं जिनमें पढ़ने की आदत पहले से ही हो उनके घरेलू वातावरण ने पैदा की हो। शेष के लिए वह एक अपरिचित जगह ही बनी रहती है।

जहाँ पुस्तकालय के साधनों का अभाव है वहाँ यह अभाव ही बच्चों के लिए लाभदायक हो सकता है। यदि स्कूल में किताबें हैं तो बच्चों को उनके पास लाने के बजाय किताबों को बच्चों के पास ले जाएँ। यानि किताबों को उनकी कक्षा में ही रख लें। आप शिक्षक हैं और संयोग से ऐसे स्कूल में ही शिक्षक हैं जहाँ इस तरह की सुविधा का अभाव है, और अगर आप ऐसा क्रांतिकारी निर्णय करते हैं तो आप निश्चित रूप से एक अच्छे अध्यापक की भूमिका निभा रहे हैं। यह निर्णय करके आप कुछ चुनौतियाँ भी स्वीकार कर रहे हैं। और बच्चों को एक बंधी-बंधाई दुनिया से मुक्त करना किसी क्रांति से कम नहीं है। और आप इसके लिए बधाई के पात्र हैं। क्योंकि ऐसा करके आपने अपने लिए कई सारे रास्ते खोज लिए हैं, आगे चलकर अपनी बधाई के और अधिक अवसर जुटा सकते हैं।

किताबें कक्षा में

आपके स्कूल में जो किताबें हैं उन्हें बच्चों के आयुवर्ग या कक्षा के हिसाब से दो-तीन वर्गों में बाँट लें। ये वर्ग छह से आठ, आठ से बारह, और बारह से ऊपर की आयु के बच्चों के हो सकते हैं। वर्ग बच्चों की कक्षा के हिसाब से भी हो सकते हैं। जैसे पहली से तीसरी, चौथी से आठवीं, और आठवीं से ऊपर। वर्ग किताबों, के प्रकार या विषय के हिसाब से भी हो सकते हैं। जैसे चित्रकथाओं की किताबें, केवल चित्र वाली किताबें, कहानी की किताबें, कविता की किताबें या फिर जानकारी वाली किताबें। इन किताबों को बनाए गए वर्ग के अनुसार अलग-अलग करके कक्षाओं में रखें। यदि रखने के लिए कोई इंतज़ाम न हो तो आप गत्ते के पुराने खोकों का उपयोग कर सकते हैं। ये खोखे किसी किराने की दुकान से ले सकते हैं।

किताबों का उपयोग

अब यह कोशिश भी हो रही है कि पुस्तकालय के लिए एक पीरियड अलग से लगाया जाए। अगर यह हो पाता है तो बहुत ही अच्छा है। आप इस पीरियड का उपयोग बच्चों के बीच

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किताबों की बातें करने के लिए कर सकते हैं। अक्सर ऐसा होता है कि स्कूल में कभी कोई शिक्षक नहीं आया तो पीरियड खाली रहता है। इस खाली पीरियड का उपयोग बच्चे किताबें पढ़ने के लिए कर सकते हैं। उन्हें अपनी कक्षा में ही बैठना है, कहीं जाना नहीं है। कई बार ऐसा भी होता है कि आपका पढ़ाने का मन नहीं है या बच्चों का पढ़ने का मन नहीं है। ऐसे में बच्चों के मनोरंजन के लिए इन किताबों का उपयोग किया जा सकता है। चूँकि ये किताबें पाठ्यपुस्तक नहीं हैं, न ही बच्चों को इन्हें पढ़कर कोई परीक्षा देनी है इसलिए वे तनाव रहित होकर इन्हें पढ़ने का आनंद लेंगे। आप निश्चित रहें आनंद के साथ-साथ वे इन किताबों को पढ़ते हुए भी कुछ-न-कुछ सीख ही रहे होंगे जो उन्हें न केवल स्कूल की परीक्षा में बल्कि जीवन की परीक्षा में भी मददगार होगा।

पाठ्यपुस्तक का कोई पाठ या अध्याय पढ़ाते हुए कभी-कभी महसूस किया होगा कि उससे संबंधित कुछ और जानकारी बच्चों को बताने की ज़रूरत है। संभव है कक्षा में रखी किताबों में ऐसी भी कोई किताब हो जिसका उपयोग इस उद्देश्य से आप कर सकें। उदाहरण के लिए यदि आप सुभद्रा कुमारी चौहान की प्रसिद्ध कविता 'खूब लड़ी मर्दानी वो तो झांसी वाली रानी थी' पढ़ा रहे हैं, तो इस कविता के आगे-पीछे के संदर्भ की कोई पुस्तक आप बच्चों को पढ़ने के लिए कह सकते हैं। भाषा के किसी पाठ में मुहावरे या कहावतों के अभ्यास के लिए आप बच्चों से कह सकते हैं कि वे कहानी की कोई ऐसी किताब ढूँढ़ें जिसमें कहावतों और मुहावरों का उपयोग किया गया है।

ऐसे तमाम उदाहरण हो सकते हैं जिनमें आप इन किताबों का उपयोग रोज़ के कक्षा अध्यापन के दौरान कर सकते हैं। ज़रूरत होगी अपने-अपने दिमाग के झरोखे को खोलने की। यह तो आप जानते है कि घर में भी ताज़ी हवा तभी आती है जब हम खिड़कियाँ खुली रखते हैं। यानि हवा के वेंटिलेशन या आवागमन की व्यवस्था रखते हैं।

बच्चों के बीच इन किताबों से आप विभिन्न गतिविधियाँ बच्चों में पढ़ने-लिखने, उच्चारण करने, नए शब्दों या मुहावरों-कहावतों से परिचित होने, अभिव्यक्ति कौशल को बढ़ाने उनकी तर्कशीलता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करने में मदद करेंगी। (राज्य शिक्षा केंद्र म.प्र. ने पुस्तकालय आधारित गतिविधियों की एक मार्गदर्शिका 'किताबों की किताब' का प्रकाशन किया है। बच्चों के बीच गतिविधियाँ कराने के लिए आप इसका उपयोग कर सकते हैं।) आप स्वयं भी कई गतिविधियाँ सोच सकते हैं।

पुस्तकालय का संचालन

परंपरागत पुस्तकालय के संदर्भ में चर्चा छिड़ने पर किताबें और फर्नीचर के बाद हमेशा उसे संभालने या संचालित करने वाले व्यक्ति का जिक्र आता है। और कई बार ऐसे किसी व्यक्ति के उपलब्ध न होने पर किताबें आदि होने पर भी उनका उपयोग नहीं हो पाता। जिस तरह के पुस्तकालय की चर्चा हम कर रहे हैं उसमें अलग से व्यक्ति होने की अनिवार्यता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उतनी नहीं है जितनी उसमें आपकी तथा बच्चों की भागीदारी बढ़ाने की है।

अगर व्यक्ति हो तो अच्छी बात है। न हो तो पुस्तकालय की गतिविधि संचालित करने के लिए हर कक्षा में एक या दो बच्चों को यह ज़िम्मेदारी इन बच्चों में नेतृत्व का गुण विकसित करने में भी सहायक होगी। बारी-बारी से कुछ बच्चों को किताबों की साज-संभाल की ज़िम्मेदारी भी दी जा सकती है। आप जब एक बार एक कदम उठाएंगे तो दूसरे कदम के लिए खुदबखुद रास्ता खुल जाएगा। आप एक बार इन किताबों को अपने आस-पास फैलाकर उनके बीच कुछ देर बैठ कर देखें, नए-नए विचार स्वयं ही चलकर आप तक पहुँचेंगे। जी हाँ, दोस्ती केवल व्यक्तियों से ही नहीं पुस्तकों से भी की जा सकती है। कहते हैं पुस्तकें इंसान की सबसे अच्छी मित्र होती हैं। पुस्तकों से दोस्ती करें। बच्चों को पढ़ाने के आपके बोझ को हल्का करेगा। या यूँ कह सकते हैं कि आपके पढ़ाने के तरीके को और अधिक रोचक बना देगा। अब अगर पढ़ाना रोचक बन जाए तो बच्चे भी रुचिपूर्वक पढ़ेंगे और पढ़ाना आप को बोझ नहीं लगेगा।

आमतौर पर सामान्य स्कूलों के बच्चों को अपनी पाठ्यपुस्तक के अलावा कोई और किताब देखने को भी नहीं मिलती है, पढ़ने की बात तो दूर। बच्चे साल-भर अपनी दो-तीन पाठ्यपुस्तकों को ही उलटते-पुलटते रहते हैं। अधिक-से-अधिक कोई ज़्यादा जिज्ञासु हुआ तो वह अपने से ऊपर वाली कक्षा की कुछ किताबें पढ़ डालता है। ज़ाहिर है कि इन पुस्तकों में उनकी रुचि एकाध महीने से ज़्यादा नहीं रह पाती। अंततः वे किताबें परीक्षा देने के लिए पढ़ने का सबब बनकर रह जाती है। ऐसे में, स्कूल में, अन्य पुस्तकों का आना या उनका होना बच्चों के लिए एक अतिरिक्त आकर्षण बन सकता है। यह आकर्षण इस बात पर भी निर्भर करता है कि उन किताबों तक बच्चों की पहुँच कितनी है।

❑❑❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्यापन--वह भी ऐसे विद्यार्थियों को जिनकी विषय में बिल्कुल भी रुचि न हो, निश्चित ही चुनौतीपूर्ण होता है। ऐसे में शिक्षक किस तरह सही मार्गदर्शन, धैर्य, और दिशानिर्देशन से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बनाकर उनकी विषय में रुचि जगा सकते हैं। ऐसा ही एक अनुभव है यह लेख।

भाषा शिक्षण–एक अनुभव

राधा*

अध्यापन का कार्य एक चुनौतीपूर्ण कार्य है और जब ऐसे विद्यार्थियों को पढ़ाना हो जिनकी उस विषय में बिल्कुल भी रुचि नहीं है तो चुनौती अत्यधिक जटिल बन जाती है। ऐसी ही एक चुनौती का सामना मुझे भी करना पड़ा।

बात उस समय की है जब मुझे विश्वविद्यालय में अध्यापन करने का अवसर मिला। विश्वविद्यालय में कक्षा का पहला दिन, मन में एक अजीब-सा भय, मैं कैसा पढ़ाऊँगी, पढ़ा भी पाऊँगी या नहीं, क्या मैं एक अच्छी शिक्षिका बन पाऊँगी? विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बनाए रख पाऊँगी, क्योंकि मेरा विषय भाषा शिक्षण का था। इस बात से विश्वविद्यालयी प्रशासन ने मुझे पहले से ही अवगत करा दिया था कि इस विश्वविद्यालय में हिंदी भाषा सीखने में किसी भी विद्यार्थी की रुचि नहीं है। इसलिए मेरे लिए यह कार्य बहुत चुनौतीपूर्ण भरा भी था। इतने में ही एक वरिष्ठ शिक्षिका आईं और मुझे कक्षा कक्ष की ओर ले गईं। कक्षा में प्रवेश करते ही उन्होंने विद्यार्थियों को मेरा परिचय दिया और कहा आज से आपको ये हिंदी भाषा पढ़ाएँगी कहते हुए वह चली गईं। सभी विद्यार्थी बड़ी अचरज भरी निगाहों से मेरी तरफ देख रहे थे। सबकी निगाहों में कुछ-न-कुछ सवाल तैर रहे थे। बड़े ही शांत और उत्साहहीन ढ़ंग से उन्होंने मेरा स्वागत किया।

*4/276, चिरंजीव विहार, गाजियाबाद-201002

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैंने उनसे हिंदी विषय के बारे में उनके विचार पूछने शुरू किए और उनका परिचय लेने के बाद उनकी रुचि और अरुचि के विषय में जानकारी प्राप्त की। उनके सवाल और विचार इस प्रकार थे–

- हम भाषा क्यों पढ़ें?
- इससे हमें क्या लाभ होगा?
- उच्च शिक्षा में भाषा पढ़ने का क्या औचित्य है, यह हमारे लिए कैसे उपयोगी साबित होगी?
- हमें संदर्भित विषय पर फोकस करना है भाषा सीखकर क्या करेंगे?
- अनिवार्य प्रश्न पत्र होने के कारण भाषा शिक्षण हमारी मजबूरी है।

मैंने बड़े उत्साह से उनके सवालों का स्वागत किया और कहा–अच्छा बताइए आपने अपने सवालों और विचारों को मुझ तक कैसे पहुँचाया? तब उन्होंने जवाब दिया, मैडम भाषा के माध्यम से। तब मैंने कहा, "देखिए मिल गया आपके प्रश्न का जवाब कि कोई भी भाषा हमें क्यों पढ़नी चाहिए। संसार में भाषा के अभाव में किसी भी प्रकार की अभिव्यक्ति संभव नहीं। इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि प्रत्येक भाषा का अपना महत्त्व होता है।" इसके बाद बातों-ही-बातों में अपनी भाषा और अन्य भाषाओं को महत्त्व देने पर चर्चा की। चर्चा के दौरान इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखा कि विद्यार्थियों के हृदय में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव जाग्रत हों। विशेष रूप से हिंदी के महत्त्व पर चर्चा की क्योंकि हिंदी भारत की संपर्क भाषा, राजभाषा, राष्ट्रीय भाषा, जनभाषा और राष्ट्र भाषा होने के साथ मेरा अध्यापन विषय भी था।

समय-समय पर विद्यार्थियों की राय जानकर तदनुसार शिक्षण में बदलाव किया क्योंकि मैं यह अच्छी तरह समझ चुकी थी कि छोटे बच्चों को तो आप कविता, कहानी और चुटकुले तथा खिलौनों से खेल-खेल में सीखा सकते हैं लेकिन विश्वविद्यालयी स्तर के विद्यार्थियों के साथ यह संभव नहीं। इसके लिए उनके आत्मविश्वास को जीतना, उनकी रुचि को जानना, शिक्षण किस प्रकार प्रभावी होगा यह समझना अनिवार्य होगा। नई-नई शिक्षण तकनीकों का प्रयोग शिक्षण के लिए करना होगा

इन विद्यार्थियों को हिंदी सिखाना बहुत चुनौतीपूर्ण कार्य था इसलिए बहुत सोच विचार कर भाषा शिक्षण का एक प्रारूप बनाया वह कुछ इस प्रकार था–

हिंदी या किसी भी भाषा को सीखने के लिए कुछ बातों का ध्यान रखा जाना बहुत अनिवार्य होता है वह हैं–

- स्तर-दर-स्तर आगे बढ़ना (ऐसा नहीं सोचना कि यह तो आपको आता ही होगा या यह तो आपको आना ही चाहिए।),
- स्पष्टता के साथ समझाना,
- अनावश्यक विस्तार या विश्लेषण से बचना,
- पूर्णतः आत्मसात करने का मौका देना,
- शिक्षण तकनीक पर विचार करते रहना,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- शिक्षक को सभी विद्यार्थियों को लेकर आगे बढ़ना होगा तथा प्रत्येक के मन तक पहुँचना होगा,
- बहुभाषिकता का संसाधन के रूप में उपयोग करना,
- समझने की सहज और स्वाभाविक प्रक्रिया का उपयोग करना।

उपरोक्त बिंदुओ को दृष्टिगत रखते हुए मैंने शिक्षण कार्य आरंभ किया। धीर–धीरे कक्षा में लगभग सभी विद्यार्थियों का मन कुछ-न-कुछ लगने लगा और कविता तथा कहानी या उपन्यास आदि पढ़ने में, उसके अर्थ को समझने में दिलचस्पी लेने लगे। तत्पश्चात् मैंने उनसे समझे गए अर्थ को लिखने के लिए कहा। ज़्यादातर विद्यार्थी बात तो कह पाते लेकिन वर्तनी पूरे वाक्य की गलत होती। फिर मैं उसी वाक्य को सही से लिखना सिखाती। अगली बार उनका वाक्य बिल्कुल सही तो नहीं होता पर वह 60 प्रतिशत सही लिख लेते और जब वह सही लिखते तो बहुत खुश होते। इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता और मुझे लिखकर दिखाते। इस तरह धीरे–धीरे वह व्यवहारिक हिंदी सीखने लगे और कुछ समय में सीख गए।

विद्यार्थियों की समझ और उनके उत्साह को बनाए रखने के लिए कक्षा में मैंने अलग–अलग विधियों को अपनाया। मुझे अपने अनुभव से यह बात समझ में आ गई थी कि विद्यार्थियों को कौन-सी विधियाँ अधिक रुचिकर लगती हैं। ऐसी ही कुछ सरल विधियों को अपनाते हुए शिक्षण आरंभ कर दिया। इस दौरान मैंने–

- खेल-ही-खेल में दैनिक जीवन से जुड़े हुए पक्षों को लिया,
- मैंने उनसे कहा इसके लिए आपको कुछ नहीं करना बस कक्षा में मैं जो भी कराती हूँ उसे अच्छी तरह से करना है बस लो आ गई भाषा,
- जैसे सोच रहे हैं समझ रहे हैं लिखिए, धीरे–धीरे सही लिख सकेंगे,
- अभ्यास करते रहने से पकड़ मजबूत बनने लगेगी,
- इस तरह कुछ समय के अंतराल पर जब अपने लिखे वाक्यों को पढ़ेंगे तब महसूस करेंगे इसे और भी अच्छी तरह लिखा जा सकता था। ओह! क्या यह मैंने लिखा है?

एक दिन एक छात्रा मेरे पास आई और रोने लगी। मैंने पूछा क्या हुआ? उसने कहा मैं नहीं सीख सकती। मुझे कुछ समझ नहीं आता। कैसे परीक्षा पास कर पाऊँगी? मुझे बहुत मुश्किल लग रहा है। मैंने कहा इसमें डरने की क्या बात है? आपको क्यों नहीं आएगा? मैं आपको सिखाऊँगी। मैंने उस छात्रा को कक्षा के बाद अतिरिक्त समय देना प्रारंभ किया। वर्णमाला से प्रारंभ करते हुए वर्णमाला का एक द्विभाषी चार्ट बनाया, जो कुछ इस तरह था–

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
a	aa	i	ee	u	oo	e	ai	o	au	ang	ah
क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	कः
ka	kaa	ki	kee	ku	koo	ke	kai	ko	kau	kan	kah
ख	खा	खि	खी	खु	खू	खे	खै	खो	खौ	खं	खः
kh	kha	khi	khee	khu	khoo	khe	khai	kho	khau	khan	khah
ग	गा	गि	गी	गु	गू	गे	गै	गो	गौ	गं	गः
g	ga	gi.	gee	gu	goo	ge	gai	go	gao	gan	gah

इस चार्ट की मदद से अभ्यास कराया तथा धीरे-धीरे सही उच्चारण और लिखना सिखाया। अब वह सामान्य व्यवहार के कुछ शब्द जोड़-जोड़ कर लिखने लगी। अँग्रेज़ी के शब्दों को भी हिंदी में लिखने लगी। मैं उसे एक दिन में पाँच शब्द से अधिक नहीं कराती। इससे उसकी झिझक मिटने लगी। आत्मविश्वास बनने लगा। मैंने कहा यदि आप कोई वाक्य बना रही हैं लेकिन सटीक हिंदी शब्द नहीं आ रहा है तब आप उसकी जगह अँग्रेज़ी शब्द या किसी अन्य भाषा का शब्द भी जो आपको आता है, अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए रख सकती हैं। इससे अर्थ तो स्पष्ट हो जाएगा तथा धीरे-धीरे शब्दों पर सही पकड़ बनने लगेगी। और ऐसा ही हुआ।

जो छात्रा हिंदी में एक शब्द नहीं लिख सकती थी वह अब सही तरीके से हिंदी लिखने लगी। हाँ कुछ वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ रहती पर मैं उन्हें ठीक कर उनका अभ्यास कराती अब वह सामान्य स्तर के बच्चों के स्तर तक पहुँचने लगी और भाषा सीखने का उसका उत्साह दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगा। पठन कौशल को विकसित करने के उद्देश्य से जब भी मैं विद्यार्थियों से कक्षा में पढ़ने के लिए कहती और सही से पढ़ने और उच्चारण करने का अभ्यास कराती तो वह बड़े ही उत्साह और जोश से कहती, मैडम मैं पढ़ूँगी और जब भी वह कक्षा में कुछ पढ़ने का आग्रह करती तो सभी छात्र उसके पढ़ने के ढंग को बहुत रुचि के साथ सुनते। उन्हें उसका पढ़ना बहुत रुचिकर लगता और वह बहुत खुश होती। इसके बाद कक्षा में भाषा सीखने और सही उच्चारण करने की मानो सभी विद्यार्थियों में होड़-सी लग जाती।

अध्यापन के इस अनुभव में मैंने विद्यार्थियों को सिखाया ही नहीं बल्कि उनसे बहुत कुछ सीखा भी। प्रत्येक विद्यार्थी कुछ-न-कुछ सीखना चाहता है बस, ज़रूरत है तो शिक्षक के सही मार्गदर्शन, धैर्य और दिशानिर्देशन की।

❑❑❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाषा संबंधी चारो कौशलों में लेखन कौशल का महत्वपूर्ण स्थान है। लेखन कौशल के विकास के लिए नित्य नई विधियों का प्रयोग आधुनिक भाषाओं में किया जाता है। ऐसी ही एक नवीन विधि को क्रियात्मक शोध के माध्यम से परखने का प्रयास प्रस्तुत शोध में किया गया है।

प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा लेखन कौशल का विकास—एक क्रियात्मक अनुसंधान

सरोज अग्रवाल*, सुरक्षा बंसल**

विचारों के शाब्दिक संप्रेषण में भाषा विशेषत: मातृभाषा एक सशक्त माध्यम है। संप्रेषण के माध्यम से भाषा मानसिक एवं बौद्धिक विकास को भी आधार देती है। संप्रेषण बालक के सांस्कृति एवं सामाजिक विकास, भाषा ज्ञान एवं भाषा नियंत्रण पर निर्भर करता है। शिक्षा का दायित्त्व बालक के व्यवहार में वांछित परिमार्जन करना होता है क्योंकि आरंभ में बालक के समस्त व्यवहार उसकी जन्मजात, नैसर्गिक प्रवृत्तियों द्वारा निर्धारित होते हैं। इस परिमार्जित व्यवहार के लिए भाषा ही एकमात्र साधन है क्योंकि भाषा बालक के क्रियात्मक, भावात्मक तथा ज्ञानात्मक पक्ष के विकास के लिए उत्तरदायी है। सामान्यत: शाब्दिक भाषा को सीखने के चार प्रमुख कौशल होते हैं–

1. श्रवण
2. वाचन
3. पठन
4. लेखन

उपरोक्त में केवल भाषा के माध्यम से ही एक पीढ़ी द्वारा संचित/प्राप्त किए गए अनुभव संरक्षित रखे जाते हैं तथा उन्हें एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरित किया जाता है।

परियोजना का महत्त्व

पूर्व में किए गए अनुसंधानों के आधार पर अधिकांश मनोवैज्ञानिक एवं भाषा विशेषज्ञ एक तथ्य से पूर्णत: सहमत हैं कि शैशवावस्था में

**वरिष्ठ प्रवक्ता*, दीवान कॉलिज ऑफ़ एजूकेशनल स्टडीज़, परतापुर बाई पास, मेरठ।
**दीवान कॉलिज ऑफ़ एजूकेशनल स्टडीज़, परतापुर बाई पास, मेरठ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाषण क्षमता का विकास तीव्र गति से होता है। बालक के शब्दकोष में वृद्धि तीव्र गति से होती है किंतु जहाँ तक लेखन का प्रश्न है इस कौशल के अर्जन में बालक को कठिनाई होती है। शारीरिक विकास के दृष्टिकोण से यदि इस कठिनाई के कारण को खोजा जाए तो हाथ की माँसपेशियों में पारस्परिक नियंत्रण इस कठिनाई के लिए एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में परिलक्षित होता है। अत: लेखन कौशल अधिगम हेतु माँसपेशियों में नियंत्रण और अक्षर के स्वरूप में पारस्परिक समन्वय एक आवश्यकता है। रूढ़िवादी विधि द्वारा लेखन रुचिपूर्ण न होकर भार का स्वरूप ले लेता है अत: आवश्यकता इस बात की है कि ऐसी कौशल विधि विकसित की जाए जो बालक के लिए रोचक और उसकी माँसपेशियों के नियंत्रण के अनुरूप हो। प्रस्तुत परियोजना में इसी तथ्य के मूल्यांकन का प्रयास किया गया है।

परियोजना के उद्देश्य

परियोजना का उद्देश्य प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा लेखन कौशल अर्जन हेतु ऐसी विधि का विकास करना है जो बालकों के लिए सुगम, रोचक एवं प्रभावी हो।

- विकसित विधि के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
- विकसित विधि के परिणामस्वरूप हुए परिवर्तन के स्तर का निर्धारण करना।

परियोजना की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत परियोजना इस परिकल्पना पर आधारित है कि वर्तमान में प्रचलित रूढ़िवादी लेखन कौशल अधिगम के लिए प्रयुक्त विधि अरुचिकर और अवैज्ञानिक है।

द्वितीय परिकल्पना यह है कि यदि मैं किसी ऐसी विधि को विकसित करूँ जिससे माँसपेशियों के प्रयोग में परिवर्तन के आधार पर शिक्षण कौशल सरल और रुचिकर हो जाए।

परियोजना का परिसीमन

शोधार्थी के पास उपलब्ध साधनों, समय सीमा एवं परियोजना में गहनता हेतु प्रस्तुत परियोजना को निम्न क्षेत्रों तक परिसीमित किया गया है–

1. उत्तर प्रदेश के प्राथमिक शिक्षा परिषद् के विद्यालय को लिया गया है।
2. भाषाओं में केवल हिंदी भाषा को लिया गया है।
3. भाषा के विभिन्न पक्षों में से केवल लेखन पक्ष को ही लिया गया है।

न्यादर्श चयन

न्यादर्श चयन स्तरीय दैवीय निदर्शन विधि द्वारा किया गया है जिसमें लिंगभेद के आधार पर पूर्ण जनसंख्या को स्तरित कर 20 छात्रों का चयन किया गया जिससे कि पर्याप्त पृष्ठपोषण उपलब्ध हो सके जिसमें 10 छात्र एवं 10 छात्राओं को चयनित किया गया।

क्रियात्मक अनुसंधान पद्धति

परियोजना को तीन स्तरों में विभाजित किया गया जिसमें प्रथम निदानात्मक पक्ष द्वितीय क्रियात्मक पक्ष तथा तृतीय पृष्ठपोषण।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निदानात्मक पक्ष

क्रियात्मक अनुसंधान का मुख्य आधार कार्य–कारण संबंध स्थापितीकरण होता है जिसके आधार पर या किसी भी समस्या का निराकरण तभी संभव है जबकि उससे संबंधित कारणों का विश्लेषण कर लिया जाए। इस दृष्टिकोण से परियोजना प्रारंभ करने से पूर्व सहयोगियों, शिक्षाविदों और संबंधित शिक्षकों के साथ मिलकर समस्या के कारणों को चिंह्नित किया गया।

क्रियात्मक पक्ष

इसके अंतर्गत परियोजना का दो भागों में विभाजित कर क्रियांवयन किया गया–

1. **पूर्व क्रियांवयन**–जिसमें लेखन विधि को विकसित करने हेतु प्रपत्र/उपकरण निर्मित किया गया जिसमें लेखन विधि को विकसित किया गया।
2. **क्रियांवयन**–जिसमें इस विधि का प्रयोग 20 छात्रों के ऊपर किया गया।

पृष्ठपोषण–जिसमें क्रियांवयन से पूर्व की स्थिति और क्रियांवयन के पश्चात् की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

जिसके आधार पर भावी प्रयुक्त विधि का प्रारूप निश्चित किया गया जिसके आधार पर प्रथम भाग में लेखन विधि को विकसित किया गया और द्वितीय भाग में उसको प्रशासित किया गया।

अनुसंधान प्रपत्र

विधि एवं प्रक्रिया में उल्लिखित प्रथम भाग के आधार पर निर्मित कौशल विकास प्रपत्र का प्रयोग न्यादर्श के ऊपर किया गया।

कौशल अधिगम प्रक्रिया प्रपत्र

1. लेखन सामग्री (कलम, पेंसिल, कॉपी, तख्ती आदि) को सही ढंग से पकड़ना
2. लिखते समय आँख और हाथ की गति में समन्वय होना।
3. देवनागरी के सभी लिपि संकेतों-स्वरों, मात्राओं, व्यंजनों और संयुक्ताक्षरों का शुद्ध रूप में लिखना।
4. सुपाठ्य और सुडौल अक्षरों में लिखना।
5. सरल शब्दों और वाक्यों का अनुलेख और श्रुतलेख/सभी परिचित शब्दों को शुद्ध रूप से लिख सकना।
6. पूर्ण विराम, अर्द्ध विराम, प्रश्नवाचक एवं आश्चर्य बोधक चिह्नों के सही प्रयोग की योग्यता का विकास।

वर्तनी का विकास

1. सभी परिचित शब्दों को शुद्ध रूप से लिखने की क्षमता का विकास।
2. शब्दों की रूप-रचना के नियमानुसार शुद्ध वर्तनी लिखना।

विराम चिह्न

- विराम चिह्नों (पूर्ण विराम, अल्प विराम, अर्द्धविराम, प्रश्न सूचक, विस्मय सूचक, उद्धरण चिह्नों समास चिह्न आदि) का सही प्रयोग करना।
- भाषा शिक्षण में लेखन की शिक्षा के महत्त्व और आवश्यकता को देखते हुए उपरोक्त समस्त स्तर निश्चित किए गए है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- लेखन कौशल शिक्षण कार्य प्रारंभ करने से पूर्व संपूर्ण न्यायदर्श समूह पर छात्रों के पूर्व ज्ञान के मापन हेतु एक सामूहिक परीक्षा आयोजित की गई जिसके प्राप्तांकों को आधार मानकर परियोजना संबंधी शिक्षण प्रारंभ किया गया।

परियोजना क्रियांवयन प्रारूप

इसके अंतर्गत परियोजना प्रपत्र में उल्लिखित प्रत्येक क्रिया को एक कोड दे दिया गया है जिससे कि आँकड़ों को विश्लेषण हेतु सुविधापूर्वक वर्गीकृत किया जा सके और निष्कर्षों की वस्तुनिष्ठता और विश्वसनीयता में संवर्द्धन किया जा सके।

कोड संख्या	संबंधित क्रिया जो की जानी है
A^1	'–' शिरोरेखा लेखन, '।' खड़ी पाई लेखन
A^2	'T' शिरोरेखा और खड़ीपाई का योग
B^1	'(' ')' अर्द्ध वृत लेखन
B^2	'0' 'Ø' वृत लेखन एवं वृत विभाजन
C	'उ' 'ऊ' का खंडशः लेखन
D^1	'अ' 'आ' का खंडशः लेखन
D^2	'ओ' 'औ' का खंडशः लेखन
D^3	'अं' 'अ:' का खंडशः लेखन
E	'ए' 'ऐ' का खंडशः लेखन
F	'इ' 'ई' का खंडशः लेखन
G	'ऋ' का खंडशः लेखन
H	'प' 'फ' 'ष' 'च' 'ज' का खंडशः लेखन
I	'ग' 'म' का खंडशः लेखन
J	'त' 'न' 'ल' 'घ' 'छ' 'ध' का खंडशः लेखन
K	'व' 'ब' 'क' का खंडशः लेखन
L	'र' 'स' 'ख' का खंडशः लेखन
M	'ट' 'न' 'ल' 'घ' 'छ' 'ध' का खंडशः लेखन
N^1	अंत पाई वाले अक्षरों का लेखन
N^2	मध्य पाई वाले अक्षरों का लेखन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

N^3	शीर्ष मध्य पाई वाले अक्षरों का लेखन
O	अंत पाई, मध्य पाई, शीर्ष मध्य पाई वाले अक्षरों में 'आ' 'ा' की मात्रा का प्रयोग
P	अंत पाई, मध्य पाई, शीर्ष मध्य पाई वाले अक्षरों में 'इ' 'ि' 'ई' 'ी' की मात्रा का प्रयोग
Q	अंत पाई, मध्य पाई, शीर्ष मध्य पाई वाले अक्षरों में 'उ' 'ु' 'ऊ' 'ू' की मात्रा का प्रयोग
R	अंत पाई, मध्य पाई, शीर्ष मध्य पाई वाले अक्षरों में 'ए' 'े' 'ऐ' 'ै' की मात्रा का प्रयोग
S	अंत पाई, मध्य पाई, शीर्ष मध्य पाई वाले अक्षरों में 'ओ' 'ो' 'औ' 'ौ' की मात्रा का प्रयोग
T	अनुस्वार 'ं' अनुनासिक 'ँ' एवं : विसर्ग का प्रयोग
U	'र' '/' तथा 'र्' 'र्' का प्रयोग
V^1	'क' वर्ग में 'ङ' का प्रयोग
V^2	'च' वर्ग में 'ञ' का प्रयोग
V^3	'ट' वर्ग में 'ण' का प्रयोग
V^4	'त' वर्ग में 'न्' का प्रयोग
V^5	'प' वर्ग में 'म्' का प्रयोग
W^1	'।' पूर्ण विराम का प्रयोग
W^2	'?' प्रश्न वाचक चिह्न का प्रयोग
W^3	',' अल्प विराम का प्रयोग
W^4	'!' विस्मयादि बोधक का प्रयोग
W^5	- योजक चिह्न का प्रयोग
W^6	" " उद्धरण चिह्न का प्रयोग
X	शब्द लाघव का प्रयोग

परियोजना क्रियांवयन-तिथि	क्रिया जो की गई
01.07.09 से 04.07.09 तक	A^1, A^2, B^1, B^2, मूल्यांकन एवं पृष्ठपोषण
06.07.09 से 10.07.09 तक	C, D^1, D^2, D^3, मूल्यांकन एवं पृष्ठपोषण
11.07.09 से 15.07.09 तक	E, F, G, मूल्यांकन एवं पृष्ठपोषण
16.07.09 से 18.07.09 तक	H, I, J, मूल्यांकन एवं पृष्ठपोषण
20.07.09 से 22.07.09 तक	K, L, मूल्यांकन एवं पृष्ठपोषण
23.07.09 से 25.07.09 तक	M, N^1, N^2, N^3, मूल्यांकन एवं पृष्ठपोषण
27.07.09 से 31.07.09 तक	O, P, मूल्यांकन एवं पृष्ठपोषण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

01.08.09 से 04.08.09 तक **Q, R, S,** मूल्यांकन एवं पृष्ठपोषण

05.08.09 से 07.08.09 तक **T, U,** मूल्यांकन एवं पृष्ठपोषण

08.08.09 से 10.08.09 तक **V[1], V[2], V[3], V[4], V[5]** मूल्यांकन एवं पृष्ठपोषण

11.08.09 से 13.08.09 तक **W[1], W[2], W[3], W[4], W[5], W[6]** मूल्यांकन एवं पृष्ठपोषण

14.08.09 से 16.08.09 तक **X,** मूल्यांकन एवं पृष्ठपोषण

17.08.09 से 20.08.09 तक उपरोक्त समस्त क्रियाओं का पुन: अभ्यास

21.08.09 मूल्यांकन एवं परीक्षण प्रशासन

50 दिनों के शिक्षण कार्य के पश्चात् एक सामूहिक परीक्षा का आयोजन किया गया तथा प्रायोगिक समूह के प्राप्तांकों की तुलना नियंत्रित समूह के परीक्षा प्राप्तांकों से की गई।

परीक्षण के प्राप्तांकों की तुलनात्मक परीक्षाफल तालिका

क्रम सं.	प्रायोगिक समूह प्राप्तांक (अंक 26)	प्राप्तांक % में	नियंत्रित समूह प्राप्तांक (अंक 25)	प्राप्तांक % में	उपलब्धि
1.	24	96%	15	60%	36%
2.	22	88%	12	48%	40%
3.	19	72%	09	36%	36%
4.	24	96%	11	44%	52%
5.	19	72%	14	56%	16%
6.	19	72%	08	32%	40%
7.	20	80%	06	24%	56%
8.	20	80%	10	40%	40%
9.	16	64%	13	52%	12%
10	14	56%	11	44%	12%
11.	22	88%	14	56%	32%
12.	19	72%	15	60%	12%
13.	21	84%	12	48%	36%
14.	23	92%	11	44%	46%
15.	24	96%	09	36%	60%
16.	20	80%	06	24%	56%
17.	16	64%	13	52%	12%
18.	22	88%	12	48%	40%
19.	19	72%	14	56%	16%
20.	23	92%	16	64%	28%

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उपरोक्त ऑकड़ो का विश्लेषण करने पर छात्रों के प्राप्तांकों में आश्चर्यजनक अंतर पाया गया जिसका जैसा कि पूर्व निर्धारित किया गया था कि 20 छात्रों पर नवीन विधि के अनुरूप छात्रों की ज्ञानात्मक क्षमता को एक परीक्षण से मापा गया और कार्य करने के पश्चात् पुनः पूर्व स्तर की ही एक परीक्षा ली गई दोनों बार के परीक्षण के प्राप्तांकों का तुलनात्मक परीक्षण किया गया जिनके आधार पर यह पाया गया कि अधिकतम 60 प्रतिशत तक और न्यूनतम 12 प्रतिशत तक उपलब्धि में घनात्मक वृद्धि पाई गई। उपरोक्त तालिका का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि नवीन शिक्षण पद्धति का प्रयोग छात्रों के लिए अधिक उपयोगी, सुदृढ़, प्रभावी एवं विकासशील है।

सुझाव एवं उपयोगिता

उल्लिखित परिणामों के आधार पर एक तथ्य पूर्णतः सुनिश्चित हो जाता है कि यदि रूढ़िवादी पद्धति को छोड़कर नवीन कौशल विधि का प्रयोग किया जाएगा तो उपलब्धि तो अधिक होगी ही समय एवं प्रयासों में भी कमी आएगी।

- कौशल अधिगम अधिक रोचक होगा जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव अधिगम के अन्य क्षेत्रों पर भी पड़ेगा।
- इस संदर्भ में यदि शासन स्तर पर आदेशित कार्यशालाओं की अनिवार्यता शिक्षंकों के लिए सुनिश्चित कर दी जाए तो इस क्षेत्र में अभूतपूर्व क्रांति लाई जा सकती है।

संदर्भ सूची–

1. हरलॉक–चाइल्ड डवलपमेंट।
2. डा. जै. एन. कौशिक–हिंदी शिक्षण।
3. भोलानाथ तिवारी–भाषा विज्ञान।
4. विमलेश कांति वर्मा हिंदी और उसकी उपभाषाएँ।
5. हिंदी शिक्षण, पाठ्य पुस्तकें कक्षा–प्रथम से पंचम तक।

❑❑❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पठनीय

पुस्तक का नाम	*पढ़ना सिखाने की शुरुआत*
मूल्य	₹ 55.00
संस्करण	प्रथम संस्करण नवंबर 2008
प्रकाशक	एन.सी.ई.आर.टी., श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली

अभिभावक बड़ी ही उम्मीदों के साथ बच्चों को स्कूल भेजते हैं। बच्चे भी बड़े उत्साह के साथ पढ़ने की दहलीज़ पर कदम रखते हैं। लेकिन पहली कक्षा के अंत आते-आते पढ़ना सीखने की आशा मन में लिए कई नन्हे कदम डगमगाने लगते हैं। स्कूल में साल भर पढ़ना सिखाया जाता है, फिर भी बच्चे पढ़ना नहीं सीख पाते। इसके कारण हैं।

पढ़ना सीखना बच्चे के लिए आनंददायी बनता है या एक दुरूह प्रक्रिया, यह इस बात पर निर्भर करता है कि पढ़ना सीखने के शुरुआती दौर में वह कैसे अनुभवों से गुजरता है। अगर बच्चे को पढ़ना सिखाने की शुरुआत सार्थक संदर्भों से की जाए तो पढ़ना बच्चे के लिए सुखद बन जाता है और उसमें आगे और पढ़ने की तीव्र इच्छा पनपने लगती है। बच्चे को पढ़ना सिखाने की शुरुआत कैसे की जाए? संकलन की प्रथम प्रस्तुति **पढ़ना सिखाने की शुरूआत** इसी जानकारी पर आधारित है।

पढ़ना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है जो पाठक को छपी सामग्री से कहीं आगे ले जाती है। फ्रेंक स्मिथ ने जो कि एक प्रसिद्ध मनोभाषाविद् हैं, पढ़ने की समझ को अपनी बहुचर्चित पुस्तक **अंडरस्टैंडिंग रीडिंग** में रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है **पढ़ना यानी एक सृजनात्मक और सरंचनात्मक अनुभव** लेख में फ्रेंक स्मिथ के पढ़ने से संबंधित विचार दिए गए हैं।

पढ़ने का कौशल आत्मीयता का याचक है। शिक्षक की स्वयं की पढ़ने की समझ, उसका स्नेहिल व्यवहार, बच्चे पर किया गया विश्वास

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पढ़ने का वातावरण सहज ही निर्मित कर लेते हैं। शिक्षक स्वयं पढ़ाने के बदले धीरे-धीरे विकसित होने वले इस पढ़ने के कौशल का किस प्रकार उद्दीपक बने? बच्चे की पढ़ला सीखने की नैसर्गिक इच्छा का किस प्रकार माध्यम बने? इन्हीं सवालों का जवाब दे रहा है लेख **पढ़ना सिखाने में शिक्षक की भूमिका।**

पढ़ना बच्चे की प्रगति के लिए एक आधारभूत कौशल और माध्यम है। यही कारण है कि कई देशों में पढ़ने के लिए आरंभिक कक्षाओं में अलग से समय दिया जाता है। **पढ़ने के लिए समय** के अंतर्गत बच्चों की शिक्षा में पढ़ने, पढ़ने के स्थान और पढ़ने की स्थिति को लेकर की गई बातचीत दी गई है।

विद्यालय में पहले ही दिन बच्चे को कुछ सार्थक पढ़ने को मिले तो उसकी खुशी की सीमा नहीं रहती। पहले ही दिन पढ़ लेने की, कुछ अर्थ ढूँढ़ लेने की सफलता उसे सुखद एहसास कराती है कि मैंने खुद कुछ पढ़ा। यह सार्थकता पढ़ने की दिशा में बच्चे के नन्हे कदम आगे बढ़ाती है। इसलिए शिक्षकों को ऐसे रुचिपूर्ण संदर्भों की रचना कक्षा में करनी ही होगी। कैसे? इस सवाल का जवाब दे रहा है एक शिक्षक का अनुभव आधारित लेख **पढ़ाई पहली कक्षा की।**

पढ़ना सिखाने की प्रक्रिया का ही महत्वपूर्ण अंग है पढ़ने का आकलन। आकलन किस प्रकार किया जाए? कब किया जाए? पढ़ने के आकलन के दौरान किन बातों का ध्यान रखा जाए? इन्हीं सब मुद्दों की चर्चा कर रहा है लेख **पढ़ने का आकलन कैसे करें?**

पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा क्रमिक पुस्तकमाला विकसित की गई है–*बरखा।* इस पुस्तकमाला की चालीस कहानियाँ पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बच्चों के रोज़मर्रा के जीवन और परिवेश से जुड़ी यह कहानियाँ बच्चों को स्वयं समझ के साथ पढ़ने के अवसर देंगी। इन कहानियों को पढ़ने से बच्चों में अधिक से अधिक पढ़ने की ललक जगेगी। कक्षा में *बरखा* का इस्तेमाल कैसे करें, किन बातों को ध्यान में रखें? जानने के लिए पढ़िए लेख क्रमिक पुस्तकमाला– *बरखा।*

भारत में कहानी सुनाने की लंबी परंपरा रही है। लेकिन औद्योगीकरण के कारण सामाजिक संरचना में आए बदलाव के कारण कहानी कहीं गायब होती जा रही है। कहानी के शैक्षिक महत्त्व को सभी शिक्षाविद् स्वीकारते हैं। इसलिए सभी देशों में कहानी कला को पुनः प्रोत्साहन दिए जाने पर बल दिया जा रहा है। अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर इस दिशा में क्या प्रयास किए जा रहे हैं, वह कितने सार्थक हैं? पढ़िए **कहानी कहाँ खो गई** लेख में।

कहानी बच्चों को आनंदित करती है। कहानी सुनने के और भी कई लाभ हैं। कहानी से बच्चे सब्र से सुनना, अनुमान लगाना, पात्रों तथा घटनाक्रम को याद रखना तो सीखते ही हैं इससे उनकी एकाग्रता और स्मरणशक्ति का भी प्रशिक्षण होता है। **कहानी सुनाने के बाद** लेख में कहानी की अन्य शैक्षणिक उपयोगिताओं की चर्चा है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक बार बच्चे का किताबों की दुनिया से परिचय हो जाए, तो वह उसी में रच-बस जाना चाहता है। किताबों को बच्चों तक ले जाने और बच्चों को किताबों तक ले जाने के उद्देश्य से रीडिंग डेवलपमेंट सैल, एन. सी.ई.आर.टी. द्वारा बाल पुस्तक मेले का आयोजन प्राथमिक विद्यालय, पैंठा, गोवर्धन में किया गया। जिसमें बच्चों को किताबों के अनोखे संसार में जाने का अनूठा अवसर मिला। **हर बच्चे को मिली किताब** में इस बालपुस्तक मेले की रपट प्रस्तुत है।

यह संकलन बच्चों को पढ़ना सिखाने से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर एक समझ विकसित करने में सहायक है और तब पढ़ना नहीं सीख पाने की हताशा के कारण कोई भी बच्चा स्कूल नहीं छोड़ेगा।

❑❑❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

14

पुस्तक का नाम	*पढ़ने की समझ*
मूल्य	₹ 75.00
प्रथम संस्करण	नवंबर 2008
पुनर्मुद्रण	सितंबर 2009
प्रकाशक	एन.सी.ई.आर.टी., श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली

पढ़ने की समझ पर पढ़ने की व्याख्या करने वाली सामग्री का हमारे देश में नितांत अभाव है। ऐसी अकाल की स्थिति में अपने-आप में यह संभवत: एक पहली संदर्शिका है जो पढ़ने की समझ की बात करती है। इसका उद्देश्य उन सभी की 'पढ़ने' को लेकर एक समझ बनाना है जिनका किसी न किसी रूप में बच्चों की ज़िदगी से सरोकार है, या जो साक्षरता के क्षेत्र में काम करते हैं, नीति निर्धारक हैं, या अध्यापक हैं ताकि वे आपने-अपने स्तर पर मौजूदा स्थिति में कुछ अंतर ला सकें।

एक व्यापक पाठक वर्ग के लिए होते हुए भी यह संदर्शिका अध्यापक केंद्रित है। किसी भी अध्यापक की कक्षा का स्वरूप सिखाने के संबंध में कैसा होगा, यह पढ़ने को लेकर उसकी व्यक्तिगत समझ पर अधारित होता है। ऐसी परिस्थिति में यह अपेक्षित है कि अध्यापकों की पढ़ने को लेकर एक सुलझी हुई व्यापक समझ हो।

अध्यापकों के लिए बहुत-सी प्रशिक्षण सामग्री तैयार होती हैं। यह संदर्शिका उस तरह से निर्देशात्मक नहीं है यानी क्रमवार तरीके से कोई निर्देश नहीं देती। इसके पीछे सोच यह है कि यदि किसी विषय की समझ बनती है, अवधारणाएँ स्पष्ट होती हैं तो दरअसल वे अध्यापक को आत्मनिर्भर बनाती हैं। यहाँ शिक्षकों को एक तरह से यह छूट है कि इसी समझ के आधार पर वे अपने आगे के पढ़ाने के तरीकों को तय करें।

इन उद्देश्यों को देखते हुए यह वाज़िब ही है कि संदर्शिका पठनीय हो और व्यावहारिक भी। पठनीय इस अर्थ में कि यह पांडित्यपूर्ण न

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लगे, बातें स्पष्ट हों, दुरूह नहीं। कही गई बातों को हम अपने अनुभवों और समझ से जोड़कर देख सकें। ऐसा होने पर ही यह संदर्शिका सार्थक होगी और व्यावहारिक भी।

संदर्शिका के इस स्वरूप का आधार पढ़ने की समझ को लेकर शिक्षकों द्वारा उठाए गए अनेक प्रश्न रहे हैं।

पढ़ने की समझ के अलग-अलग पहलुओं को अध्यायों में बाँटते समय यह पूरा ध्यान रखा गया है कि विषय की एक समझ बने और कक्षा का संदर्भ भी बराबर साथ बना रहे।

बच्चे की भाषा हमें हमेशा ही रोमांचित करती रही है। यदि हम उनकी भाषा को और करीब से देखें तो हमें यह समझने का अवसर मिलता है कि वह कैसे विकसित होती है, किन नियमों से परिचालित होती है, **बच्चे और भाषा** अध्याय में हमने कुछ इन्हीं बारीकियों को छूने की कोशिश की है।

पढ़ने की संकल्पना को समझने से पहले यह ज़रूरी है कि हम स्कूलों में 'पढ़ने' के मौजूदा परिदृश्य को समझें, उनके कारणों को जानें। **पढ़ना सीखना और स्कूल** अध्याय में कुछ बच्चों के 'पढ़ना सीखने' के ऐसे उदाहरण हैं जो वास्तविक स्थितियों को दर्शाते हैं और इस ओर इंगित करते हैं कि पढ़ने को लेकर शिक्षा व्यवस्था काफी हद तक असफल रही है।

पढ़ने जैसी सरल और स्वाभाविक प्रक्रिया भी स्कूल में आकर एक यांत्रिक और उबाऊ प्रक्रिया बन जाती है। इसका कारण शायद यह है कि अभी भी पढ़ने को लेकर हमारी समझ अपर्याप्त है। **पढ़ना-एक नज़रिया** अध्याय पढ़ने की समझ को बड़े सहज ढंग से खोलकर रख देता है।

लिखित भाषा और कक्षा का स्वरूप अध्याय पढ़ने के लिए कुछ उन शर्तों की बात करता है जिनका कक्षा में होना अनिवार्य है।

जब हम पढ़ने की वैकल्पिक समझ की बात करते हैं तो ज़ाहिर है कि यह समझ बच्चों की या पढ़ने की प्रक्रिया के **आकलन** को लेकर भी एक नई समझ की माँग करती है। यह समझ आकलन को ज़्यादा लचीला और व्यवस्थित बनाती हैं।

एक ऐसा अध्यापक जो स्वयं एक अच्छा पाठक भी है वही बच्चों में पढ़ने की ललक जगा सकता है और उन्हें एक स्थायी पाठक बनने की ओर ले जा सकता है। अध्यापक अपनी पढ़ने की समझ को कैसे निरंतर विकसित करते रहें, **पढ़ने की निरंतरता** अध्याय इसकी प्रासंगिकता को स्थापित करता है।

❑❑❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

15

पुस्तक का नाम	*कैसे पढ़ाएँ रिमझिम भाग–2 'शिक्षक संदर्शिका'*
मूल्य	₹ 55.00
प्रथम संस्करण	दिसंबर 2010
प्रकाशक	एन.सी.ई.आर.टी., श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली

हिंदी की प्राथमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकें रिमझिम शृंखला के मूल में निहित सोच से शिक्षकों को अवगत कराने तथा बच्चे की नन्ही दुनिया में भाषा की भूमिका को समझने में शिक्षक की सहायता करने के उद्देश्य से वर्ष 2006 में शिक्षक संदर्शिका **'कैसे पढ़ाएँ रिमझिम'** का विकास किया गया था। तब तक रिमझिम शृंखला का केवल पहला और तीसरा भाग ही प्रकाशित हुआ था।

वर्ष 2007 में रिमझिम का दूसरा और चौथा भाग तथा वर्ष 2008 में रिमझिम का पाँचवाँ भाग प्रकाशित हुआ। *रिमझिम–1* से *रिमझिम–5* तक आते-आते पाठ्यपुस्तक के प्रत्येक चरण में भाषा, विषयवस्तु, चित्र आदि में बच्चों की बढ़ती आयु के अनुसार बदलाव तथा परिपक्वता आई। पूर्व प्रकाशित संदर्शिका में दिए गए उदाहरण *रिमझिम–1* और *रिमझिम–3* से ही थे। *रिमझिम–2, 4 और 5* के विकास के पश्चात् आयोजित शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान शिक्षक साथियों ने इन पाठ्यपुस्तकों को लेकर अनेक प्रकार की चिंताएँ व्यक्त कीं जैसे-व्याकरण कैसे पढ़ाएँ?, बहुभाषिकता का संसाधन के रूप में प्रयोग किस प्रकार किया जाए?, कविता कैसे पढ़ाई जाए? पहली और दूसरी कक्षा में भाषा और पर्यावरण अध्ययन की जानकारी किस प्रकार से दें, आदि। इसी प्रकार के अनेक सवालों को लिपिबद्ध किया गया ताकि संशोधित संस्करण में इनका जवाब दिया जा सके।

रिमझिम शृंखला के पठन-पाठन को लेकर उठाए गए सवालों का जवाब देने के लिए प्रस्तुत है यह संशोधित संस्करण। इस संस्करण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में पूर्व संदर्शिका में सम्मिलित अध्यायों में जहाँ आवश्यकतानुसार संशोधन किया गया है, वहीं कुछ नए अध्याय भी जोड़े गए हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 पहली और दूसरी कक्षा में भाषा शिक्षण के दौरान परिवेश की जानकारी भी बच्चों को देने की संस्तुति करती है। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए अध्याय *भाषा और परिवेश* दिया गया है।

कविता की पढ़ाई अध्याय *रिमझिम शृंखला* में दी गई कविताओं को सही ढंग से बच्चों तक पहुँचाने में शिक्षक साथियों की सहायता करेगा और तब शिक्षक कविताओं में निहित भावनाओं पर बच्चों के मन में हलचल जगा सकेंगे।

भाषा और साहित्य की पढ़ाई का एक मुख्य उद्देश्य संवेदनशीलता का विकास करना भी है। जेंडर का मुद्दा पूरी मानवता का मुद्दा है। रिमझिम शृंखला में विषय सामग्री के चयन तथा अभ्यासों के विकास के दौरान यह बात ध्यान में रखी गई है कि इनके माध्यम से बच्चों में बचपन से ही लैंगिक समानता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो सके। इन सबसे शिक्षक को पूर्णतया परिचित कराने के उद्देश्य से संदर्शिका में एक नए अध्याय का समावेश किया गया है। **लैंगिक समानता और रिमझिम शृंखला।**

रिमझिम के साथ अभ्यास पुस्तिका का विकास नहीं किया गया है। दरअसल अभ्यास पुस्तिका अलग से नहीं बनाकर रिमझिम में ही पिरोई गई है ताकि बच्चे कविता-कहानी का आनंद भी लें और साथ-साथ अभ्यास एवं गतिविधियों के माध्यम से भाषा भी सीखते चलें।

इस संदर्शिका के विभिन्न पन्नों में शिक्षकों को अपने सवालों का समाधान ज़रूर मिलेगा। इस शिक्षक संदर्शिका की सहायता से शिक्षक अपनी कक्षा में ऐसा वातावरण बना पाएँगे जो भाषा शिक्षण के लिए आवश्यक है। रिमझिम की विचारधारा शिक्षकों की समझ में आ जाएगी तो वे एक शिक्षक के रूप में अपनी स्नेहिल भूमिका निश्चित कर पाएँगे और तब भाषा सीखना बच्चों के लिए एक सुखद अनुभव ज़रूर बनेगा।

❑❑❑

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बालमन कुछ कहता है

मुझे चित्र बनाना बहुत अच्छा लगता है

मुझे चित्र बनाना बहुत अच्छा लगता है मुझे घर और स्कूल में जब भी समय मिलता है मैं चित्र बनाने लग जाती हूँ। जब भी मेरी मैम मुझे चित्र बनाने के लिए बोलती हैं। चित्र बनाने लग जाती हूँ। मेरको तरह-तरह के चित्र पसंद हैं। जैसे फूल का, पेड़ का घरों का और सभी चित्रओं को मैं हर दम टीवी में चित्र देखती हूँ। मुझे रंग भरने में बड़ा मजा आता है और मेरे भाई, बहन मेरे साथ रंग भरते हैं।

नाम - जितीका
कक्षा - तीसरी
स्कूल - केंद्रीय विद्यालय केंपस
नई दिल्ली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बालमन कुछ कहता है

मुझे कहानी पढ़ना अच्छा लगता है

मुझे कई तरह की कहानीयाँ पसंद हैं जैसे परियों की कहानियाँ जानवरों और पक्षियों की कहानी और कई सारी कहानियाँ। जब मुझे खाली समय मिलता है तब मैं तरह-तरह की कहानियाँ पढ़ती हूँ और अपने दोस्तों, भाई बहन को सुनाती हूँ। मुझे कहानी पढ़ने बड़ मजा आता है। टीवी तरह-तरह की कहानियाँ देखती और सुनती हूँ। मुझे बिना जड़ का पेड़ वाली कहानी पसंद है।

नाम - कृतिका रावत

कक्षा - पाँचवी 'एफ'

स्कूल - केन्द्रिय विद्यालय एन,सी,आर,टी कैंम्पस

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कविता

कैसे सीखूँ गणित ?

लक्ष्मी रानी 'चंदेल'*

गणित हमें कहाँ आता है?
दिमाग से छूमंतर हो जाता है।
कान खींच मैडम करवाती,
मम्मी गाल पर झापड़ जमाती,
इनको भला कैसे समझाऊँ?
गणित दिमाग में कैसे बिठाऊँ?
पेड़ पर चिड़ियाँ कितनी हैं?
करनी इनकी गिनती है।
गिनने बैठूँ पर गिन न पाऊँ
बैठी हुई देखती रह जाऊँ
एक-के-बाद-एक उड़ जाती है।
गिनती में न आती है
जोड़ने बैठूँ जब भी कुछ
उलझन बन जाता सब कुछ
सात जमा दो होते है नौ
पाँच और चार भी बनते नौ
छः जमा तीन होते हैं नौ
आठ और एक भी तो है नौ
हाय! किसने बनाए गणित के नियम
सपने में भी सताते है ये नियम
सात और चार भी है ग्यारह
छः और पाँच भी ग्यारह
नौ जमा दो भी तो है ग्यारह
दस और एक भी तो ग्यारह
मैं तो थकी दिमाग का हुआ कबाड़ा
हाय! मुझसे न होगी ये जमा घटा दुबारा।

* *कनिष्ठ परियोजना अध्येता*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली
** चित्र–लक्ष्मी रानी 'चंदेल'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब्राहम लिंकन का अपने पुत्र के अध्यापक को लिखा मार्मिक पत्र

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्यापक महोदय,

मेरे बच्चे को पढ़ाना
कि संसार में दुष्ट होते हैं, तो आदर्श नायक भी
कि जीवन में शत्रु हैं तो मित्र भी हैं।
उसे बताना कि श्रम से मिला एक रुपया, बिना
श्रम मिले पाँच रुपये से अधिक मूल्यवान है।

उसे सिखाना कि पराजित कैसे हुआ जाता है,
यदि तुम उसे सिखा सको तो सिखाना
कि ईर्ष्या से दूर कैसे रहा जाता है।

उसे पुस्तकों के आश्चर्यलोक का ज्ञान अवश्य
कराना किंतु उसे इतना समय भी देना

कि वह नीले आकाश में विचरण करते पक्षी
समूह के शास्वत सत्य को जान सके, हरे-भरे
पर्वतों की गोद में खिले फूलों को देख सके।

वह जान ले कि पाठशाला में
अनुत्तीर्ण होना सम्मानजनक है
अपेक्षाकृत किसी को धोखा देने के।

मेरे पुत्र को ऐसा मनोबल देना कि
वह भीड़ का अनुसरण न करें,
उसे सिखाना कि
जब सभी एक स्वर में गाते हों
तब वह उन्हें धैर्य से सुने
किंतु वह जो कुछ सुने
उसे सत्य की छलनी में छान ले।

वह शोर करने वाली भीड़ पर कान न दे
और यदि वह समझे कि वह सही है
तो उस पर दृढ़ रहे और लड़े।

उसे अपने विचारों में दृढ़ आस्था रखना सिखाना
चाहे उसे सभी यह कहें यह विचार गलत है,
तब भी

उसे सिखाना सज्जन के साथ रहना है।
और कठोर के साथ कठोर उसे सिखाना कि
दुःख में कैसे हँसा जाता है।
उसे समझाना कि
आँसूओं में कोई शर्म की बात नहीं होती।

तुनकमिजाजों को लताड़ना उसे सिखाना
और यह भी अधिक मधुभाषियों से
सावधान कैसे रहा जाता है।

उसके साथ सुकोमल व्यवहार करना
पर अधिक दुलारना भी मत
क्योंकि अग्नि परीक्षा ही इस्पात को
सुंदर-सुदृढ़ बनाती है।

अधीर होने का साहस भी उनमें उत्पन्न करना
और बहादुर होने का धैर्य भी।
उसे सिखाना कि वह सदैव
अपने आप में उदात्त आस्था रखे
क्योंकि तभी वह मनुष्य जाति में
उदात्त आस्था रख पाएगा।

अब्राहम लिंकन

अब्राहम लिंकन का अपने पुत्र के अध्यापक को लिखा मार्मिक पत्र

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

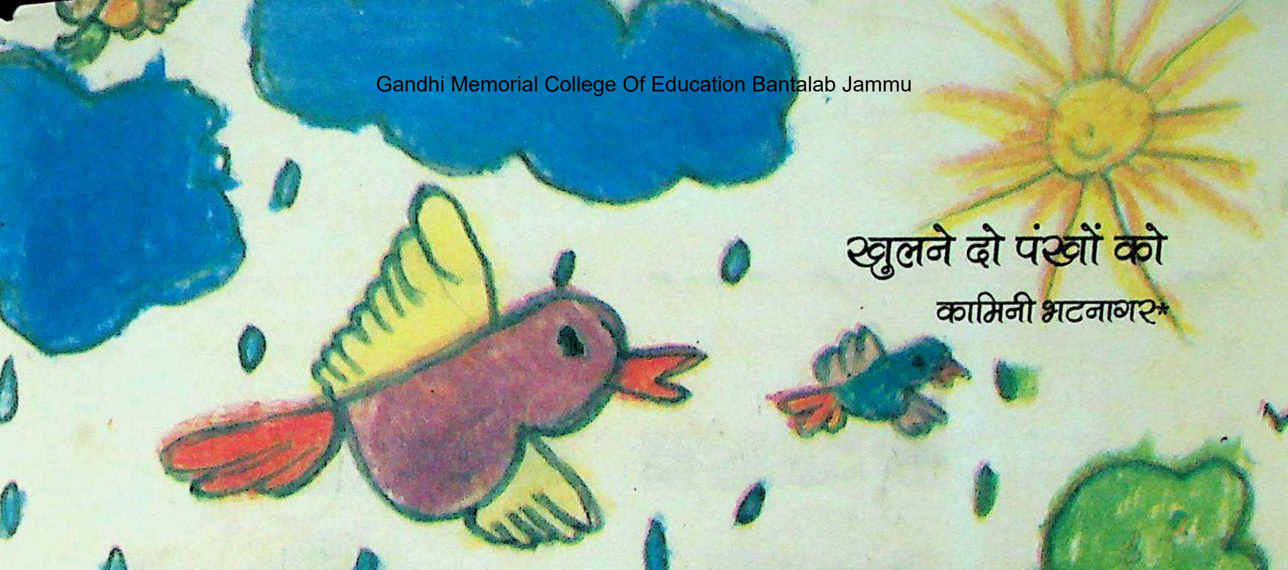

खुलने दो पंखों को

कामिनी भटनागर*

पानी की बूंदों-सा
कोमल है बचपन
बढ़ने दो
जीवन की राह पर
बारिश की छम-छम में
गाता-गुनगुनाता
सूरज चंदा तक में
बाँटता मुस्कान
चाहता है वो
कल्पनाओं के परों पर
अंबर में ऊँची उड़ान
बाँधो नही सीमाएँ
खुलने दो पंखों को ...

*असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, सी.आई.ई.टी., राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली–110016

**चित्र–तेजस भटनागर, [illegible]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

रजि. नं. 32427/76

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विद्ययाऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant